-: संपदाक :-

स्वर्गवासी
...ित जिया लाल सराफ

...d May, 1901–17 April 1975

ॐ

शक्ति रहस्य

संसार में किसी भी कार्य में हाथ डालने से पहले शक्ति की आवश्यकता है। जब तक शक्ति जो जीव को अपने अन्दर मौजूद है। उस शक्ति को काम में न लावें। किसी काम में सफलता न होती है और न होगी।

जीव को अपनी शक्ति का ज्ञान नहीं है। सब पदार्थों में अपनी अपनी शक्ती अपने अन्दर है जीव में शक्ती का भण्डार है। जिसतरह लकडी के अन्दर आग छुपी हुई है और लकडी को मालूम नहीं कि मुझ में आग की शक्ती अन्दर है। जब इसकी शक्ती 'आग' प्रकट होकर बाहर आती है तो पदार्थों को भस्म कर देती है तो लकडी अपने असली 'आग' के स्वरूप को प्रकट करती है उसी तरह जीव के अन्दर शक्ती का ... है और वह शक्ती जीव के अन्दर है। उस को मालूम नहीं कि मैं क्या हूं। उस शक्ती से ... स के ...

जैसा चाहें अपनी अवस्था को बना सकते हैं। हमारे प्राचीन ऋषि, मुन्नी महात्माओं में शक्तियां और सिद्धियां थीं। वह शक्तियां हम में भी हैं। (पुरुषार्थ) पुरुषार्थ करने की ज़रूरत है। पुरुषार्थ का मतलब है, (पुरुष-ऽर्थ) पुरुष का धन। जब जीव पुरुषार्थ करें, और दृढ़ रहें तो उस महाशक्ति को उजागर कर सकता है। वह महाशक्ती जो जीव के अन्दर है। उसको परा शक्ति, ज्ञान शक्ति, क्रिया शक्ति, इच्छा शक्ति, चित्त शक्ति वगैरा २ कहा गया है। इस महान शक्ति को जगदम्बा (जगत् माता), जगत जननी इत्यादि नामों से कहा गया है। और इन्हीं नामों से शक्ति का पूजन अर्चन किया जाता है। सारा जगत शक्ती से ही बना है और बनाया जाता है। तमाम आविष्कार जो जगत में हुए हैं और नए नए आविष्कार होते हैं। शक्ति ही [illegible] कारण है। शक्ती के सिवा कुछ नहीं [illegible]

भवानी सहस्रनाम में पहले [illegible] और नन्दीगण का समवाद लिखा है। [illegible]

शंकर से पूछता है। महाराज मुझे प्रश्न है। कृपा करके मुझे प्रश्न का उत्तर दीजिए।

आप जगत के स्वामी होकर आप आंखें बन्द करके सदा किस का स्मरण करते हैं और किस के ध्यान में सदा रहते हैं। क्या आप से बढ़कर कोई और ऊपर भी है। जिसका आप ध्यान करते हैं। तो शंकर उत्तर देता है। हे नन्दीगण सुनो। यह रहस्य है। तीन गुण वाली श्री शक्ती नाम की शक्ती मेरे अन्दर है उसी के बल से मैं इस संसार को पैदा करता हूँ। पालता हूँ और उसी में लीन होता हूँ। उसी के बल से मैं जगत, पहाड नदियां समन्द्र जो भी संसार में देखते हो, बनाता हूँ। यह सब जगत उसी शक्ती का विकास है। उसी शक्ति का ध्यान करने से अर्चन करने से सब सिद्धियां प्राप्त होती हैं इसी लिए इसी का सदा स्मरण करता हूँ। हे. एक मनुष्य में यह देवी रूप शक्ती सुप्ती है और इस को जाग्रत करने की आवश्यकता है।

आपको मालूम होगा कि हम जब बच्चे थे तो हमारी माता बचपन में हमको इसी शक्ती माता के स्वरूप का बीज डालती थी और कश्मीरी भाषा में हमको बार बार कहती रहती :— (कश्मीरी में)—— "ज़ेन सांज ज़ूनुय, अन्गन अन्गन च्यथ तय ज़ीव, यिस कस गनेयि, राव यस गनेयि, राव क्या छुतुय खसवुन गुर वसवुन्य नाव, तेच्य क्यथ वंकुस वं तुल कुनुय, तलि कुकुम कोंट्य मोंट्य मास्नि हना, रमि बुलबुल ब्यव हूर, सुय लोटुम अजीरे, जजीर लोजिम नचुने, काव लेमि लुकिने, गोन्ठ लजिम असुने, सुकुस स्यो: कोलु तारकुय"——अर्थात माता 'ज़ून' प्रकाश जीतना है। प्रकाश क्या है? अंग अंग में अर्थात हर एक चीज में चित्त और जीव जानना है। वह किसको प्राप्त हो। जिसको राव अर्थात ख्याल की दृढ़ता ने क्या दिया, चढ़ने के लिए घोड़ा और उतरने के लिए किश्ती अर्थात (प्राणायाम)। उसी किश्ती

से उतर गई। "तुन" यानी नाभि (नाभिस्थान) के तरफ वहां मैं ने देखा, छोटी मोटी कुण्डलिनी, उसी ने मुझे "घी" बरतन में, दिया, वह मैं ने अन्दर डाला और मुझको सारा जगत अपना ही स्वरूप दिखाई दिया। लोगों ने हंसा, यह कौन मेरा, जो मेरे कुल का तारक होगा माता अपने पुत्र को बचपन से ही उसको यह ख्याल रूपी बीज डाल देती थी। कि हे पुत्र तुम्हारा कर्तव्य है। अपने कुल का तारक बनना, यह उपदेश माता सब से पहले अपने बच्चे को देती थी। ताकि यह बच्चा बड़ा होकर अपने कुल का तारक बनेगा। पञ्चस्तवी के पहले तव में दो श्लोकों में इसी का निर्णय किया गया है।

यहां कश्मीर में शक्ति उपासना ही प्रचलित थी जिस समय श्री शंकराचार्य महाराज बुद्धमत को खण्डन करते कश्मीर पहुंचे- तो उस वक्त यहां श्री अभिनवगुप्त जी शक्तिमत के आचार्य थे, तब श्री शंकरा-

चार्य जी उनके पास शास्त्रार्थ करने आये। श्री शंकराचार्य जी शिव के उपासक थे। शक्ती को नहीं मानते थे। श्री अभिनवगुप्त जी ने उन को कहा। यह जगत शक्ती का विकास है। बल में रहती है। उस शक्ती का विकास ही यह सारा संसार है। पञ्चस्तवी के पहले तव के पहले तीन (३) श्लोकों में श्री कुण्डलिनी शक्ती का बर्णन किया गया है। साढ़े तीन वार लिपटी हुई वह छोटी मोटी कुण्डलिनी जिसको जाग्रत हो। तो वह जन्म मरण से छूटता है। उसको दूसरा जन्म प्राप्त नहीं हो सकता। वह मुक्त हो जाता है।

श्लोक :- संसार कुहरादऽस्मात् निगन्तव्यं स्वबलात्।
पौर्षं यतनमाश्रत्य हरिणो वागुरादिव॥

अर्थ :— येमि सं...कुक जेथि संज़ु छोर,
पतुमे चलु किन्य छि नीरिथ ह्यकान।
पुरुषार्थ पनुनि यत्न सूत्य,
यिथु पाठ्य सुह पंजरु मंज़ कुन नेरान।

श्लोक :- सारेण पुरुषार्थेन स्वेनैव गरुडध्वज,
कश्चिदस इव पुमानेव पुरुषोतमतां गता॥

अर्थ:- पनुने पुरुषार्थु कि ज़ोरु किन्य,
ज़ीव ति क्युय पानु नारायण बनान।
पुरुषन मंज़ आसान खाल काह पुरुष,
युस पुरुषोत्तम बानस प्यठ छु वातान॥

अपनी शक्ति के बगैर उपासक को परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती।

श्लोक :-

आपद्वनमऽननतोहा, परिपल्लवित कृति।
पुरुषार्थं क्रकच च्छिन्नं, नैव भूयः परोहिति॥

अर्थ:- आपदा रूपी युस अन्तु रोस जंगल,
फलमति शकलि युस बोज़नु यिवान।
पुरुषार्थ कि लेंनि सुत्य चटिथ चटिथ,
यि आपदा जंगल पत्तु छु खसान॥

"अयमात्मा शक्तिहीने लभ्यः"

अर्थ:- शक्तिहीन को परमात्मा प्राप्त नहीं होता। और जन्म मरन से छूट नहीं सकता।

इसलिए शक्ति की उपासना करनी चाहिए। चित शक्ति पूर्ण प्रेम स्वरूप है और सर्व व्यापक है। चित शक्ती के प्रसन्नता के लिए ख्वाहिशा, काम, क्रोध और अहंकार रूपी मस्त को ज्ञानी रूपी तलवार से काटकर शक्ती माता के चर्ण कमलों पर अर्पण करें। तमाम प्राणियों से प्रेम उत्पन्न करें। अपने स्वरूप का औरों में देखें और तमाम प्राणियों के स्वरूप को अपने में देखें। भेद भाव का हमेशा के लिए छोड़ दें। अपने जैसा औरों को आत्मवत्त समझें।

बालक, यौवन, वृद्ध, स्त्री, राजा, साधु, पापी, मूर्ख, विद्वान वगैरह सब के ऊपर प्रेम पूर्वक एक नज़र से देखें। शुद्ध विचार को ही निरंतर अन्तःकर्ण में उदय होने दें, अशुद्ध विचार को पास मत आने दें। शुद्ध विचार और शुद्ध-आचरण का पालन करने से शक्ति माता प्रसन्न होती है। शक्ति माता को ही प्रसन्न करना है। इसलिए शक्ति माता का ध्यान करें। उपासना करें। शक्ति ही जीवन है।

शक्ति ही सत्य है। शक्ति ही धर्म है, शक्ति ही सब कुछ है। शक्ति ही की सर्वत्र आवश्यकता है। शक्तिशाली बनें, बलवान बनें, वीर बनें, निर्भय बनें और स्वतन्त्र बनें।

इस मांस और रक्त रूपी जिस्म में जिसको शरीर कहते हैं। आपके लिए एक रथ है। जिस पर चढ़कर आप कहीं भी पहुंच सकते हो। इस शरीर रूपी रथ को काम में लावें। इस शरीर रूपी रथ के ज़रिये वैकुण्ठ पहुंच सकते हो। कायरता छोड़कर सजीव बनें। आपके अन्दर शक्ति का भण्डार है, आपके जीवन का उद्देश्य, विशेष जीवन को प्राप्त करने का है।

जियालाल सराफ

प्रार्थना

मांज भवान्य कुम सें बेड चान्य आश
में ति बोज़तम चु ज़ारी।
कुस पथर प्योमुत तुलुम थोद,
कासतम में लाचारी।
पाद्य सेवन करहा वौन्यव बे चोन,
लगय पादन चे पारी।
ध्यान दार, चोन हृदयस मंज़ ज़न,
बिहिथ चु तिलकदारी।
वौन्य बे ग्यव चान्य ग्रोण तु लक्षण,
कांशिरिस मंज़ सारी।
पादनुय चान्यन बे लागय,
लोलु पोश ज़ार्यं म्बारी।
चानि दर्शन बापथ में गोम,
येचकाल प्रायं प्रारी।
हावतम मोख कासतम सें ज़न्मु,
ज़न्मन हुंज़ खारी।
कोर में पञ्चस्तवी तरजमु,
कांशिरिस मंज़ ज़ारी।

युथ ओपकार वाति बेखल्यन,
मैत्ति बनि चान्य यारी ॥

پرارتھنا

ماجہ بوأنی چھم ستےٚ پرأنِش ہیٚوٚ تہ لوٚر تمہٕ زاری

چھیٚس ہیٚتھر چوٚمت تُلم تھوٚوٕ کاستم ستےٚ لاچاری

پادِ سیٚبوٚن کرٕ ہا وونی بہٕ چھوٚن لگے پادن تٕرےٚ پاری

دیان دار چھوٚن ہردٕیس منٛز تمن بہتھ پٕرتِک واری

وونی بہٕ گیوٚ چانی گون تہٕ کھیٚن کاشرِس منٛز ساری

پادٕ نیٚ چانِنہ بہٕ لاگےٚ لولہٕ اپوٚش تٕرارٕ زاری ۔

چانہٕ دَرشنہٕ باپتھ ستےٚ گوم یُتھ کال پرأری پرأری

ہا دَم موکھ کاستم ستےٚ زُنمہٕ زٕھن ہنٛزِ خاری

کوٚر ستےٚ بھگوت گیتا تَرجمہٕ کاشرِس منٛز جاری

یتھ وُپکار واتہٕ بکھتن ہیٚوٚ تہ
بنہٕ چانی یاری

○

ॐ

ध्यान

सृष्टौसम्स्थापनायतुऽपहरण विधौ मोहणेनौग्रहीपि,
सर्वेषामऽगतानाम् निज महिमवशाद् ऽक्रमेनैवयालम।
नित्यं क्रीडा प्रसक्ता रचयति सकलं
स्वांतम शक्त्या प्रपंचम।
सा नः स्नानाय मुयाद्ऽभिमत फलं,
भद्रकाली च काली॥

یُس پنَنہٕ مہاکِنہٕ کران سرِشٹی تھتی سنٛہار

یُس دوان مُوہ تِمہٕ ترشِس پیٚت کھان

کرٕہ روستے سارِنے سنٛسرِشٹن یُس

مُشرا وُنس پیٚٹھ چھےٚ سامرتھوان

سو بدرِ کالی کھیٛاں سوٚرُویہ سوٚمن

رُچھتن اُسہ کانٛہ چھیتہٕ تھل آسِتن اُسہ دیان

योसु पनुनि महिमा किन्य करान
सृष्टी थैंती संहार:
युस दिवान मोह तमु निश पोत कडान,

क्रमु रौस्तुय सारिनुय बंदिशन यौस,
सुचरावनस प्यठ ह्वय सामृथवान,
सोय मङ्गोली कल्याणु स्वरूपु सौंस
रंछितन असि कांछमुत्य फल आंस्यतन असि
दिवान ॥

○

ओं नमः त्रिपुर सौन्दर्यं ॥
—ः लघुस्तवः ः—

ॐ ऐन्द्रस्येव शरासनस्य दधती
मध्ये ललाटं प्रभां,
शौक्लीं कान्तिमनुष्णगौरिव
शिरस्यातन्वती सर्वतः।
एषाऽसौ त्रिपुरा हृदि द्युतिरिवोष्णांशोः
सदा हः स्थिता,
छिन्द्यान्नः सहसापदैस्त्रिभिरघं
ज्योतिर्मयी वाङ्मयी ॥१॥

ینہٕ وز نیٚرِے کاں ہیش دِنت منٛز ٹلاٹس دارآنی

ژٕندرمُس ہِشِ سفید ورن دٕفتی۔ شیرس ہیٹھ لیو یہ چمکانی
ہٕردیس یٔمیس ہبریہ پشندی پاٹھی، چمکہ وٕنی دِفتی روز آنی
سوے تٔرہ لور سُندری سائنس ہٕردیس منٛز رُوزی تن
سوے جوٗن سوٗروٗپ ہُر سوٗتی سوٗروٗپ یٔنہِ انہ ٹھکی تن
تٔرِلن پٔلن ہِشِہ اُشکہ یٔہ کنی، تٔرِد پاپ انہ زٔنی تن

यंन्द्राज़ सुन्ज़ हिश कसान कुरख दारबुन्य ही भवानी
मंज़ ललाटस गह चै चमकान दिपित चै शुबांनी।
सासुबंध सिरियि बैथि यंन्दसु ज़न चै फोल्यमुत्थ छोपारी
त्रिभवनस योहय चोन जोति रूप कासि मथ
कौंसि खारी।
योहय ध्यान चोन माता गोपराथि हृदयस
मंज़ मैं रुज्य तन।
युथ बै बनुहा परिपूर्ण सथ चित्त आनन्द गण
चेतितनम पावन स्थान्यन कंर्यतनम तिके
मैं जांनी।
सरस्वती हुन्द प्रसाद बंन्यतनम, युथ मैं
खुलेहे वाणी॥

या माता त्रपुसी लता तनुल सत्तन्तुस्थिति स्पर्धिनी,
वाग्बीजे प्रथमे स्थिता तव सदा तां तन्महे ते वयम्।
शक्तिः कुण्डलिनीति विश्वजनन व्यापार बद्धोद्यमा,
ज्ञात्वेत्थं न पुनः स्पर्शन्ति जननी गर्भेऽर्भकत्वं नराः
॥२॥

یوسہ زاوجہ تو ولہ لگہ شستہ تا یہ ہش نتھ تتھ کہلاو
سادتر وار زاوج ولتھ لیس گنڈ لنی تکاستی چھ تاو
ییز اچھ سر س منز گا یوسہ شکت چھ آسانی
سو سہ گا زگت پاد کرتس پتھ آسہ و دیو گی
امہ کے دیان لیس منش زانہ کر ستا گو شہ پیرش
گرہ پھ باوس شرک یاوس اتھ کر ہتہ بیلہ ہتش

युसु ज़ांबीजि सोरेलि लंजि हुंज़ितारि हिश यथ कु कंस्लाव,
शाद्रुगार ज़ांबिज वंलिथ यस कुण्डलिनी शक्ती
कु नाव।
बीज़ु अक्षरस संज़ कला योसु ठीकिथ कु आसांनी,
सोय कला ज़गथ पांदु करनस आसुवन्य कुय
युक्ती।
ओसिकुय ध्यान युस मनुष्य ज़ानि, कर सुना
करि सु स्पर्श,
गर्भु वासस मंज़ बारस अदु कर बनि बेयि मनुष्य॥

दृष्ट्वा संभ्रमकारि वस्तु सहसा
हे ऐ इति व्याहृतं,
येनाऽऽकूत वशादऽपीह वरदे
बिन्दुं विनाप्यक्षरम्।
तस्यापि ध्रुवमेव देवि तरसा जाते तवानुग्रहे,
वाचः सूक्ति सुधारसद्रवमुचो निर्यान्ति वक्त्राम्बुजात्
॥१॥

ہی دیوی یوٗد کانٛہہ خوفناک چیز وچھتھ جَل جَل
کری اے اے بِنٛدٕ رۆستے پیٚیدی خطاب تس تَل
ییٚمہِ مُجرا تسٕنٛد مُنتر بنِتھ تس چون انُگرہ
نیرِ وانی تسنٛد اسُن ٹھِ کوٗتِھ امرتٕکٕ سۆزِتھ

ही दीवी योद कांह खोफनाक चीज़
वीछिथ जल जल,
करि ऐ ऐ बिन्दु रौस्तुय सपदि
तस ती हल।
यियि मुजरा तसंति मन्त्र बनि तस चोन अनुग्रह
नेरि वांनी तसुन्दि मो खु निशि कूटि असरथ तुकुस
सु ग्रेह॥

यन्नित्ये ! तव कामराजमपरं मंत्राक्षरं निष्कलं,
तत्सारस्वतमित्यवैति विरलः कश्चिद्बुधश्चेद्भुवि।
आख्यानं प्रतिपर्व सत्य तपसो यत्कीर्तयन्तो द्विजाः
प्रारम्भे प्रणवास्पदं प्रणयितां
नीत्वोच्चरन्ति स्फुटम्॥७॥

ہی نِتہ رۄپی دۄیُم منتر چون کامہ راجہ ناو آسہ وُن
سُہ منتر نِشکل تُہند کانہہ پرتھوی پیٹھ چھُ زانہہ وُن
سُہ گو سارسوت بیز اکچھر ست تپ ہی رِشی چھی پران
دۄہم پرون پیٹھ برہمن اَمیک ویاکھیان چھی کران
وانہ ناوِتھ اوٚنچھ جایہ پیٹھ یی منتر اُچھارن کران

ही नित्यरूपी दोयुम मन्त्र चोन कामः राज नाव
आसवुन।
सुय मंत्र निष्कल वनिथ कांह पृथ्वी प्यठ छु ज़ानुवुन,
सुय गव सारसोत बीजु अक्षर सततप ही ऋषि
छि परान।
दोतम परवन प्यठ ब्राह्मण अम्युक व्याख्यान
छि करान,
वातुनाविथ ओंचि जायि प्यठ यी मन्त्र उच्चारण
करान॥

०

यत्सद्यो वचसां प्रवृत्तिकरणे दृष्ट्‌ प्रभावं बुधै,
स्तार्तीयीकमहं नमामि मनसा त्वद्बीजमिन्दुप्रभम्।
अस्त्वौर्वोऽपि सरस्वतीमऽनुगतो जाड्याम्बु-
विच्छित्तये,
गौः शब्दो गिरि वर्तते स नियतं योगं
विनासिद्धिदः॥
॥५॥

❀❀ ترجمہ بیہ اکھرک یہاوانی کھلنس سہتھ گاٹلی وتھان
تتھہ اکھرس ژُتلہ دِتہ سوٗ سنتس چھُس ہُ منہ کنی ترام کران
سوٗروپ تتھی تہ سہ لوک دار نایہ وسےٗ ستیٖدی دِوان
موٗرکھ روٗلی پاپیس گالنہ باپتھ واڈو نامی اگن بنان

त्रेयमि बीज़ अक्षरुक महिमा वाणी खुलनस प्यठ
दाना बुछान,
तथ अक्षरस चन्दुर दिफ़ति सोसतिस छुस बंमनु
किय प्रणाम करान
सोरूप बंनिथ सु योग दारनाथि रोसतुय सेंदी
दिवान,
मूर्ख रूपी पांवियस गालनु बापथ वाडव नामी
अंगुन बनान॥

एकैकं तव दवि बीजमनघं सव्यञ्जनाऽव्यञ्जनं,
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रमगतं यद्वास्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममऽपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितम्,
जप्तं वा सफलीकरोति सहसा तं तं समस्तं नृणाम्॥ (६)

ہی دیوی یُس پَرِ چون بیز اَچھُر یوٚد کُنُے
دۄشہ رۄس یا دۄشہ سۄس یا وُلٹہ سیوٚد یا بیوٚن بیوٚنُے
ییٚمہ ییٚمہ کامنایہ باپتھ لیس مَنش آسہ زبان
تمِس مَنشس بوٚزِس منٛز ساری مطلب چھی نیران

ही दीवी युस परि च्योन बीज़ु अछुर योंद कुनुय,
दूषि रौंस या दूषि सौंस या वुल्टु स्यौंद या ब्यौन ब्यौनुय।
येमि येमि कामनायि बापथ युस मनुश आसि ज़्यान,
तमिस मनुशस बवुसरस मंज़ सारी मतलब छी नेरान॥

वामे पुस्तक धारिणीमऽभयदां साक्षस्रजं दक्षिणे,
भक्तेभ्यो वरदानपेशलकरांकर्पूर कुन्दोज्ज्वलाम्
उज्जृम्भाम्बुज पत्रकान्त नयन स्निग्धप्रभालो-
किनीं,
ये त्वामऽम्ब न शीलयन्ति मनसा तेषां
कवित्वं कुतः॥७

کھووریس اَتھس منز چے پوستک دورمُت ہی بوانی
دچھنِس اَتھس زپہ مال بیہ سۭتی ابھے دوانی
بیاکھ اَتھ چون پمپوش زن بھکتن ور دوانی
چھوٗلیتی پمپوشہ نیترو زن بھکتن وچھانی
یُس یہ دیان کرِ چون اماپن تس پرسن بنانی
آسہ کانہہ شہ یتھ جگتس منز تس چھ دانا ونانی

खोवरिस अथस मंज़ चे पोस्तक दोरमुत ही भवानी,
देछिनिस अथस ज़पुमाल बैयि सुत्य अभय दिवानी।
ब्यारव अथु चोन पम्पोश जन बखत्यन वर दिवानी,
चोन्यसुत्य पम्पोशि नेत्रव ज़नसु बखत्यन वुछानी।
युस यि ध्यान करि चोन अम्मा मन तस प्रसन्न बनानी,
आसि कांह सु यथ जगतस मंज़ तस छि दाना बनानी।

ये त्वां पाण्डुर पुण्डरीकपटल स्पष्टाभिराम प्रभाम्
सिञ्चन्तीमऽमृत द्रवैरिव शिरो ध्यायन्ति मूर्ध्नि स्थिताम्।
अश्रान्तं विकटस्फुटाक्षर पदा निर्याति वक्त्राम्बुजा,
तेषां भारति! भारती सुर सरित्कल्लोल लोलोर्मिवत्॥
(८)

یُس سفید پمپوش ڈلہ پانٹھ خوش زٕے دِفتی وُچھانی
ورشُن کران امرٕتہٕ کے ژھٹ تمہ چھے پٕ آئی سے
یُس یہ دیان کرِ برہمانڈس منز چھ تس نیرانی
بے روک پانٹھ تسُندِ مکھ نِشہ سرسوتی ہنز وانی

युस सफेद पम्पोश डल पांठ्य
ख्वश ह्वै छि फती वुछांनी,
वर्शुन करान अमरथतुकुय वुद,
तमिचे यिवानी।
युस यि ध्यान करि ब्रह्माण्डस
मंज़ छि तस नेरानी,
बे रोक पांठ्य तसुन्दि मोखु निशि
सरस्वती हुंज़ वांणी॥

ये सिन्दूर पराग पुञ्जपिहितां त्वत्तेजसां द्यामिमा,
मुर्वीं चापि विलीनयावकरस प्रस्तारमऽग्नामिव।
पश्यन्ति क्षणमऽप्यऽनन्यमनसस्तेषामऽनङ्गज्वर,
कलान्तास्त्रस्त कुरङ्ग शावकदृशो वश्या भवन्ति स्फुटम्
॥ ६ ॥

چانہِ تیزٕ کِنۍ یُس اَکھا دُچھہِ سیندورٕ برونٹھے آکاش
پرتھوی لاچھہِ رنگہٕ فٹسٕچ دُچھہِ آسیس منس باس
نہٕ ڈلٕوِنۍ کشنہٕ ماترس یُس یہٕ دیان دارآنی
سارے شکتی تریہٕ روپ بنتھ تِمن چھہِ قولُو لوآنی
تِمہٕ شکتی یِمن کامہ دیوٕ تیرٕ سیتۍ بند کرآنی
تِتھہٕ پاٹھۍ یِتھہٕ کھوژمت ہرگہٕ بچہٕ کانہہ چھچے رٹانی (۹)

चानि तीज़ु किन्य युस अस्रा बुछि सेंन्दूरि ब्वंथुय आकाश,
पृथ्वी लाछि रंगु फटसुच़ बुछि आस्यस मनस बास।
न डलुबुन्य क्षणु मात्रस युस यि ध्यान दारांनी,
सांरुय शखती त्रुयि रूप बेनिथ तिमन छि कोतू यिवांनी।
तिमु शखती यिमन कामदीव तीर सूत्य बन्द करांनी,
तिथु पांठ्य यिथु खूरसुत मृग बचि कांह कुय स्टांनी॥

०

चञ्चत्काञ्चनकुण्डलाऽङ्गदधरामाऽऽबद्ध काञ्चीस्रजम्
ये त्वां चेतसि तद्गते क्षणमपि ध्यायन्ति कृत्वा स्थितम्।
तेषां वेश्मसु विभ्रमादऽहरहः स्फारीभवन्त्यश्चिरं,
माद्यत्कुञ्जरकर्णताल तरलाः स्थैर्यं भजन्ते श्रियः॥

((२०))

چمکہ وِنہ سونہ سوٚختہ کنہ واجہ مٔنزہ سٔنسٕر لاگانی
سونہ سٔنز تاگر پڑلہ وٕنی چھکہ ژٕ کمرس گنڈانی
یُس یہ وِیان چوٚن مٔنز مَنس تھٔوِتھ پیٹھ لٔسی لگانی
تَس روزِ شانہ شوکت گَرس ژیر تامتھ لچھمی
سو لچھمی لٔوسہ نہ ہِسی کنہ چھ حرکتھ پانٔژ ژٔنی زِ آسانی
سارِ پیٚٹھ سٔپدا یہ تَس پورشَس قرار کرتھ چھ روزانی

((१९))

चमकुवुनि सोनु मोरुतु कनुवाजि मञ्झबंद चु लागांनी,
सोनु सुज़ तागुर प्रज़लवुन्य छ्स्ख चु कमरस गंडांनी।
युस यि ध्यान चोन सञ़ मनस तथ्य प्यठ दुसलगांनी,
तस रोज़ि शानु शौकत गरस चेर तामथ लछ्मी।
सो लछ्मी सोसु मद हेस्य कनुचि हस्कच पाठ्य चञ्चल
आसांनी,
सारेय सपदिथ तस पुरुषस करार करिथ छि रोज़ांनी॥

०

आर्भठ्याशशि खण्ड मंडित जटाजूटां नृमुण्डस्रजं,
बन्धूक कुसुमारुणाम्बर धरां प्रेतासनाध्यासिनीम्।
त्वां ध्यायन्ति चतुर्भुजां त्रिनयनामाऽपीनतुङ्गस्तनीं;
मध्ये निम्नवलित्रयाङ्कित तनुं त्वद्रूप संवित्तये ॥२१॥

شوٗبہ وُنہ چانہ جٹہٕ مُکٹہٕ نالہٕ منشہ کلہٕ مالہٕ سوٚس ۱۹
بندوٗقہ پوشہ رنگہٕ سورخ پوشاکہٕ تلہٕ موٗرد آسنہٕ سوٚس
کمرس تاگر گنڈِتھ ژوٚتر بوٚز ترٛیٚ نیٚتھر دارانی
چون سوٚروٗپ زانہٕ پانچھ یہٕ دیان تُکھتی چھہٕ سوٚرآنی
॥१॥

शूब्वुनि चानि जटु मुकटु नाल्द मनशि
कलु मालु सोंस, ' ' '
बन्दूकु पोशि रंगु सोरख पोशाकु
तल मोरदु आसुनु सोंस।
कमरस तागुर गन्डिथ चोंतुर बोंज़
त्रै नेथुर दारांनी;
चोन सोंरूप ज़ानुनु बापथ यि
ध्यान कंखती छि सोरांनी॥

जातोऽप्यल्प परिच्छदे क्षितिभुजां
सामान्य मात्रे कुले ।
निःशेषावनि चक्रवर्तिपदवीं लब्ध्वा प्रतापोन्नतः।
यद्विद्याधर वृन्द वन्दित पदा श्री वत्सराजोऽभवत्,
देवि! त्वच्चरणाम्बुज प्रणतिजः सोऽयं
प्रसादोदयः ॥२२॥

کانٛہہ راجا مومولی کولس منٛز آسہ زامُت
کُل پرتھوی پیٹھ کران آسہ راج آسن پرووُت
تس چکروَرتس پادن دیوتا چھہ پوزانی ؎
چھُ مہما تس چانہ پادِ پوزایہ ہُنٛز مہربانی ((۱۲))

कांह राजा मोमूली कोलस मंज़ आसि ज़ामुत,
कुल पृथ्वी प्यठ करान आसि राज
आसान प्रोवमुत।
तस चक्रवर्तस पादन दीवता छि पूज़ानी,
छु महिमा तस चानि पादि पूज़ायि हुन्ज़
मेहरबानी ॥

○

चण्डि! त्वच्चरणाम्बुजार्चनविधौ बिल्वीदलोल्लुण्ठन-
त्रुट्यत्कण्टककोटिभिः परिचयं येषां न जग्मुः कराः।
ते दण्डाङ्कुशचक्रचापकुलिशश्रीवत्समत्स्याङ्कितै-
र्जायन्ते पृथिवीभुजः कथमिवाम्भोजप्रभैः पाणिभिः॥
((२३))

ہی ژنڈی چانی ژرن پوزایہ ییٚتھ لیس آنانی
بیل پوش ژٹنہ ژٹنہ کنڈ سیتی اَتھ لیس چھ ژھبانی
ٹونگ تہ تیر کمانہ ہنٛدی یس کنڈ خشہ سیتی وسانی
تِتھی اَتھ سوس پورش بییہ زنمہ راجہ مہاراجہ بنانی
(۱۳)

ही च़ंडी चांन्य च़रनु पूज़ायि ब्यठ युस अनांनी,
ब्यल पोश च़ंट्य च़ंट्य कण्ड सूत्य अथु
चल कि च़ुथनांनी।
ठोंग तु तीर कमानि हुन्य युस कोण्ड खशि
सूत्य वसानी,
तिथ्य अथु सोंस पोरुष बेयि ज़न्मु राजि
महाराजि बनांनी॥
(13)

विप्राः क्षोणिभुजो विशस्तदितरे क्षीराज्य मध्वासवैः,
त्वां देवि! त्रिपुरे! परापरमयीं संतर्प्य पूजाविधौ।
यां यां प्रार्थयते मनःस्थिरधियां तेषां त एव ध्रुवम्,
तां तां सिद्धिमवाप्नुवन्ति तरसा विघ्नैरविघ्नीकृता॥
((२८))

برہمن راجہ ویش یا شودر چانی پوزا کرانی
دود گیو ماچھ شراب پوزایہ کنی تمہ ارپن کرانی
شردایہ کنی یہ کینژھا منگن تتھ ضرور لبن دوانی
بے روک پانٹھ وگنہ روستے سیدی سہ پراوانی
((۱۴))

ब्रह्मण राजि वैश या शुद्र चानी पूज़ा करांनी,
दोद, ग्यव, माछ, शुराब पूज़ायि किन्य
त्यें अर्पन करांनी।
श्रदायि किन्य यि केंह्‌छा मंगन तस
ज़ोरूर लिबन दिवांनी,
बे रोक पांठ्य वेंगनु रोस्तुय सेंदी
सु प्रावांनी॥

०

शब्दानांजननी त्वमत्र भुवने वाग्वादिनीत्युच्यसे,
त्वतः केशववासव प्रभृतयोऽप्याविर्भवन्ति स्फुटम्।
लीयन्ते खलु यत्र कल्प विरमे ब्रह्मादयस्तेऽप्यमी,
सा त्वं काचिदचिन्त्य रूपमहिमा शक्तिः परा-
गीयसे ॥१५॥

ہی ماتا تریبونس منز شبد روپ چھ آسانی
جگتس منز ناد چوئے سرسوتی چھی وَنانی
ییلہ نشہ کیشو مہندراز دیوتا پرکٹ بنانی
کلپہ انتس برہماد ییلہ نشہ لے گژھانی
کیہہ ستانی نہ سورنی مہما سو شکتی چھی وَنانی
(۱۵)

ही माता त्रिभुवनस मंज़ शब्दु रूपु छु आसांनी,
जगतस मंज़ नाव चानुय सरस्वती छी वनांनी।
चैन निशि केशव, येन्द्राज़, दीवता प्रकट बनांनी,
कल्प अन्तस ब्रह्मादिक चैंय निशि लय गछांनी।
कोस्ताम्य न सोरनी महिमा सोसतिस थंज़
शक्ती छी वनांनी ॥15॥

देवानां त्रितयं त्रयी हुतभुजां शक्तित्रयं त्रिस्वरा-
स्त्रैलोक्यं त्रिपदी त्रिपुष्करमथो त्रिब्रह्मवर्णास्त्रयः।
यत्किञ्चिज्जगति त्रिधा नियमितं वस्तु त्रिवर्गात्मकं,
तत्सर्वं त्रिपुरीति नाम भगवत्यन्वेति ते तत्त्वतः॥
((१६))

دیوَن مَنز ترٛیٲے دیو چھے، اَگُن مَنز ترٛیٲ اَگُن چھے
شَکھتی مَنز ترٛیٲ شَکھتی چھے، سوَرن مَنز ترٛیٲ سوَر چھے
وَرنَن مَنز ترٛیٲ وَرن چھے، گنگا، جمنا، سرسوتی چھے
بھُو، بھُوَہ، سوَہ، گایتری چھے، ست ژیتھ آنند چھے
یہ کینٛہہ چھا نیم ترٛگون سوٗروٗپ، سورُے پتہٕ پتہٕ
پکان چھے۔ ((١٦))

दीवन मंज़ त्रनुवय दीव छुय, अंगुनन मंज़ त्रुअंगुन छुय,
शक्ती मंज़ त्रु शक्ती छुय, स्वरन मंज़ त्रनुवय स्वर छुय।
वर्णन मंज़ त्रु वर्ण छुय, गंगा, जमना, सरस्वती छुय,
भू, भुवः, स्वाह, गायत्री छुय, सत च्यथ आनन्द छुय।
यि कैंह्‌ छा नियम त्रिगौण स्वरूप, सोरुय पत,
पत, पकान छुय ॥16॥

०

लक्ष्मीं राजकुले जयां रणभुवि क्षेमङ्करीम् ध्वनि,
क्रव्यादद्विप सर्प भाजि शवरीं कान्तार दुर्गे गिरौ।
भूत, प्रेत, पिशाच, जम्बुक भये स्मृत्वा महाभैरवीं,
व्यामोहे त्रिपुरां तरन्ति विपदस्तारां च तोय
प्लवे ॥१७॥

راژگرن منز ژٕلچھمی، جنگہ ژٕے منزٕرن لوٗمی
وٕلٕٹہ دِتہ کلیان رٕوپی خوفناک جانورن منز شکارو ژٕے
کوہن پیٹھ چھکھ ژٕ دُرگا، پشاچن نشہ بیروی
یم وٕلٕٹہ جایہ دیان چون سورن، تِمن ژٕ آپداہ
کرانی -
((۱۷))

राज़ु ग्रज़न मन्ज़ चु लछ्य मी, जयचे मंज़ रणभूमि
तुल्ट वति कल्यान रूपी खौफनाक जानवरन
मंज़ शिकारि चुय।
कोहन प्यठ छख चु दुर्गा, पिशाचन निशि
भैरवी।
तिम ब्रुठ जायन यान चोन स्वरन, तिमन चु
आपदा दूर करान।

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी,
मातङ्गी विजया जया भगवती देवि शिवा शाम्भवी।
शक्तिः शङ्कर वल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी,
ह्रींकारी त्रिपुरा परा परमयी माता कुमारी त्यसि॥
(२८)

مایا ژٕے، کُنڈلِنی ژٕے، کِریا مدھُمتی ژٕے
کالی ژٕے، کلا ژٕے، مالِنی ماتنگی ژٕے
وِجیا ژٕے، جیا ژٕے، اختیار واجنی ژٕے
ژٕتھ سوروپ ژٕے، سامرتھ ژٕے، شامبھوی شکتی ژٕے
شنکر سُند اَٹھ کھاکھ ژٕے، سرسوتی بیرَوی ژٕے
ہریم شکلہٕ ترپرا ماتا روپ ژٕے
(۱۸)

माया च़ुय, कुण्डलिनी च़ुय, क्रिया मदुमंती च़ुय,
कोली च़ुय, कला च़ुय, मालिनी मातङ्गी च़ुय।
विजया च़ुय, जया च़ुय, यख्तियार वाजन्य च़ुय,
च़्यथ स्वरूप च़ुय, सामरथ च़ुय, शाम्भवी शक्ती च़ुय॥
शंङ्कर सुन्द् वठ कुरन च़ुय, सरस्वती भैरवी च़्य।
ह्रीम् शक्लि परापर त्रिपुरा माता च़्यिम र
०
(१८)

आद्यैः पल्लवितैः परस्परयुतैर्द्वित्रि क्रमाद्यक्षरैः,
काद्यैः क्षान्तगतैः स्वरादिभिरथो क्षान्तैश्च
तैस्तैस्वरैः।
नामानि त्रिपुरे! भवन्ति खलु यान्यत्यन्त गुह्यानि ते
तेभ्यो भैरवपत्नि विंशति सहस्रेभ्यः परेभ्यो नमः॥
॥१६॥

'अ' پیٹھ سارِنے اَچھرن دوہہ ترِبِیہ کِنہ مِلہٕناوِتھ
'क' پیٹھ 'क्ष' تانۍ شبد سوس رَلاوِتھ ناوچانۍ بناوِتھ
ہی ترِپرا یہ وُہ(۲۰) ساس ناو چانۍ رہسہ روٗپ بنانۍ
ہی بیرو پتنی تِمن رہسہ ناون پرنام کرانۍ
॥१७॥

'अ' प्यठ सारिनुय अछुरन द्वोयि त्रैयि क्रमु मिलनाविथ
'क' प्यठु 'क्ष' तान्य शब्द, रलाविथ नाव
चोन्य बनाविथ।
ही त्रिपराय वुह(२०) सास नाव चोन्य रहस्य
रूप बनानी।
ही भैरव पत्नी तिमन रहस्य नावन ब
प्रणाम करानी॥
॥१७॥

बोद्धव्या निपुणं बुधैःस्तुतिरियं कृत्वा मनस्तद्गतं,
भारख्या त्रिपुरेत्यनन्यमनसी यन्नाद्यवृत्ते स्फुटम्।
एक द्वित्रिपदक्रमेण कथितं स्वत्पाद संख्याक्षरै-
मन्त्रोद्धार विधिर्विशेष सहितः सत्संप्रदा-
यान्वितः॥२०॥

زانِنہٕ چھے گاٹلین یی تۄ ژٕ سۭے کُن مَن لاگاوِتھ
چانین پادن ہنٛد شُمار کیٛو اَچھر کیٛن مِلناوِتھ
گوڈنکہ دۆیمہ ترٛیمہ پدٕ کرمہ منترٕ دار بناوِتھ
رِیتہ سمپرادایہ سوس یی تۄ اۆن مے ژٕ کُن ٹھیکراوِتھ
((۲۰))

ज़ानुनुय क्युथ गाटुल्यन यी तसु च़ै कुन मन लगांविथ,
चान्यन पादन हुन्दि शुमार क्यो अछरन किन्य
मिलुनाविथ।
गोडुनिकि दोयिमि त्रेयमि पदु क्रमु मन्त्रोदार
बनांविथ;
रीति सम्प्रदायि सोस यी तसु ओन मे च़ै कुन मन
ठीकरांविथ॥
((२०))

सावद्यं निरवद्यंऽस्तु यदि वा किं वानया चिन्त
नूनं स्तोत्रमिदं पठिष्यति नरो यस्यास्ति भक्ति
संचिन्त्यापि लघुत्वमात्मनि दृढं सञ्जायमा
त्वद्भक्त्या मुखरी कृतेन रचितं यस्मिन्यापि
हृदा

(२५)

نیٚندٕ یایہ سۆس یانہٕ یایہ رۆس فکرا اَتھ ترٲوِتھ
یُس یہ ستوتر کانٛہہ مۆنٛش پَرِ آسِس بَکھتی چانٛی
پنٛنِس پانَس لوچر زانِتھ ہیٚے تہ دۆدنا ترٲوِم
چانٛہ بکھتی ہنٛد زور بکواسی بنِتھ یہ توٚتا بناوِم

(۳۱)

नैन्दायि सोंस या नैन्दायि रोस फ़िकिरा अमि
त्रोविथ

युस यि स्तोत्र कांह मनुष्य परि आस्य भक्त
चानि

पनुनिस पानस लोचर ज़ांनिथ में ति हठत
प्रामु

चानि भंक्ती हुन्द ज़ोर् बकवास्य बनिथ यि स्तोत
कर्नौवु

चर्चास्तवः

— ॐ नमः त्रिपुर सुन्दर्यै —

आनन्द सुन्दर पुरन्दर मुक्त माल्यं,
मौलौ हठेन निहित महिषासुरस्य ।
पादाम्बुजं भवतु मे विजयाय मञ्जु-
मञ्जीर शिञ्जित मनोहरमम्बिकायाः ॥१॥

پادچانی سونٛدر آنند دایک یئندراجن تراوتھ موختہ مال
ہیٚیہ ستی زیر دیتھ ہشاسورسے کھیہ ماترس منٛز وتھ پاتال
سے سونہ پاد چون روز تن سے ہرد بستی
تُتہ بہ امبکہ بوز ترو و زستہ تال
سے منوہر پاد بنٛی تن سے ہیتو جے کارکسے ہاوتن کمال

पाद चोन्य सोन्दर आनन्द दायक येन्द्राज़न त्रांव यथ
मोख्तु माल,
मौलि सूत्य ज़ीर दितुथ महिषासुरस्य हगु मात्रस मंज़
बोत सु पाताल।
सुय रोनि पाद चोन रछ्यतन मे हृद बस,
सुय वे अम्बिकाय कोज़ु ओनि ओनि ताल ॥
सुय मनोहर पाद बंन्यतन मे हीतो जैजैकार मे
हाव्यतन कमाल ॥१॥

सौन्दर्य विभ्रमभुवो भुवनाधिपत्य-
संपत्ति कल्प तरवस्त्रिपुरे! जयन्ति ।
एते कवित्व कुमुद प्रकरावबोध,
पूर्णेन्दु व[illegible] यिजगज्जननि प्रणामाः ॥३॥

یم پرنام سوندریکہ ولاسکی جاے تھ کھنڈی شمار کرنہ لیوان
ترن بون ہند راج سمپدایہ ہندی کلپہ ورکھ ہوی یم پرنام ایبان

یم پرنام کوتایہ روپی کمد پوش پھولراونہ باپتھ زندرمہ ہی اسان
ہی زگتھ زننی واتے زسے میانی تھوی پرنام پھیر نہ ریسے
کرن کران (۳)

यिम प्रणाम सौन्दर्यीकि विलासुक जाय बंनिथ
थंध शुमार करन यि
त्रन बवनन हुन्दि राज संपदायि हुन्द कल्पवृक्ष
हिन्द यिम प्रणाम छीव
यिम प्रणाम कवितायि रूपी कुमद पोश फौलरावनु
बापथ चंन्द्रमु छी बनान
हीज़गथ ज़ननी मातनय ज़े म्यांन्य यिथ्य हिन्य प्रणा
कुस बं चेय कुन करान

देवि! स्तुतिव्यतिकरे कृत बुद्धयस्ते,
वाचस्पति प्रभृतयोऽपि जडी भवन्ति।
तस्मान्निसर्गजडिमा कतमोऽहमत्र,
स्तोत्रम तव त्रिपुरतापन पत्नि! कर्तुम॥३॥

چانِہِ توتا کَرنَس پیٹھ چھُ نہٕ سامرتھ
بٕرہسپت تہٕ دیوتا جڑ بنانی ؛
ہی ترن تاپن گالن چھُس ہوٗرکھ بہٕ آسِتھ
کَتہٕ سامرتھ بہٕ کرٕ توتا چانی۔
(۳)

चोन्य तोता करनस प्यठ छुनु सामर्थ,
ब्रहस्पत तु दीवता जड बनानी ;
ही त्रन तापन गालवुन्य छुस मूर्ख
बै आसिथ,
कति सामर्थ्य बै करु तोता चानी ॥०॥
—(3)

मातः ! तथापि भवतीं भवती प्रताप,
विच्छित्तयेस्तुति महार्णवकरांधारः।
स्तोतुं भवानि ! समवन्धचरणारविन्द,
भक्ति ग्रहः किमपि मां मुखरी करोति ॥४॥

ہی ماتا زانتھ یہ سمسار کٹھن دوکھ
زٹنہ باپتھ کرم توتا بیہ چانی
چھے توتا سمسار ساگس
بنہ ناو سیانی بیہ ہانز سیانی
چانہ پادٕ کملکہ لولچہ آوشہ
بکواسی ہیو چھے توتا کرانی (٤)

ही माता ज़ानिथ यि सम्सार् कठिन्य दोख,
ज़टनुबापथ करुम तोताविं चानी।
यिहय तोता सम्सार सागरस,
बनि नाव स्यांन्य बैयि हान्ज़ स्यानी॥
चानि पादि कमलुके लोलुचि आविशि,
बकवासुय हयुव छुसय तोता करानी॥।
(4)

सूते जगन्ति भवती भवती बिभर्ति,
जागर्ति तत्क्षयकृते भवती भवानि।
मोहं भिनत्ति भवती भवती रुणद्धि,
लीलायितं जयसि चित्रमिदं भवत्याः॥
(५)

برہما روٗپہ زگتس کران پاد ژے
وِشنو روٗپہ پالن کران ژٕے
رودر روٗپہ سمہار آخرس کران ژٕے
مُہہ دِوان ژٕہ بیہ تھوٚ ژٕہ کالان ژٕے
لیلایہ کیہ چانہِ چھس وُچھان رنگہٕ رنگہٕ
جے جے کار آسی ژے چانِن لیلایہ (۵)

ब्रह्मा रूपु जगतस करान पाॅदु च़ुय,
वैष्णु रूपु पालन करान च़ुय।
रौद्र रूपु समुहार आखरस करान च़ुय,
मुह् दिवान तु बैयि तथ ति गालान च़ुय॥
लीलायि चिमु चानि वुछ वुछान रंगु रंग,
जय जय कार आसि नय चान्यन लीलायिनुय॥

०

यस्मिन्मनागऽपि नवाम्बुज पत्र गौरि,
गौरि! प्रसाद मधुरां दृशमादधासि।
तस्मिन्निरन्तरमऽनङ्ग शराव कीर्णा,
सीमन्तिनी नयन संततयः पतन्ति ॥६॥

ہی گوٗری پمپوٚشہ رنٛگہٕ صفایس
اَمرٕتہٕ نَظَر چھکھ ژٕ فتراوانی
تَس ہیوٚر نیٚتہٕ نیمہ سارییٚ یوٗگنیہ
کامدیوس زَن چھہٕ وَش گژھانی

((५))

ही गौरी पम्पोशि रंगु सफ़ा यस,
अमरथ्यु नज़र छख चु ज्ञावांनी।
तस प[illegible]ठ नैति नेमु सारैय यूगिनीयि,
कामुदीवस ज़न छि वश गछ़ांनी ॥

०

((6))

पृथ्वी भुजोऽप्युदयन प्रवरस्य तस्य,
विद्याधर प्रणति चुम्बित पाद पीठः।
यच्चक्रवर्ति पदवी प्रणयः स एष,
त्वत्पाद पंकजरजः कराजः प्रसादः॥
((७))

اُدین راجس کھرٲوِ پیٹھ کران میٹھی ٭
وِدیادر تہٕ دیوٕ تس چھی آدین ٭
چکرورتی عہدٕ اوس تمۍ پیرووُمت
چانہٕ پادٕ گردِ ہُندِ انُگرہ سٟتی
((८))

उदयन राजस ख्रावि प्यठ क्रान मीठ्य,
विद्यादर तु दीव तस छी आदीन।
चक्रवर्ति औंहदु ओस तम्य प्रोवमुत,
चानि पादु गरदि हुन्दि अनुग्रेह सुत्य॥
((९))

o

त्वत्पाद पङ्कजरजः प्रणिपात पूतै ,
पुण्यैरऽनल्पमऽतिभिः कृतिभिः कवीन्द्रैः ।
क्षीर क्षपाकरदुकूल हिमाऽवदाता ,
कैरप्यवापि भुवन त्रितयेऽपि कीर्तिः ॥
(८)

ہی دیوی چانی پھیوستھ پادن
شیر گرتھ کور پھیو سپز نام
تم بنیہ دوتم تیز لوز سوس
دانا دوتم کوی پرود پھو نام
دود زندیہ لتھم ویتر بیریشتہ پاکو
سفا بنیہ تیزن لوین ہمشہ بنیہ نیکنام
(۸)

ही दीवी चान्यन पम्पोशि पादन ,
हंज़ि मरदि च्यठ कौर यिमव प्रणाम ।
तिम बनेयि वोतम तीज़ु वोज़ सौस ,
दाना वोतम कवी प्रोव तिमव नाम ॥
दोद ज़ेन्दरमु रीशिम वस्त्र बैयि शीनु पांठय ,
सफा बनिथ ज्ञन ववनन सन्ज़ बनेयि नेकनाम ॥
(४)

कल्पद्रुम प्रसव कल्पित चित्रपूजा,
मुद्दीपित प्रियतमा मद्रक्त गीति।
नित्यं भवानि! भवतीमुपवीणयन्ति,
विद्याधराः कनकशैल गुहा गृहेषु॥
(६)

کلپہ ؤرکہ پوشہ سۭتۍ چاٲنۍ پوزا
لولہ سۭتۍ تہ گیوان چاٲنۍ گیت
نیتھ سمیرکۍ گُپھا رٕنۍ گرن منز
وایان وِدیادر سوزٕ تہٕ ساز کٔرِتھ (۹)

कल्पवृक्ष पोशव सूत्य चॉन्य पूजा,
लोलु सूत्य ति ग्यवान चॉन्य गेत।
न्यथ समीर के गुफा रूपी गरन मंज़,
वायान विद्यादर सोज़ तु साज़
कॅरिथ

०

लक्ष्मी वशी करण कर्मणि कामिनीना,
माऽकर्षण व्यति करेषु च सिद्धमन्त्रः।
नीरन्ध्र मोह तिमिरच्छिदुर प्रदीपो,
देवि! त्वदङ्डि-घ्र जनितो जयति
प्रसादः॥
(२०)

چانہٕ زٔرنہٕ کمَلہٕ سیواپہٕ مُنٛد پرٛساد
وَشہٕ کران لچھمی تہٕ بیٚیہٕ سیٚدین
ژھٔتی سہٕ پرٛادان مۄہہ روٗپی گَٹہٕ
اَنہٕ گٹہٕ گالان ژانٛگہٕ سیتی زن
((۱۰))

चानि चरणु कमलु सीवायि हुन्द प्रसाद,
वश करान लक्ष्मी तु बैयि सेंदियन।
शक्ती सु प्रावान मुहु रूपी गैंनि,
अनिगटु गालान चॉंगि सूत्य ज़न॥
((१०))

देवि! त्वदंघ्रि नखरत्न भुवो मयूखाः
प्रत्यग्र मौक्तिक रुचोमुद मुद्वहन्ति।
सेवानति व्यतिकरे सुर सुन्दरीणां,
सीमन्त सीम्नि कुस्मस्तब कायितं यैः॥
((११))

ماج لوآنی چانِن ژٔرتن ہِنٛدی نمہ رٔتن
موخته پھٔتی داران ژٔن کرن
لگنیہ ہیلہ پٔرن ہیوان ژٔلے ژٔرتن ہیٹھ
نمہ چمکہ پرزلان سَتس ستمو تھکن
((11))

मॉज ववॉन्य चान्यन ज़रनन हुन्द्य
नमु रत्न,
मोख्तु फि़स्ती दाराम ज़न किरण।
यूगिनियि येलि परन प्यवान चैं
ज़रनन प्यठ,
नमु चमकि प्रज़लान मस तु सुमु तिसन॥
((11))

०

मूर्ध्नि स्फुरत्तुहिन दीधिति दीप्ति
दीप्तं
मध्ये ललाटमऽमरायुधरश्मि चित्रम्
हृच्चक्र चुम्बि हुतभुक् कणिकानु-
रूपम्
ज्योतिर्यदेत दिदमम्ब! तव स्वरूपम्
(१२)

ماتا ژےٚ مستک ژٕندرٕ زَن پرٕزلوٚن
رام رام بیدرٕنی دٕنی چمکوٚنی
ہردیس منز اگنی جیوتی سوٗروٗپ زن
مانز چون سوٗروٗپ چھے پرکاش آسوٚن
(۱۲)

माता चै मस्तक चंन्दुर ज़न प्रज़लवुन,
राम राम बेदरुन्य दुन्य चमकवुन्य ।
हृदयस मंज़ अग्नी ज्योती सोरूप ज़न
मांज चोन सोरूप छुय प्रकाश आसुन
॥१२॥

सिन्दूर पांसु पटलच्छुरितामिव द्यां,
त्वत्तेजसा जतुरस स्नपितामिवोर्वीम्।
यः पश्यति क्षणमपि त्रिपुरे विहाय,
व्रीडां मृडानि सुदृशस्तमनु द्रवन्ति॥
॥२३॥

سٙیٚندرِ گرٚدِ سوٚستےٚ جوٚرمُت آکاش
لاچھِ رنٛگہٕ پرِتھوی شٲران کٔرِتھ زٔن
یُس ژھٕچھِ کھٔنہٕ ماتٕرس لاج تراوِتھ
تس سٲندی مٲج بوٲنی پتہٕ دوران
॥۱۳॥

सैन्दरि गरदि सोस्तुय जौरमुत आकाश,
लाछ्रि रंग पृथ्वी श्रान केरिथ ज़न।
युस छुछि क्षण मात्रस लाज त्रांविथ,
तस सैंदी मांज बवान्य पतु दोरान॥
॥13॥

०

मातः! मुहूर्तमऽपि यः स्मरति स्वरूपं,
लाक्षारस प्रसरतन्तु निभं भवत्याः।
ध्यायन्त्यनन्य मनसस्तमनङ्गतप्ताः,
प्रद्युम्न सीम्नि सुभगत्वगुणं तरुण्यः॥
॥ २४ ॥

ہی ماتا یُس مُہورتس دیان کری
چون سوٗروٗپ لاچھِ رنگہٕ تارِ سمان
سونٛدر جوان اَڑٕ ژھ رَڑٕ ژھ نہ ڈلونہٕ منہٕ سنٛسہ
کامنایہ تاوِ منٛز تس چھِ سمران
((۱۴))

ही माता युस महूरतस ध्यान करी,
चोन सौरूप लाछि रंग तारि समान।
सौन्दर जवान अछु रछु न डलवुनि मनुसस
कामनायि ताविमन्ज़ु तस छि सुमरान॥

((14))

०

आधार मारुत निरोध वशेन येषां,
सिन्दूर रञ्जित सरोज गुणानुकारि।
दीप्तं हृदि स्फुरति देवि! वपुस्त्वदीयं,
ध्यायन्ति तानिह समीहित सिद्ध साध्या॥
॥ १५॥

مولادارک پران بند کرِتھ یمن
سیندرِ ستی رونگمت پمپوش زن
ہردیس منز اتھ پمپوشس پیٹھ
چون سوروپ باسان راتھ کیو دین
تِمنے پورشن ہند چھ دیان داران
سیدی ساد دیوتاہ تہ بیئے ستھ زن
«۱۵»

मूलादारुक प्राण बन्द करिथ यिमन,
सैन्दरि सूत्य रौंगमुत पम्पोश ज़न।
हृदयस मंज़ अथ पम्पोशस प्यठ,
चोन स्वरूप बासान राथ क्यो द्यन॥
तिमनुय पोरशन हुन्द छि ध्यान दारान,
सैद्य साद, दीवताह त बैयि सथज़न॥
«15»

०

ये चिन्तयन्त्यरुण मण्डल मध्यवर्ति,
रूपं त्वांऽम्ब ! नवयावक पङ्कपिङ्गम।
तेषां सदैव कुसुमायुध बाणभिन्न -
वक्षः स्थला मृगदृशो वशगा भवन्ति
॥२६॥

سِرِیہ مَنڈلکہِ پرکاشہِ وۄزلہِ رَنگہ سوٚس بیٚیہ
لاچھِ رَنگہ سوٚس یِم چون دیشان داران ۔
کامدیوٚ سندِ تیرِ چھیچہِ وَچھِ سوٚس
اَنزھِ رَزھِ تِمَن ماتحت چھِ روزان
((۱۵))

सिर्यिथ मण्डलुकि प्रकाशि वोज़लि रंग सोंस बैयि
लाछि रंग, सोंस यिम चोन द्यान दारान।
कामदीव सुन्दि तीरु वचमचि वछि सोंस,
अछु रछु तिमन मातहत छि रोज़ान।
((16))

रूपं तव स्फुरित चन्द्र मरीचि गौर,
मऽालोकते मनसि वागऽधिदैवतं यः।
निस्सीम् सूक्ति रचनामृत निर्भरस्य,
तस्य प्रसाद मधुराः प्रसरन्ति वाचः॥
((१७))

یِم پوٗرِش مَنَس مَنٛز زُنٛدرَمہ ہیٛو چمکہٕ وُن
سَرسوٗتی رُوٗپہٕ چوٗن دیٛان دارَن
حَدرُوٗس وٲنی موٗدُر اَمرٕ ہیتھ بُری کھٕے
نیٛرِ تِمَن نِرمَل پرَوٲہ ہیٛوٗ زَن
((١٧))

यिम पोरुश मनस मंज़ चंन्दरम, ह्युव चमकुन,
सरस्वी रूप चोन ध्यान दारन ।
हद रौंस वांनी मौंदुर अमर्यथ बर्यथुय,
नेरि तिमन न्यरमल प्रवाह ह्युव ज़न॥
«17»

०

शर्वाणि ! सर्वजन वन्दित पाद पद्मे,
पद्मच्छद च्छवि विडम्बित नेत्र लक्ष्मि।
निष्पाप मूर्ति जन मानस राज हंसि,
हंसि त्वमाऽपदमऽनेक विधां जनस्य ॥१

ہی پاپ گالہٕ وٕنی ژٕیے پادٕ کملن
ساری زٕلو چھی پرنام کرانی
پمپوشہ برگکے دِپتی ہندی پاٹھی
چانی نیتر کمل چھ شوبانی
شودمنشن چھکھ ژٕ ہتہ ساگرس منز
راژہنس ہش زن ژٕ روزانی
ژٕ یے چھکھ سادکن نانا پرکارکی
دوکھ ژٕ دادی آپدا دور کرانی ॥(۱۸)॥

ही पाप गालुवुन्य चेंय पादि कमलन,
सारी ज़ीव छी प्रणाम करानी ।
पम्पोशि बेरगुके दिप्ती हुन्द्य पाठ्य
चान्य नेत्र कमल छि शूबानी ॥

छोड़ मनशास छ़ख व्यथ सागुरस मंज़,
राज़ु हन्स हिश ज़न त्रु रेज़ोनी।
त्रुय छ़ख सादकस नाना प्रकारुक्य,
दोश त्रु दोह आपदा दूर करोनी॥
(१८)

इच्छानुरूपमऽनुरूपे गुण-प्रकर्षं,
संकर्षिणि ! त्वमनुसृत्य यदा विमर्षि।
जायेत स त्रिभुवनैकगुरुस्तदानीं,
देवः शिवोपि भुवनत्रय सूत्रधारः ॥१९॥

ہی سنکرشنی پنہٕ نے یڑھایے
ییلہٕ چھکھ ترگوٗن سوٗروٗپ پانہٕ داران
تیلہٕ ہی دلوی ترٕن لوٗکن ہنٛد
کیول گوٗروٗ شیوناتھ چھُو وُپران
اَدٕ سے شوٗمبھوٗ ترٕن لوٗکن ہنٛد
سوٗموٗد پاٹھی سوٗترٕدار بنان

((१९)) ही संकरषणी पनुने यछ़ाये,
यैलि छ़ख त्रगोण स्वरूप पानु दारान।

तैलि ही दीवी त्रन भवनन हुन्द,
केवल गोरु शेवनाथ कु वोपदान।
अद सुय शोम्बू त्रन भवनन हुन्द,
नोमूद पांठ्य सूत्रदार बनान ॥१९॥

—o—

योयं चकास्ति गमनार्णव रत्नमिन्दु-
र्योयं सुराऽसुर गुरुः पुरुषः पुराणः।
यद्वाममऽर्धमिदमऽन्धक सूदनस्य,
देवि! त्वमेव तदिति प्रतिपादयन्ति ॥२०॥

آکاشہ سۆدرس منٛز رٕتن لوٗسہٕ ۓ
شوبا ژٕندرمس چھے اناٗنی ۓ
دِلوَن تہٕ اسرن لُسس گۆرٕ چھُ آسہٕ وُنے
بھگوانس شکھتی لیش دِوٗ آنی ۓ
یُس مہادیوس منٛز چھہ اردٕ انگی سوے
چھکھ ژٕے یہ چھُ ماٗج سیدٕ بانی
((۲۰))

आकाश सोंदरस मंज़ रत्नन योस,
शूबा चंन्दरमस क्युय अनांनी ।
दीवन तु असरन युस गुरु छु आसवुनुय,
भगवानस शक्ती योस दिवांनी।
योस महादीव सुन्ज़ छि अर्दांगनी सोय,
छख च़ुय यि छु मांज स्यद बनांनी ॥
((२०))

—o—

ध्याताऽसि हैमवति ! येन हिमांशुरश्मि-
मालाऽमल ह्युतिर्आत्मष ! मानसेन
तस्याऽविलम्बमऽनवद्यमऽनल्प कल्प;
मऽल्पैर्दिनैः सृजसि सुन्दरि ! वाग्विलासम॥
((२१))

لیُس سوٗرِ چون دٕیان نِرمل کرِ نوٗ سوٗس
ژٕنٛدرمس سمان اَنٛدرِ شوٗدمِنہ کہٕنی
ہی سُنٛدری تس تہٕ جھٹ پٹ کران یادِ
سَرسوٗتی ہُنٛد ولکاس آنو گرِ یتھہ کہنی

((۲۱))

युस सोरि चोन ध्यान न्यरमल किरमव सौरु,
चेन्दरमस समान अंन्दर शोद्दु मनु किन्य,
ही सोन्दरी तस च़ु जह पट करान पांदु,
सरस्वती हुन्द न्यकास अनुग्रेह किन्य।
((21))

त्वां व्यापिनीति सुमना इति कुण्डलीति,
त्वां कामिनीति कमलेति कलावतीति ।
त्वां मालिनीति ललितेत्यऽपराजितेति,
देवि! स्तुवन्ति विजयेति जयेत्युमेति ॥
((२२))

ساری سے وآتھ ژ کامنا دائک
لچھمی، کلا، بیٔیہ مالا روٗپ
دشمنس پیٹھ زیہ سوٗس ژے للتا
چھی وَنان ژیے زیا ژیے ووما روٗپ ((۲۲))

सांयसुय वांतिथ च़ु कामना दायक ,
लंछमी, कला, बैयि माला रूप ।
दुश्मनस प्यठ ज़यि सौस च़ुय ललिता,
छी वनान चेय जया चेय वोमा रूप ॥
((22))

उद्दाम काम परमार्थ सरोज षण्ड-
चण्ड द्युति द्युतिमुपासित षट् प्रकाराम्।
मोह द्विपेन्द्र कदनोद्यत बोधसिंह-
लीला गुहां भगवतीं त्रिपुरां नमामि ॥
॥ २३ ॥

یوسہ کامراجہ بیزاکھر پمپوش ڈلہ کے
پھولنہ باپتھ سریہ سیر روپہ رۄزانی
موٗلادارس پیٹھ شٹکون منز
وو پاسی روٗپہ یوسہ تتہ آسانی
یوسہ شہ ہمی تس گالیتہ باپتھ ،
گیانہ روٗپہ ستہ گوچھ چھ رۄزانی
تمی سے تیگٗوٗی ماتا تروپرایہ کن
گلگنڈ تس چھس پرنام کرانی

॥२३॥ योसु कामराजि बीज़ाक्षर परपोश डलुके,
फोलुनु बापथ सिर्यसि रूप रोज़ानी।

मलाधार प्यठ षठ चक्रस मन्ज़,
चौपासी रूप युस तति आसांनी।
योसु मुह हेस्यतिख गालुन बापथ,
ज्ञानु रूपु सुह गोफि छि रोज़ांनी॥
तम्यसुय भगवती माता त्रोपरायि कुन,
गुल्य गंन्डिथ तस छुस प्रणाम करांनी॥
((२३))

गणेश वटुकस्तुतारति सहाय कामास्मिता,
स्मरारिवर विषूरा कुसुम बाण बाणैर्युता।
अनङ्ग कुसुमादिभिः परिवृता च सिद्धैस्त्रिभिः,
कदम्बवन मध्यगा त्रिपुर सुन्दरी पातुनः॥
((२४))

گنیش تہٕ بیروٗن چھےٚ توٗتا ژٕ یہ کٔرمژ
زٕتی سان کامدیو ژٕ یہ سیوا کرٕوٗن
شوٗنامتھ پانہٕ چھےٚ آسَن چوٗتےٚ
کامدیو یوشہٕ پانَن سٕہ داروٗن
اَننگہٕ کُسمو بیٚیہٕ ترٕیٚیو سِدٕیو وُچھِتھ
کدمبہٕ جنگلس منٛزٕ روزانی

شُبے رُوپ چھُن ماج ہی ترٛپُور سوٚندری
کلیان مے کرِتھ تمہٕ تہٕ راچھ میٲنی

((२९))

गणेश तु बैरवन छुय तोता चें कस्मुव़,
रेती सान कामदीव च़े सीवा करवुन ।
शिवनाथ पानु छुय आसन चौनुय,
कामदीव पोशि बानन सु दारवुन ॥
अनङ्गु कोसमव बॉयि त्रैयव सॅंदियव च़,
वॅजिमुच़,
कदम्ब, जंगलस मंज़ च़ु रोज़ांनी ॥
सुयरूप चोन मांज ही त्रैपूर सोन्दरी,
कल्याण मे कॅ यितनम तु राछ स्वानी ॥

((२५))

त्वामैन्दवीमिव कला मनु भाल देशे,
मुद्भासिताम्बर तलामऽवलोकयन्त: ।
सद्यो भवानि ! सुधिय: कवयो भवन्ति,
त्वामभावन हित्तधियां कुल कामधेनु: ॥

((२६))

یِم مستکس منٛز ژٕ ژٕندرمہٕ کلا ہش
وُچھ چمکاوی ہیتھ آکاشس سوٚس
ہی دیوی جلدٕے چھی تِم بنان دانا
بییہ بڈِ کوِتایہ سوٚسی
چھکھ تِمن دِوان ژٕرے ساریٚنے مطلبَن
چانہٕ باوناین کنی تِم شرمل لوٚز سوٚس

((۲۸))

यिम मस्तकस मज़ं चै चेन्दरमु कला हिश,
वुछ चमकांव्य मुत्य आकाशि सोंस ।
ही दीवी जल्दुय छी तिम बनान दाना,
बेंयि बडि कवितायि सोंस्य ।
छख तिमन दिवान चुय सारिनुय
मतलबन,
चानि बावुनायि किन्य तिम
न्यर्मल छोंज सोंस

(५२...)

उत्तमहेमरुचिरे ! त्रिपुरे ! पुनीहि ,
चेतश्चिरन्तनमऽघौघ वनं लुनीहि ।
कारागृहे निगड बन्धन पीडितस्य,
त्वत्संस्मृतौ झटितिमे निगडास्त्रुटयन्ति॥
॥२६॥

تووُہت سون زَن ژٕ چَمکان ترٛوپرآے
شودکَر مَن مےٚ پاپہٕ کھلہٕ میٲنی لون
سمسارٕ رۄُپی جیلس مَنٛز چھُس بہٕ
کامنایہٕ بیڑٕن ہنٛد ژُھم مےٚ لوٗرٕ
چانہٕ سُمرنہٕ کِنہٕ جلد جلد ژھٕنن مےٚ بیڑٕ
ییلہٕ آسہٕ عارتس مےٚ انُگرہہ چون
॥۲۶॥

तोवमुत सोन ज़न चु चमकान त्रोंपरांय,
शोद कर मन में पापु खिल म्यांन्य लोन।
सन्सारु रूपी जेलस मज़ छुस बे ,
कामनायि बेड्यन हुन्द छुम में वोर ।
चानि सुमरनि किन्य जल्द जल्द छ़्यनन मेंडे ॥
येंलि आसि आंरतुस में अनुग्रेह चोन ॥२६॥

रुद्राणि! विद्रुम मयीं प्रतिमामिव त्वां,
ये चिन्तयन्त्यऽरुणकान्तिमऽनन्य रूपाम।
तानेत्य पक्ष्मलदृशः प्रसभं भजन्ते,
कण्ठाऽवसक्त मृदुबाहु लतास्तरुण्यः॥
॥२७॥

ہی رۄدرانی یُس چانِس سۄرۄپس وُچھ
رۄدر شکلہ سِری بہ سِنْدی پاٹھی چمکان
اپُورو رۄپس یِتھی سے دیان کرِ
سوندر نظرو سۄس اَژھ رُژھ جوان
زور سِتی تمہ گردنہ پیٹھ اَتھ ترٲوی ترٲوی
اَنْدۍ اَنْدۍ رۄزِتھ تَس سیوا کران
((۲۷))

ही रौदरानी युस चानिस सौरूपस वुछि,
रौदर शकलि सिर्यियि सुन्द्य पाठ्य चमका
अपूरव रूपस यिथ्य सुय ध्यान करि
सौन्दर नज़रव सौस अछ् रछ् जवान।
ज़ोर सूत्य तमि गर्दनि प्यठ अथ त्रांव्यत्रा
अंन्द्य अंन्द्य रुज़िथ तस सीवा करान॥
॥ 27 ॥

o

त्वद्रूपमुल्लसित दाडिम पुष्परक्त,
मुद्भावयेन्मदन दैवतक्षरं यः।
तं रूपहीनमऽपि मन्मथ निर्विशेष
माऽलोकयन्त्युरु नितम्ब भरास्तरुण्यः॥
((२८))

یُس چون دیان کرِ دآن پوشہ رنگہ سوس
اوِناشہ کامراجہ بیز اکھرس
یوٚدوے رُوپہ کنہ آسہ سے بدشکل
اَڈہ رٚژہ وچھن زن کامدیوتس
((٢٨))

युस चोन ध्यान करि द्रांन पोशि रंग सोस,
अविनाशि कामराजि बीज़ अक्षरस।
योदवय रूपु किन्य ऑसि सुय
बद शक़ल,
अड्‌ रछ़ वुछन ज़न कामदीव तस॥
((28))

o

त्वद्रूपैक निरूपण प्रणयिता बन्धोदृशो-
स्त्वद्गु
ग्रामाऽकर्णनरागिताश्रवणयो स्त्वत्संस्मृ
श्चेतसि
त्वत्पादार्चन चातुरी करयुगे त्वत्कीर्तनं
वाचि मे,
कुत्राऽपि त्वदुपासन व्यसनिता मे देवि
मा शाम्यतु
(२९)

ہی دلوی چانہ درشنک ابلاش
ہردم تیتھی منز سے روزی تن
چانی گون لوزنک تمناہ سے آسی تن
تہ روزی تن سے اتھ کنن
نامہ شیران زیتس منز سے ترگیہ
چانہ یاد لوزنا سے
چیت کھیرتن کرزہ روز دن سے وای
دوپاسنا چانی گم منتہ سے گرشتی تن (۲۹)

हीदीवी चानि दर्शनुक अबिलाश,
हरदम नैत्रनुय मंज़ मे रछ़लसन ।
चांन्य गोण बोज़नुक तमन्ना मे आस्यतन,
हर दम रुज़्यतन म्यान्यन कनन ॥
चोन नाम सुमरन ह्यतस मंज़ गरि गरि,
चांन्य पादि पूज़ा म्यान्यन अथन ॥
चोन कीर्तन करवुन्य रुज़्यतन मे वानी,
वापासना चांन्य कम मतु मे गंछ़्यतन ॥ (२९)

—— o ——

ब्रह्मेन्द्र रुद्र हरिचन्द्र सहस्त्र रश्मि,
स्कन्द द्विपानन हुताशन वन्दिताये ।
वागीश्वरी ! त्रिभुनेश्वरि ! विश्वमात-
रऽन्तर्बहिश्च कृत संस्थितये नमस्ते ॥३०॥

سرسوتی ژٕ لچھ سوندر زگتہ ماتا
[illegible] شونری جکھ آسوں ژٕ [illegible]
برہما بیندر رودر سریہ ژندرمہ گار
وشنو گنیش چھے پوزان ژےٚ
اندر بیر واتھ ژٕ ترہ لوکس ماتا چھیہ
[illegible] گنگا [illegible] (۳۰)

सरस्वती त्रुपूर सौन्दरी ज़गथ माता,
बवनेश्वरी छुख आसुवुन्य च्युय ।
ब्रह्मा रौदुर यन्दुर सिधियि चंन्दरस, कुमार
वेंकणो गणेश छुय पूज़ान चैय ॥
अंन्दर् नैबरु वांतिथ त्रोबवनस सांर्यसुय,
गुल्य गंन्डिथ न्योन प्रणाम वांलिनय चैंय ॥
((30))

—o—

यः स्तोत्रमेतदऽनुवासरमीश्वरा याः,
श्रेयस्करं पठति वा यदि वा शृणोति ।
तस्यैप्सितं फलति राजभिरीड्यतेऽसौ,
जायते स प्रियतमो हरिणेक्षणानाम् ॥ ३१॥

یُس یہ چون ستوتر پرِتھ دوہسہ لوِ لِسان
بالکُو بُوزاوِ بہٕ اَتھ کُس کَتھ یان
چکرورت راجہ تِس کرِن لوٗ زا +
ساری مطلب تَس چھ نیران
پٔنچ کامنا سپدِ تَس چھ تسیدان
سُے چھ لوگھیٚن ہنٛدِ زیاد لوکھ تنان
((۳۱))

युस यि च़ोन स्तोत्र परि प्रथ दोह लोलु सान,
या अनव बोज़ि अदु बनि तस कल्यान।
चक्रव्रत राजि तस करन पूज़ा,
सारी मतलब तस छि नेरान॥
मनुच कामना स्यद तस छि सपदान,
सुय छु यूगिनियन हुन्द ज़्यादु टोठ बनान॥
((२१))

ॐ नमो महामायायै

((अथ घटस्तवः)) [तीसरा स्तव]

देवि! त्र्यम्बक पत्नि पार्वती सति
त्रैयलोक्य मातः शिवे!
शर्वाणि त्रिपुरे मृडानि वरदे
रुद्राणि कात्यायनि!
भीमे भैरविचण्डि शर्वरि कले! कालक्षये शूलिनि!
त्वत्पाद प्रणतानऽनन्य मनसः पर्याकुलान्पा-
हिनः॥१॥

ہی دیوی چھکھ ژٕ ترمبکہ پتنی
ژٕیے وَنان سَتی ژٕے پاروتی ۔
ترٕلوکی ہُنٛز ماتا بھگوتی
ژٕے وَر دِوان ژٕے چھکھ مرڈانی
ژٕے ترٕپور سوندری ژٕے رودرانی
ژٕے بھیانک روٗپ ژٕے شروری
ژٕے چنڈی ژٕے ترشوٗل دارانی
ژٕے کلہ کالس ناش کرانی ۔
آسے شرن ژٕ پادن وینِی کنی چھ تتھے
دیا کُلتا یہ منٛز اتہٕ رٹچھ ژٕے

ही दीवी छुख च़ु त्र्यम्बकु पत्नी ,
च़ेय वनान संती च़ुय पारवती ।
त्रेयलूकी हुन्ज़ माता भगवती ,
च़ुय वर दिवान च़ुय छुख मृडानी ।
च़ुय त्रपोर सौन्दरी च़ुय रौद्रानी ,
च़ुय भयानक रूप च़ुय शांवरी ।
च़ुय चंण्डी च़ुय त्रशूल धारांनी ,
च़ुय कलि कालस नाश करांनी ।

आय शरण चे पादन ब्यनु किन्य चे नेरुथुय,
व्याकोलतायि मन्ज़ [illegible]

उन्मत्ता इव सग्रहा इव विषव्यासक मूर्छा इव,
प्राप्त प्रौढमदा इवाऽऽसविरह ग्रस्ता इवाऽऽर्ता इव।
ये ध्यायन्ति हि शैलराजतनयां धन्यास्त एकाग्रत-
स्त्योत्कोपाधि विवृद्ध राग मनसो ध्यायन्ति वामभ्रुवः
॥२॥

مہ راہ تہ براہہ سوس زہر کنی مورچھتھ نشہ سوس
ورہن تُرتنی چانہ آرزُر سوس
ہی ہمالہ پُتری یم کرن چون دیان
تم آسہ ونی چھ سپدنھا بہ گیہ وان
اگر رزہ اِکاگر بنتھ اوپاد روس
راگہ سوس تسند دیان چھ داران۔ (آس شرن)

मचुराह तु ग्राह सौस जहर किन्य मुर्छित नशि सौस,
विरहन चेद्यमुत्य चानि ओरज़र सौस।
ही हिमाल पुत्री यिम करन चोन ध्यान,
तिम आस वुन्य छि स्यठा भाग्यवान।
अकु रहु एकाग्र बनिथ उपाधि रोस,
राग सौस तसुन्दुय ध्यान छि दारान॥ (आस शरण)

देवि त्वां सकृदेव यः प्रणमति क्षोणीभृत स्तं
न्त्याऽजन्म स्फुरदङ्घ्रिपीठ विलुठत्कोटी
कोटिच्छट
यस्त्वामऽर्चति ऽर्च्यते सुरगुणैः यः स्तौ
न स्तूयते
यस्त्वां ध्यायति तं स्मरार्ति विधुरा ध्य
यन्ति सिद्धाङ्गना॥

یُس پورُش اَکہ لٹہ کر ژےٚ کُن پرنام
تَسُنز کھاوِ پیٹھ راز مُکٹہ ڈُلوان
یُس پورُش تولہٕ کرِ چانی پوزا
تَس پوشس پوزان دیو کھل
یُس پورُش کران آسہِ چانی توتا
دیوتا تَسنزے اُستوتی کران
یُس پورُش مَنہ کنی کرِ چونے دیان
سوٗرگچہ اَپ٘چھرٕ تَس چھ پوزان۔ (۳)

युस पोरुष अकि लटि करि च़ै कुन प्रणाम,
तसुज़ि ख्रावि प्यठ राज़ मुकट डुलवान।

युस पोरुष लोलु साल करि चांद्र दुग्गा,
तस पोरुषस पूज़न दीवु खिल।
युस पोरुष करान आसि चांनी लीला,
दीवता तसुन्ज़ुय अस्तोती करान।
युस पोरुष मनु किन्य करि चोनुय ध्यान,
सोरमुचि अछ रछ तस छि सुमरान ॥ ३॥
(आय शरण०)

ध्यायन्ति ये क्षणमऽपि त्रिपुरे! हृदि त्वां,
लावण्य यौवन धनैरऽपि विप्रयुक्ता:।
ते विस्फुरन्ति ललितायत लोचनानां,
चित्तैकभित्ति लिखित प्रतिमा: पुमांस:॥४॥

ہی تر پورسندری یُس کر دیان چون
منز منش اکی سے کھینہ ماتر س
لوٗ دوے شہ آسی سوندرتایہ روس
ینیہ جوانی روس بیٹھ نیر دن
انگنیہ یتھ لیدی لس تھے لبہ پیٹھ
تھکلہ کھن لسندے دیان سورن
(آے شرن) ((۴))

ही त्रेपोर् सोन्दरी युस करि ध्यान चोन,
मन्ज़ मनस अंकिसुय क्षणमात्रस !
यौदवय सु आसी सोन्दरतायि रोस,
बैयि जवानी रोस बैयि न्यरधन ।
अष्ट सैंदी तस मनुचे लबि प्यठ,
शाकल् खनन सुय ध्यान सोरन ॥4॥
(आस शरम०)

—०—

एतं किं नु दृशा पिबाम्युत विशाम्यस्याङ्ग-
सङ्गैर्निजैः ,
किं वाऽमुं निगलाम्यऽनेन सहसा किं
वैकतामाऽश्रये !
तस्येत्थं विवशो विकल्पघटनाकूतेन योषिज्जनः
किं तद्यन्न करोति देवि! हृदये यस्य त्वमाऽऽवर्तसे। (५)

یِمِس یوٚر تٕھس کرٕ آ پرٛوٕلیش نظری ستی
اَزٕ ہا اَمی سٕتٕھ دِن وُتٕھ نا نوٚے
کیاہ تٕھ نا ہیٚنگِ گژھِ نا اَمِس ستی
کُنہِ کِنی یا اَتھ ستی رٕٹہِ ہا تن
اَزِ چھ رٔژھ سو نٕدرگر لَٹس کن

بے روک پانٹھی آدین سپیدن
سنسارس منز کیاہ چھ دولیب تس
ہردیس منز لیس زِ پانہٕ پھیرن۔ (۵)

थिथिस पोरुषस करहा प्रवेश नज़री सूत्य,
अचुहा अंम्यसुन्ध्यन बुस्तुखानन ।
क्या सना न्यन्गुलिथ गछ़ुना अंमिस सूत्य,
कुनि किन्य पानस सूत्य रछ़हन ॥
अकु रछ़ सोन्दर गरि गरि तस कुन,
बे रोक पांठ्य आंदीन सपदन ॥
संसारस मंज़ क्या छु दोलब तस,
हृदयस मंज़ यस चु पानु फेरान ॥ (5)

(आदि-शरण)

—०—

विश्व व्यापिनि ! युद्धवीश्वर इति स्थाणावऽनन्या-ऽऽश्रयः
शब्दः शक्तिरिति त्रिलोकजननि ! त्वय्येव तथ्य-स्थितिः ।
इत्थं सत्यपि शक्नुवन्ति यदिमा क्षुद्रा रुजो बाधितुं
त्वद्भक्तानऽपि न क्षिणोषि च रुषा तद्देवि चित्रं महत् ॥६॥

ہی زگتھ وٲپنی چھ شیونا تھٕس
الشر ناوِ زگتس منز و نان

یتھہ پاٹھی ماج بوانی ژےٚ زگتس منز
شکتی ہُنٛد ناو چھےٚ ژےٚ شوبان
یُودوے ایشر بکھتن سمسارس منز
ماج کُنہِ کُنہِ دوکھ چھُو دیوان
آشرٕ چھُو ماج چون کرٕو دس پیٹھ تہٕ چھکھنہ
پنہٕ نین بکھتن دوکھ ژٕ ہاوان ۔ (۶)
(آے شرن)

ही ज़गथ व्यापिनी युथ शेवु नाथस,
ईशर नाव ज़गतस मन्ज़ बनान।
तिथय पांठ्य मांज बवान्य चुय ज़गतस मंज़,
शक्ती हुन्द नाव चुय चे शूबान॥
यौदवय ईशर बख्तयन सम्सारस मंज़,
मांज कुनि कुनि दोख छु दीवान॥
आश्चर छु मांज चोन कूदस प्यठ ति छुखनु,
पनुन्य बख्तयन दोख चु हावान॥ 6॥
—(आ'य शरण०)-

—o—

इन्दोर्मध्यमतां मृगाङ्कःसदृशच्छायां मनोहारिणीं
पाण्डूत्फुल्लसरोरुहासन गतां स्निग्धप्रदीपच्छविम्।
वर्षन्तीमऽमृतं भवानि! भवतीं ध्यायन्ति ये देहिन-

स्तेनिर्मुक्तरुजो भवन्ति विपदः प्रोज्झति तान्दूरतः (१०)

ژٔندٕرمس ہِش صفا ژٔندٕرمہ گژھہ سوٗس

پھوٗلی ہنٛس پھیپوشس ہیٚٹھ ژٕے

خوش یونہٕ پرٛکاشہٕ گژھہ سوٗس ژٕ آسوٕنی

یوسہٕ کران ورشُن امرہِتہٕ کرٕے

یِم یہ دیان کران تِم بیمارٕ روٗس روزان

آپدا چھِ تِمنٕے دوٗر سپدان ((۸))

(آے شرن)

च़ेन्दरमस हिश सफा च़ेन्दरम् गह सोंस,
फौल्य मृतिस पम्पोशस प्यठ च़ुय ।
खोश यिवनि प्रकाशि गह सोंस च़ु आसुवन्द,
योस् करान वरशुन अमर्यत कुय ॥
यिम यि ध्यान करान तिम ब्यमारि रौस रोज़ान:
आपदा कि तिमनुय दूर सपदान ॥(७)॥(आंय शरण)

पूर्णेन्दोः शकलैरिवातिबहुलैः पीयूषपूरैरिव,
क्षीराब्धेर्लहरीभरैरिव सुधा पङ्कस्य पिण्डैरिव ।
प्रालेयैरिव निर्मितं वपुर्ध्यायन्ति ये श्रद्धया,
चित्तान्तर्निहितार्तितापविपदस्ते सम्पदं विभ्रति ॥ (८)

یُس سادَک کرِ دیان چون باسہ وُن

زَنِ ژُول پرکاشہ سوس بجلی سمان

پانژھ دل ژٕٹھے بال سیرِیہ سندِ پانژھ

وو زلہ رنگہ سوسبتے زن ژمکان

رنگ سوُدرس منز پھوٹمت سورے

زگتھ زن رنگہ کُو سورخی سان

یُس یہ دیان کرِ تس یوگنی ژھ منز

تسندے گرِ گرِ دیان چھ داران (۹)

(آدے شرن)

युस सादुक करि ध्यान चोन बासुवुन,
ज्वल प्रकाशि सोस बिजली समान।
पांछ दल चंट्यथुय बाल सिर्यि संद्य पांछ,
बोज़त्ति रंगु सौस्तुय ज़न चमकान॥
रंग सोदरस मन्ज़ फोटमुत सोरुय
[illegible] ज़न रंगु [illegible] [illegible]
युस यि ध्यान करि तस योगिनी छ्यतस मंज़,
तसुन्दुय गरि गरि ध्यान छि दारान॥१॥

—०— (आद्य शरण०)

लाक्षारसस्नापित पङ्कजतन्तु तन्वी,
मऽन्तः स्मृत्यऽनुदिनं भवतीं भवानी।
यस्तं स्मर प्रतिममऽप्रतिमस्वरूपा,
नेत्रोत्पलै मृगदृशो भृशमऽर्चयन्ति ॥१०॥

لاچھ ستی رنگی متھ ممونتھ تابہ ہیو ہ
پرتھ دوہ ییتھ لس دار ہوتے دیان
تس کامدیو زانتھ کمہ لو گنی،
نیتر رنپہ پوشو چھ پوزا کران - (۱۰)
(آے شرن)

लाछि सुत्य रंग्य मुति पम्पोशि तारि ह्युव,
प्रथ दोहं युस दारि चोनुय ध्यान।
तस कामदीव ज़ानिथ कमु यूगिनी,
नैत्र रूपु पोशव द्वि पूज़ा करान ॥ 10 ॥
(आय शरण)

—०—

स्तुमस्त्वां वाच्यमऽव्यक्तां,
हिमकुन्देन्दुरोचिषम।
कदम्बमाला विभ्राणा-
माऽऽपादतललम्बिनीम् ॥ ११ ॥

توتا کران تھی اسی ژے واکھ دیوی
ژندرمس کوند پوشس ہش یوسہ چھے دفتما
شوبہ وِنی کدمبہ مال ماج چھکھ ژداروِنی
تالی چھے ژے شیر سیٹھ پادن تانی
(آے ستزن)

तोता करान छी अस्य च़े वाखदीवी,
च़न्दरमस कोन्दु पोशस हिश यो स छे
दिफ़्ति मान ।
शोबुवुन्य कदम्बु माल मांज छख च़ दारवन्य
तांल्य छय च़े शेरु प्यठ, पादन तान्य ।
—०— (आयशारग)

मूर्ध्नीन्दोः सितपङ्कजासनगतां प्रालेयपाण्डुत्विषं
वर्षन्तीममृतं सरोरुहभुवो वक्त्रेऽपि रन्ध्रेऽपि च।
अच्छिन्नाच मनोहरा च ललिता चाऽपि प्रसन्नाऽपि च,
त्वामेव स्मरतां स्मरारिदयिते! वाक्सर्वतो वल्गति।
॥१२॥

کلس پیٹھ شوبہوُن ژندرمہ تسے وِزامت
پمپوشس پیٹھ ژِ دِفتی سیُڈس

ژٕ چھکھ ژٕ شوبہٕ وِنی ژٕ ہمہٕ رَنٛدرس منٛز
اَمرِتھ ژھٹان بڈٕ شوبایہٕ سوٚس
لیٚس یہٕ دیان کرٕ چوٚن ہی دیوِی لَس
سَرسوٚتی نیرِ مُکھہٕ بڈٕ ولکاسہٕ سوٚس ((۱۲))
(آدے شرن)

कलस प्यठ चन्द्रमु शूबुवुन चे द्रामुत,
पम्पोशास प्यठ चु दिफ्ती सोंस।
बिहिथ छख चु शूबुवुन्य ब्रह्म रोन्द्रस।
अमरुथ छुटान बडि शूबायि सोंस।
युस यि ध्यान करि चोने ही दीवी त
सरस्वती नेरि मोखु बडि व्यकासु सो
—०— -(आद्य शरण) ।।

ददातीष्टान्भोगान्क्षपयति रिपून्हन्ति वि
दहत्याधीन् व्याधीन् शमयति सुखानि प्र
हठादन्तर्दुःखं दलयति पिनष्टि । बिरहं
सकृद्ध्याता देवी किमिव निरवद्यं न कु

مطلب چھکھ دِوان دشمنن ژٕ گالان
آپ سانین چھکھ ژٕ ناشش کران

آدِین زالان وۄاَدِین شۆمراوان
سۆکھ تہٕ سمپدا چھکھ ژٕ ولستاران
اَندریمہ دۄکھ تہٕ دادٕ ترٕیہ وِرہ ژٕ گالان
یم اکہ لٹہ ماج دیان چون کران
تم ادٕکمہ ناپہ نشہ چھی موکلان
یم اکہ لٹہ ماج دیان چون کران -(۱۳)
(آے شُران)

मतलब छुख दिवान दुश्मनन ज़ु गालान,
आपदायन छुख ज़ु नाश करान।
आंदियन ज़ालान व्यांदियन शोमुरावान,
सोख तु सम्पदा छुखु च़ु व्यस्तारान।
अन्दरिम्य दोख तु दांद्य त्रेयि विरह ज़ु गालान,
यिम अकि लटि मांज ध्यान चोन करान।
तिम अदु कमि नु नापु निशि छी मोकलान,
यिम अकि लटि मांज ध्यान चोन करान॥
——०——(आयशुरान) ((13))

यस्त्वां ध्यायति वेत्ति विन्दति जपत्यालोकते
त्यजेत्वां [illegible] चिन्तयते कलयति स्तौत्याश्रयत्यर्चति।

यश्च त्र्यम्कवल्लभे! तव गुणानाऽकर्णयत्यादरा-
तस्य श्रीनं गृहाद्दैति विजयस्तस्याग्रतो-
धावति ॥२४॥

یُس چون کرِ سُمرَن بوٗز ستیٖ یُس زانہٕ
وِدٕیایہ کِنۍ ماج یُس ژےٚ پراوی
شوٗدِ مَنہٕ کِنۍ زپہٕ ناو چون گرِ گرِ
لول نیٚترو ستیٖ کرِ درشن
شرونہٕ کِنۍ منن کِنۍ یُس وِچارِ
ہرِ وقتہٕ لوٗتایہٕ کرِ جاپی ستہٕ لولہٕ زا *
گون گیو جاپی لولہٕ سان دِتھ تہٕ راتھ
تمہٕ بوٗ ستےٚ ایتیٚ نہٕ روزِ اکھ سانتھ *
لچھمی چھےٚ نہٕ نشہِ گرِ لٹھِ نیران
نہٕ ستس پتہٕ ہتھ وقتہٕ برونہٕ چھُ دوران
॥۲۴॥ [(آے شرن)]

युस चोन करि सुमरन बोज़ सत्य युस ज़ानि,
विद्यायि किन्य मांज युस च़ें प्रावी।
शोदि मनु किन्य ज़पि नाव चोन गरि गरि,
लोल नेत्रव सूत्य करि दर्शुन।
श्रवणु किन्य मननु किन्य युस व्यचारि,

हर वक्तु तोतायि चोन्य बैयि पूज़ा ।
गोण मैवि चानी लोलु सान ध्यन तु राथ ।
तसि रोस्तुय रुसन, रोज़ि अख साथ ।
लक्ष्मी छनु तसुन्दि गरि निशिनेरान,
ज़्य तस प्रथ वक्त, क्रोन्ह छु दोरान ॥१८॥
(आद्यशरण)

किं किं दुःखं दनुजदलिनि! क्षीयते न स्मृतायां,
का का कीर्तिः कुलकमलिनि! ख्याप्यते न स्तुता-
यांसु ।
का का सिद्धिः सुरवरनुते! प्राप्यते नार्चितायां,
कं कं योगं त्वयि न चिनुते चित्तमालम्बितायाम् ॥
(१३४)

ہم ستا دوکھ چھ تم ہی دوکھن گالہ وونی
یم گلہ نے نہ چھانہ ستمر نہ ستی
سو سہ چھ نیک نامی ہی سو لس کھار وونی
یلی سہ نہ بنہ چانے تو تابہ ستی
سو سہ سو سہ چھ ستیدی ہی ستید داتری
یو سنہ آفت ستید چانہ لوز آیہ ستی
ستم تم چھ تم لوگ ہا نہ گتت امسا !!!
یم نہ ستید انتی چانہ تنہ نتہ ستی ((۱۸))
(آے ستر لن)

कम सना दोख छि तिम, ही दोखन गालुवुनि,
यिम गलुनय न चानि सुमरनि सत्य ।
कोस छि नक नामी ही कोलस खारवुनि,
योस न बनि चाने तोताथि सत्य ।
कोस कोस छि सैदी ही सैदी दात्री,
योस न प्राप्त सपदि चानि पूज़ायि सत्य।
कम कम छि तिम योग ही जगत अम्बा,
यिम न स्यद वनन चानि दयनतन सत्य॥

—o— (आय शरणि)(१६)

ये देवि! दुर्धरकृतान्त मुखान्तरस्थाः,
ये कालि! कालघन पाश नितान्त बद्धाः ।
ये चण्डि! चण्ड गुरु कल्मष सिन्धु मग्ना
स्तान्पासि मोचयसि तारयसि स्मृतैव ॥२६॥

ہی دیوی یم مہاکالہ سندس کھٹس
موکھس منز باگ کہتھی
ہی کالی یم مہاکالہ سنز منز
رزٕ ژور پاٹھی چھ گنڈٕ نہ آمتی
ہی چنڈی یم بارِیک تہٕ کھٹنس
پاپکس سمندرس منز چھ کھیچی متی

يِلہٕ کرِن دیان حون تیلہٕ ژھکھ رچھان
تمن موکلاوان بیٚیہ تاران زِ بے ۔(۱۶)
(آے شرن)

ही दीवी यिम महाकालु सुन्दिसयकठिनिस,
मोखस मन्ज़ बाग गॅमुत्य ।
ही काली यिम महाकालु सुन्ज़ि मोचि,
रज़ि चूरि पांठ्य छि गन्डनु आमुत्य ।
ही चण्डी यिम बारीक तु कठिनिस,
पापुकिस समन्दरस मन्ज़ छि फंर्य्यमुत्य ।
येलि करन द्यान चोन तेलि छख रछान,
तिमन मोकलावान बेयि तारान च्य ।
—०— (आय शरण) ॥16॥

लक्ष्मी वशी करणचर्ण सहोदराणी,
तत्पाद पङ्कजरजांसि चिरं जयन्ति ।
यानि प्रणाम मिलितानि नृणां ललाटे,
लुम्पन्ति दैव लिखितानि दुरक्षराणि ॥
«२७»
ماج بواٚنی لچھمی وش کرن سیٚتھ

پادٕچ گرد چانٛۍ طاقتہ سۆس
چانِہ پرنامہ وِزِ لگہ یمن للأس
پادٕچ گرد چانٛۍ بڈ نِشانہ سۆس
سوے پادٕچ گرد گالہِ دوٚس الکھہ لس
زگتس منٛز بنہِ سہ جے کارٕ سۆس (۱۷)
(آے شرن)

मॊंज बवांन्य लक्ष्मी वश करनस प्यठ
पादुच गर्द चांन्य ताकतु सोंस।
चानि प्रणामु विज़ि लगि यिमन लल
पादुच गर्द चांन्य बडि निशानु सोंस
सोय पादुच गर्द गालि दोर[illegible]
ज़गतस मंज़ बनि सु जयकार सोंस।

—०—

(ऑद शर[illegible]

रे मूढाः! किमऽयं वृथैव तपसा का[illegible] यः
परिक्लिश्यते
यज्ञैर्वा बहुदक्षिणैः किमितरे रिक्तै[illegible]
गृहाः।
भक्तिश्चेदऽविनाशिनी भगवती पादद्व[illegible]

मुन्निद्राम्बुरुहातपत्र सुभगा लक्ष्मीः
पुरो धावते ॥२८॥

ہی موڈ کیاز چھکھ بے فایدٕ تپہٕ کٔرِ
پننس شریرس تکلیف دِوان
یگنہٕ کرِ دانہٕ کرِ بجہٕ دکھنایہ کرِ
کیاز چھکھ گرٕ پنن خالی کران
گرٕ شرن ماجہ شارکایہ پراو بکھتی
ہے کرن تسندے پادِ سیون
اُدھولی منتہ سمپوشہ نیترٕ سوس
گژھی پروتھ پروتھ ہیی دورن - (۱۸)
(آسے شرن)

ही मूडु क्याज़ि छुख बे फायदु तपु किन्य,
पनुनिस शरीरस तकलीफ दिवान ।
यज्ञ किन्य, दानु किन्य, बजि दखिनायि किन्य,
क्याज़ि छुख गर पनुन खाली करान ।
गछ़ शरण च माजि शारिकायि प्राव बखती,
हे करुन तसुन्दुय पादि सेवन ।
अदु फोलि मुति परपोशि नेत्रव सोंस,

लंछमी ब्रोंठ ब्रोंठ हैंयी दोरुण ॥१८॥

—०— —(आय शरण०)

याचे न कंचन न कंचन वञ्चयामि,
सेवे न कंचन निरस्तसमस्त दैन्यः।
श्लक्ष्णं वसे मधुरमद्मि भजे वरस्त्री-,
दैवि ! हृदि स्फुरति मे कुलकामधेनुः ॥१९॥

کانْسہ منگُن بیِیہ کانْسہ تارِنہ بازِی
عارِژن ترٲوِ کرُن کانْسہ سیوا
ژانوِلی وستُر دار کھیسہ مۄدُری چیز
ازہ دزِہ تے سیتی کر کھیلا
ییلہ آج ہوائی ہردیس منز شۓ روزِکھ
تیلہ میانہ کامنا یہ ستید سیدن (۱۹)
(آے شرن)

कांसि मंगुन बैयि कांसि तार नु बोज़्य,
आरुचर त्रावु करनु कांसि सेवा।
ज़ांवित्य वस्तुर दार ख्यसु मौदुर्य चीज़,
अवु रछनुय सुहय कर खेला।

यैलि मांज बवान्य हृदयस मंज़ में रोज़ख,
तैलि म्यानि कामुनायि स्यद सपदन ॥19॥
—०— (आय शरण०)

शब्द ब्रह्ममयि ! स्वेच्छे ! देवि! त्रिपुर सुन्दरि,
यथा शक्ति जपं पूजां गृहाण परमेश्वरी ॥२०॥

ہی شبد روٗپی نِیرمل سوٗروٗپی
ہی دیوی ہی تِرپور سوندری
کر یتھا شکتی مےٚ چانٛی پوٗزا
کر سوٗیکار ہی پرمیشوٗری – (۲۰)
(آے شرن)

ही शब्द रूपी न्यरमल स्वरूपी,
ही दीवी ही त्रिपोर सोन्दरी ।
कर यथा शक्ती में चान्य पूज़ा,
कर स्वीकार ही परमीश्वरी ॥20॥
—०— (आय शरण०)

नन्दन्तु साधकाः सर्वे विनश्यन्तु विदूषकाः,
अवस्था शाम्भवी मेऽस्तु प्रसन्नोऽस्तु गुरुः सदा ॥२२॥

روٗزِن تِ سوٗکھی ماج سادک ساری

یم دوشٹ آسن تم گلی تن
شِو روُپ اوستھا مےٚ تہ مانز بنٛی تن
گور دیو سدا مےٚ پیٹھ پرسن روزی تن (۳)
(آےشرن)

रूज़्यतन सोरखी मांज साद्‌क सारी,
यि म दोष्ट आसन तिम गल्य तन।
शिवरूप अवस्था मैं ति मांज बन्य तन,
गोर दीव सदा मैं प्यठ प्रसन्न रूज़्यतन॥
(आयशरण)

दर्शनात्पापशमनी जपान्मृत्यु विनाशनी।
पूजिता दुःखदुर्भाग्य हरा त्रिपूर सुन्दरी॥

چانہِ درشنہٕ پاپ ساری چھِ گلان
چانہِ ژَپہٕ مرتیُو چھُ ناش سپدان
پوزایہٕ کِنی جُن مہا گیوہٕ کِنی
زٕپوس دوکھ تہٕ دوربھاگیہ دور سپدان (۳)
(آےشرن)

चानि दर्शनु पाप सारी छि गलान,
चानि ज़पु मृत्यू छु नाश सपदान।

पूज़ायि . किन्य चोन महिमा [illegible]
ज़ीवस दोख त्, दोर् बाग्य दूर सपद [illegible]

—०— (आद्य श [illegible])

नमामि यामनी नाथलेखालङ्कृत कुन्तलाम्।
भवानी भवसन्ताप निर्वापन सुधा-नदीम्॥ (२२)

نمسکار چھس کران ییمِس کیشس منز ژے
ژندرمہ پزلان راتس دِن
سمسار دوکھن چھکھ نواران ژے
امرتہ ندی ہنز پرواہہ ستی زن
(آدی شنکر)

नमस्कार छुस करान येमिस केशस मंज़
चन्दरमु प्रज़लान रात्रो द्यन ॥
सम्सार् दोखन छुख न्यवारान [illegible]
अमर्यत् नदी हन्दि प्रवाह, सूर [illegible]

=०= (आदि शंकर)

मन्त्र हीनं क्रिया हीनं विधिहीनं च यत्कृतम्।
त्वया तत्क्षम्यतां देवि! कृपया परमेश्वरि॥ (२३)

منتر ہین آسنہٕ کر یا ہین آسنہٕ
وِدی ہین آسنہٕ یہ کیٚنژھا پرووم

تھہ ساریسے ہی پرمیشوری،
ژے کرپایہ کِنہ عارتس منز آج بخشم (۲۴)
(آیس شرن)

मन्त्र हीन आंसिथ, क्रियाहीन आंसिथ।
विदि हीन आंसिथ, यि केंछा प्रोवुम॥
तथ सारिसय ही परमीश्वरी।
च़ुय कृपायि किन्य आर्तिस मे मांज
आय शरण चै पादन विनदि ... बखशुं
... यिकें नुतायि मंज़ असि रछत, च़ुय ॥(24

ॐ

अथ अम्बास्तव

(चौथा स्तव)

ॐ नमो जगदम्बिकायै।

ॐ यामाऽऽमनन्ति मुनयः प्रकृतिं पुराणीं
विद्येति यां श्रुतिरहस्यविदो वदन्ति।
तामर्धपल्लवितशंकररूपमुद्रां,
देवीमनन्यशरणः शरणं प्रपद्ये॥१॥

یس منیشر آدِ پرکرتی مانان ،
یس وَنان وِدیا وید رہسیہ زانہِ وُنی
تس شِوناتھ سنتز اَردانگی لوسیہ
شوبایہ سوٚس زگتس چھ رٔچھ وُنی
تس آموت بہٕ ایکاگر ژیتھ بنتھ
چھس پیوان تس پادن پیٹھ پرن - (۱)

यस मुनीश्वर आदि प्रकृती मानान,
यस वनान विद्या वेद रहस्य ज़ानुवुन।
तस शिवनाथु सन्ज़ अर्धाङ्गी योसु,
शूबायि सोस ज़गतस छि रछिवुन्य ॥
तस आमुत बे एकागर च्यथ बनिथ,
छुस प्यवान तस पादन प्यठ परन ॥१॥

—०—

अम्ब! स्तवेषु तव तावद्ऽकर्तृकाणि-
कुराठी भवन्ति वचसामऽपि गुम्फनानि।
डिम्बस्य मे स्तुतिरऽसावऽसमञ्जसाऽपि-
वात्सल्य निघ्न हृदयां भवतीं धिनोति॥
- (२)

ہی ماتا چانئ توتا کرنس پیٹھ
برہما وانی تہ جڑ بنانئی
ہمے شُری سُنز یہ توتا یودچھ ٹوٹ پھٹے۔
باوِنایہ کِنئ ہردیس تہٕ سوکھ دِوانی۔ (۲)

ही माता चॊन्य तोता करनस प्यठ,
ब्रह्मा वांनी ति जड़ बनांनी ।
में शुर्यसुन्ज़ यि तोता योद छि टॊट फुट्य,
बावुनायि किन्य हृदयस तु सोख दिवांनी।
(२)

—o—

ओमेति बिन्दुरिति नाद इतीन्दुरेखा,
रूपेति वाग्भवतनूरिति मातृकेति ।
निःष्यन्दमान सुखबोध सुधा स्वरूपा,
विद्योतसे मनसि भाग्यवतां जनानाम ॥३॥

چِداکاشہ رۄپہٕ کِنۍ ناد بِنۍد رۄپہٕ کِنۍ
ژنٛدرمہ کلا ہِش چھۍ ژٕ پرزلان
وآنی ہُنٛد شَبد رۄپہٕ چون چھُ آمہ وون
سوکھ تہٕ گیان امرِتھ ژٕ بیٚے لسٕہ تیران
چِکان چھکھ تَس منز ... ژٕ دیلِنۍ
زٕ گتہٕ تَس منز ... باگیہٕ وان ۔ ۳

चिदाकाश रूप किन्य नाद बिन्दरूपु किन्य,
चन्दरस कला हिश ब्बख चु प्रज़लान ।
वांणी हुन्द शब्द रूप चोन छु आसुवुन,
सोख तु ज्ञान अस्थतु चैय निश नेरान॥
चमकान छख तस मंज़ मनस चु पानय,
ज़गतस मन्ज़ आखि बुख बाग्यवान ॥३॥

—o—

आविर्भवत्पुलक संततिभिः शरीरै-
र्निष्यन्दमान सलिलैर्नयनैश्च नित्यम् ।
वाग्भिश्च गद्गदपदाभिरुपासते ये,
पादौ तवाम्ब! भुवनेषु त एव धन्याः॥४॥

آسن لیس لم وو چھوٗنہ شریرس
اوش آسس نیترو نیران
واک نی پیر کنی گژھ گژھو
پادن ژےٚ آسہ لیس لوٗزا کران
تس ہیوٚ کس ستا چھ ترلوکی منز
ترٚن بوٗنن منز چھ باگیہ وان -(۴)

आसन यस रूम वोथुथुनि शरीरस,
ओश आख्यस नैत्रव नेरान ।

वांणी किन्य पद परि गित्य गंछ्य गंछ्य,
पादन च़ै आसि युस पूज़ा करान।
तस ह्युव कुस सना छु त्रैयलूकी मन्ज़,
त्रन बवुनन मन्ज़ सुय छु भाग्यवान॥4॥

—०—

वक्त्रं यदुद्यतमऽभिष्टुतये भवत्या-
स्तुभ्यं नमो यदऽपि देवि! शिरः करोति।
चेतश्च यत्त्वयि परायणमऽम्ब! तानि
कस्याऽपि केऽपि भवन्ति तपोविशेषैः॥५॥

مۄکھ لیس آسہ وُدلوگ ستوتس
ہے ماجہ چانی ستوتا کرنس پیٹھ
شیر لیس یُس آسہ گرہ گرہ ہی ماج!
تۄہِ کُن نمسکار کرنس پیٹھ
مَن لیس لۄگمُت آسہ ماج تۄہِ کُن
سُمرن کرِ حیون راتس دۄن
آسہ کانہہ ستہ باگیہ وان کُمہ تانی خاص تپہ کے
پوٗن کنی روزہ گرگرہ ژہیہ شرن
(۵)

मोख यस आसिय वुछुमु सोंस ही मांज,
चांन्य तोता करनस प्यठ ।
शेर यसुन्दुय आसि गरि गरि ही मांज,
च़ेंय कुन नमस्कार करनस प्यठ ॥
मन यस्य लोगमुत आसि मांज चेंय कुन,
सुमरन करि चोन रात्रो द्यन ।
आसि कांह सु बाग्यवान कमि तान्य खास तर्फे,
पोंणि किन्य रोज़ि गरि गरि च़ेंय करान ॥
(5)

—०—

मूलालबाल कुहरादुदिता भवानि !
निर्भिद्य षट्सरसिजानि तडिल्लतेव ।
भूयोऽपि तत्र विशसि ध्रुवमण्डलेन्दु-
निःष्यन्दमान परमाऽमृत तोय रूपा ॥६॥

مولاداریکہٕ درٕامنٕز وُتھِتھ پھیپُوش ژٕ یِتھ
بجلی ہشِہ دی یاشٹھی ہیٚوُ رِ کِن کھسان
شہسر دٔ لہ سے منٛز اُرِتھ تو رٕ نیران
امرتہٕ واتنی رٕوپہٕ بوٗن چھِہ واتان
(5) —

मूलादार् निश्चि द्रामुत्र थंर शै पम्पोशचृति
बिजली हुन्द्य पाठ्य ह्योर कुन खसान।
संहस्र डलुसुय मंज़ अंचि़य तोर नेरान,
अमरतु वान्य रूपु बोन बेंयि ह्वि वसान।
—०— -(6)

दग्धं यदा मदनमेकमऽनेकधा ते,
मुग्धः कटाक्ष विधिरऽङ्कुरयां चकार।
धत्ते तदा प्रभृति देवि! ललाट नेत्रं,
सत्यं ह्रियेव मुकुलीकृतमिन्दुमौलिः॥

(८) -

येलि ज़ोल कामदीव अख शीव नाथन,
कि कटाक्षि तिथ्य कृत्य वोपदांविथ,
[illegible] महादीव मंज़ ललाटुस [illegible]
[illegible] न्य ओंडुय नेचुर हु मुकुरांविथ
(7)

अज्ञात संभवमऽनाकलिताऽन्ववायं,
भिक्षुं कपालिनमऽवास समऽद्वितीयम्।
पूर्वं करग्रहण मङ्गलतो भवत्याः
शम्भुं क एव बुबुधे गिरिराजकन्ये ॥ ८॥

نَہ زانِنۍ زَنم یُس کولہ سوس بِکھیو
ننگے تہ دوٚیمہ روٚس تُھنتھ کلہ مال
چانہِ ولوانہ ہیرو نِھ ہی ہِمالہ پُتری
کُس اوس زانان شیوٕ سُندٕ حال ((۸))

नंज़ांन्यमुति ज़न्म युस कोलु सोंस बिछू,
नन्गय तु द्वोयमि रोस छुनिथ कलुमाल।
चानि व्यवाह ब्रोंठ ही हिमालु पुत्री,
कुस ओस ज़ानान शीवु सुन्द हाल ॥
((8))

—०—

चर्माम्बरं च शवभस्म विलेपनं च,
भिक्षाटनं च नटनं च परेत भूमौ।
वेतालसंहति परिग्रहता च शम्भोः,
शोभां बिभर्ति गिरिजे! तव सहचर्यात् ॥
(९)

چرم پوشاک شمشان بسما ملتھ
نژران شمشانن پتھ بیکھ منگہ وُن
بوت کھِلہ پرِوار آسہ وُن تس شِوس
شُوبان تیٖلہ ییٖلہ زیپتی چھُپکہ وُن (۹)

चरम पोशाक शुमशान बस्मा मॊलिथ,
नच़ान शुमशानन सु बीख मन्गुवुन ।
बूत खिलु परिवार आसुवुन तस शिवस,
शुबान तैलि यैलि ज़ैय सूर्य कुपकुवुन । (९)

कल्पोप संहरण केलिषु पण्डितानि,
चण्डानि खण्डपरिशोरऽपि ताण्डवानि ।
आलोकनेन तव कोमलितानि मातः,
लस्यात्मना परिणमन्ति जगद्विभूत्यै ॥१

کلپانتک ناش نژر ناہ پتہ گنڈ تاہ
تس مہادیوس زِ چھ پتۂ کرسیٖدا
ہیٚے تہ لان سمیدان شر
پیچھ نژراوان تہ تتھ تشوب لوکراہ (۱۰)

कल्पान्तुक नाश नऺरनाह तु गिन्दुनाह,
तस महादीवु संज़ कि वंड क्रीड़ा
सोरुय लु बदुलान सम्पदायन मंज़,
थैलि नावान तथ चु शोब नक्षराह ॥
— (१०)

जन्तोरपश्चिमतनोः सतिकर्मसाम्ये,
निःशेष पाश पटलच्छिदुरा निमेषात्।
कल्याणि! दैशिक कटाक्ष समाश्रयेण,
कारुण्यतो भवसि शाम्भव वेद दीक्षा ॥११॥

زُوِس کرِن سَیدٕ شۆدی ہے ہے ہے
اَکِ تِہِنْز کھالِتھ سِزٕ لٔسِ تہٕ گالان
تہٕ پھُکہ تَوٕ یاپہٕ کِنۍ گوٗر رۄپہٕ ووُنِتھ تَس
شیوٕ شکتی دِکشا ووپدیش کران ۔

(११) ज़ीवस कर्मन सपदिथ शोंदी,
अकि निमीशि फांसि समूह तस कुं गालान,
चुय करुण दयायि किन्य गोर् रूप् वंनिथ तस,
शिवशक्ती दीक्षा वोपदीश करान ॥११॥

मुक्ता विभूषणवती नवविद्रुमाभा,
याच्येतसि स्फुरसि तारकितेव सन्ध्या।
एकः स एव भुवन त्रय सुन्दरीणां,
कन्दर्पतां व्रजति पञ्चशरीं विनापि ॥१२॥

سوختہ مالہ زیور روّد مالہ ژھنی ژھنی
آسوٗنی چھکھ ژ آج ستھ پاسان ے
یُس پوٗرُش آسہ سندیا تارکو سۆس
چون سۆروٗپ ییتھ ہیوٗ تس باسان
تس پوٗرشس ترِلوکیہ یوگنیہ
پانژ کانہ روّستی کامدیو شمران۔ (۱۲)

मोरुत् मालु ज़ेवर रौद्र मालु छुन्य छुन्य,
आसुवुन्य छख च्रु मांज शूबायिमान।
युस पोरुष आसि सन्ध्या तार् कव सोंस,
चोन सोरूप युथ ह्यव तस बासान,
तस पोरुषास त्रिबवनुचि युगिनीयि,
पांचि कानि रौस्ती कामदीव सुमरान॥

—०—

—(१२)—

ये भावयन्त्यऽमृतवाहिभिरंशुजालै-
राप्यायमान भुवनामऽमृतेश्वरी त्वाम् ।
ते लङ्घयन्ति ननु मातरऽलङ्घनीयां,
ब्रह्मादिभिः सुर वैरैरऽपि कालकक्षाम् ॥१३॥

ہی ماتا یِم ژٕے سورِ وِنی آسن
اَمرتہٕ رۄپہٕ سوکھ دِوان تِمن بوَن
تِم کرَان کالہٕ مرٛیادایہ اَلٕو
یِتھ تٔرن کٔشٹٕھ برٛہمادِکن تہٕ دیوَن (۱۳)

ही माता यिम च्नै सोरवुन्य आसन,
अमरथतु रूपु सोख दिवान त्रन भवनन।
तिम करान कालु मर्यादायि अपोर,
यथ तरुन कठ्युन ब्रह्मादिकन तु दीवन॥
(१३)

—o—

यः स्फाटिकाक्ष गुण पुस्तक कुण्डिकाढ्यां,
व्यारव्या समुद्यत करा शरदिन्दु शुभ्राम् ।
पद्मासनां च हृदये भवतीमुपास्ते,
मातः! स विश्वकवितार्किक चक्रवर्ती॥
—(१४)

سٹکچ زپمال اکہ اتھ دآرتھ ژ
پوستک کمنڈل بییہ دوین اتھن
ویاکھیانس پٹھ بیاکھ اتھ چھُ لوگمت
ژندرمس ہیُو پوشژن ژے آسن
لیُس یتھ دیان کرِ چون ماج منز منس
کوسۍ ہُند ژکرو اُتھان بنیہ جگتس

(؟)

सटकुच ज़पुमाल अकि अथु दारिथ च़,
पौस्तक कमंडल बैयि ज़ोन अथन ।
व्याख्यानस प्यठ ब्याख अथु छु लोगमुत,
च़न्दरमस ह्युव पोश्राज़न च़ै आसन।
युस चुथ ध्यान करि चोन मांज मंज़ मनस
कंब्यथन हुन्द चंकुनत बनान सु जगतस
(14)

—o—

बर्हिवतं स युत बंबर वेणु पाशां,
गुंजावली कृतगनस्तनहारि शोभाम् ।
श्यामां प्रवाल वदनां सुकुमार हस्तां,
तामेव नौमि शबरीं शबरैन्द्य जायाम् ॥

موریکھ مکٹہ سوٗس تہٕ چمکوُنہ کیشہ سوٗس ✤
رٕتہٕ فلہ ہار سوٗس تہٕ شوٗبایمان
چمکوُنہ موریکھ سوٗس تہٕ کومل اتھوٗ سوٗس تہٕ
ستھی شکار بایہٕ روٗپس بہٕ پرنام کران۔
(۱۵)

मोर् पखि मुकट् सौस चु चमकुवनि केशि सौस,
रत् फलि हार् सौस चु शूबायिमान ।
चमुकुवनि मोरख् सौस तु कोमल अथव सौस चु
संथ्य शिकारबायि रूपस वं प्रणाम करान् ॥
—०— —(15)

अर्धेन किं नवलता ललितेन मुग्धे,
क्रीतं विभोः परुषमर्धमिदं त्वयेति ।
आलीजनस्य परिहास वचांसि मन्ये,
मन्दस्मितेन तव देवि! जडी भवन्ति ॥
(१६)

ہی ہیاسی ندری چھکھ ژےٚ آسوٗن
کتھ ہرن سوندر نو تھٕ کرن
کیا ہٕ تھٕ تھقن موہلہ نیتھ ہیو ساتی

یِسُ سخت ہیو کٹھور شیو چھُ آسہ وُن
ویسَن ہندِ اتھ ہاسہ لُور وَکھ وَرَن
چانہِ کم اَستہِ سیٹھ تُھ ٹھیم بَن — (۱۵)

ही महासौन्दरी कुख च़्य आसवुन्य,
मनोहर तु सौन्दर नेव थ्वर ज़न।
क्याज़ि ह्यौतथन मोल युथ ह्यव सामी,
युस सख़्त बैयि कठोर शीव हु आसवुन।
व्यसन हुन्दि अथ हासि पूर्वक वच़न,
चानि कम असान सूत्य मूड छि तिम वन्न।
—०— —(16)

ब्रह्माण्ड बुद्बुद कदम्बक संकुलोऽयं,
मायोदधिर्विविध दुःख तरङ्ग मालः।
आश्चर्यमम्ब झटिति प्रलयं प्रयाति,
त्वद् ध्यान सन्तति महावडवा मुखाग्नौ॥
(१७)

یِہ برہمانڈ بُنبر کَھلہٕ بریتھ یہ بایا سوٗدر
دوکھہ لہرِ وَستی بُریتھ آسہ وُن

آسِتھرِ چھُی تاج ناشَس چھُ واتان

چون دیان اَتھ کیتھ چھُ واڈو واگُن (۱۷)

ब्रह्माण्ड बुनर खिल बंरिथ यि माया सोंदुर,

बोरूद लहरव सूत्य बंरिथ आसुबुन।

आश्वर छुही मोज नाशास छु वातान,

चोनं ध्यान अथ क्युत छु वाडवा अंगुन।

(17)

दाक्षायणीति कुटिलेति गुहारणीति,

कात्यायनीति कमलेति कलावतीति।

एका सती भगवती परमार्थतोऽपि,

संदृश्यसे बहुविधा ननु नर्तकीव ॥१८॥

دکھ بتری تھے مولادار واسنی

ہرتھ گو بھایہ منتر چھکھ تھ روزانی

سمانشانیی تھے لیکھی تھے بیتھ

چھکھ کلاوتی تہ تھے بھگوتی

چھکھ تے آستھ ہا تاج بھوانی

لبتھ چھکھ یوان بہو روپ نترانی (۱۸)

दक्षि पुत्री छुय मूलाधार वासिनी,
हथ गोफायि मंज़ छुख च़ु रेज़ांनी।
कान्त्यायेनी छुय लक्ष्मी छुय वैयि,
छख कलावती छुय तु छुय भगवती॥
छख कुनी आसिथ ही मांज भवांनी,
लबनु छुख यिवान बहु रूपु नच़ांनी॥

—०— ——(१८)

आनन्द, लक्षणमनाहत नाम्नि देशे,
नादात्मना परिणतं तव रूपमीशे।
प्रत्यङ्‌मुखेन मनसा परिचीयमानं,
शंसन्ति नेत्र सलिलैः पुलकैश्च धन्याः॥
(१६)

آنندٕ روٗپی ہتھ زٕکرس منز
ناد روٗپہ بنتھ لٔبس چھے دیان
اَبیاسہ کِنی اَنتر موکھ بنتھ
(۱۹). اَتھ سوٗس کرِدیان سے چھُ باگیہ وان

आनन्दु रूपी हथ च़ेकरस मन्ज़,
नादु रूपु लनि यस चोनुय ध्यान।

अभ्यास किन्य अन्तर मोख़ु मनु छ्रिन्य,
अशि सौंस करि ध्यान सुय छु बागवान।
—०—
२९)

त्वं चन्द्रिका शशिनि तिग्मरुचौ रुचिस्त्वं,
त्वं चेतनासि पुरुषे पवने बलं त्वम्।
त्वं स्वादुतासि सलिले शिखिनी त्वमूष्मा,
निःसारमेव निखिलं त्वदृते यदि स्यात्॥
—(२०)

ژےٚ چھکھ ماج بوٲنۍ ژنٛدرمس روشنی
ژےٚ سِریس دفتی آسان
ژےٚ چھکھ چیتنی پورشس آسہ وٕنۍ
ژےٚ پوَنس منٛز بل باسان
ژےٚ سماد پانس گنٛس شکتی
ژےٚ یۆس ژلت نیٚ سار چھے روزان —(۲۰)

च़ुय छुख मांज बवांन्य चंद्रमस रोशनी,
च़ुय सिर्ययस दिफ्ती आसान।
च़ुय छुख चैतन्य पोरुषस आसुवुन्य,
च़ुय पवनस मन्ज़ बल बासान॥

द पांसिस
स ज़गत निः

—o—

ज्योतींषि यद्दिवि चरन्ति यदन्तरिक्षं,
सूते पयांसि यदहिर्धरणीं च धत्ते।
यद्वाति वायुरऽनलो यदुदर्चिराऽस्ते,
तत्सर्वमम्ब! तव केवलमाज्ञयैव ॥ २१॥

ہی ماتا سِرۍ یِم زٗندرمہ تارکھ ،
آکاشس پٕٹھ یِم پرکاش دِوان
شیشناگ یُس کُل پرتھوی داران
میگھ یِم رُد زگتس تراوان
وایُو چھِ پھیران اُگن چھُ زوتان
تِم ساری چھانہٕ حکمہ ستی چلان ۔ (۲۱)

ही माता सिर्यँयि चंन्दरमु तारख,
आकाशस प्यठ यिम प्रकाश दिवान
शीशनाग युस कुल पृथ्वी दारान,
मेघ यिम रुद ज़गतस त्रावान ॥

वायू फेरान अंगून छु ज़ोतान,
तिम सारी चानि हुकमु सत्य चलान॥
(२१)

सङ्कोचमिच्छसि यदा गिरिजे तदानीं,
वाक् तर्कयो स्त्वमऽसि भूमिरनाम रूपा।
यद्वाविकासमुपयाति यदा तदानीं,
त्वन्नामरूपगणनाः सुकरी भवन्ति ॥२२॥

سنکوٗژ یژھا ییلہٕ چھے ژٕ سپدان
تیلہٕ ژٕ مآج مَن تہٕ بوٗد نیر وکار بنان
ییلہٕ وکاسس یوان چھکھ ژٕ ہی گرجے
تیلہٕ چانی نام روٗپ نتہٕ چھِ نیران (۲۲)

संकूच यछा येलि छय चे सपदान,
तेलि चे मांज मन तु बोद्ध न्यर व्यकार बुनान॥
येलि व्यकासस यिवान छख चु ही गिरिजी,
तेलि चान्य नाम रूप नेन्य छि नेरान॥
(22)

भोगाय देवि भवतीं कृतिनः प्रणम्य,
भ्रूकिङ्करी कृत सरोज गृहाः सहस्राः।

चिन्तामणि प्रचय कल्पित-केलि शैले,
कल्पद्रुमो पवन एव चिरं रमन्ते ॥२३॥

ہی دیوی سو کھہ باپت بأگیہ وان
ییلہ ژٕ نے پھی تم پرنام کران
تیلہ چانہٕ بمبہ حرکٕژ تمن لچھمی سٕتہ
ساسہ بٕر ایشوری چھ روزانی
چنتامنی رتنگ سمٕوہ بناوی متس
کھیلہ ہندس پہاڑس پیٹھ تم کھیلانی
کلپہ ورکھیہ ستو سنٛتو بری متین باغن
منز تم ییژکال چھی پھیرانی (۲۳)

ही दीवी सोखुबापथ बाग्यवान,
यैलि चै की तिम प्रणाम करान।
तैलि चानि बुम्ब हरकॅच तिमन लक्ष्मी तु
सासु बज़ ऐश्वर[illegible] ज़ांनी।
[illegible]तामणी रत्नुक समुह बनांव्यमुतिस
खेलि हुन्दिस पहाडस प्यठ तिम खेलांनी।
कल्प वृक्ष सोंस्त्यव बंयमुत्यन बागन,
मंज़ तिम यंचकाल की फेरांनी॥ २३॥

हन्तुं त्वमेव भवसि त्वदधीनमीशो,
संसार तापमऽखिलं दयया पशुनाम्।
वैकर्तनी किरण संहतिरेव शक्तया,
धर्मं निजं शमयितुं निजयैव वृष्टया ॥२४॥

ہی ماج زٔلوس سۄسار دوکھ ساری
چھیہس ژٕے ناش کران دیایہِ کِنی
دوکھن ہُنٛد ناش ژٔیے ماتحت چھُ آسون
دوکھ نیورتی چھی ژٔیے اَدیٖن
یتھٕ پانٕچھ سِری بہ چھٕے تیٚہٕ گرمی
شومراوان تیٚہٕ ورشہٕ کِنی (۲۴)

ही मांज ज़ीवस संसार दोख सारी;
छिहस च़ुय नाश करान दयायि किन्य।
दोखन हुन्द नाश चेय मातहत छुआसुन,
दोख न्यवृति छी चेय आंधीन।
यिथु पांठ्य सिर्यसि छुय पनुनी गर्मी,
शोमरावान पनुनि वर्षनु किन्य ॥२४॥

—०—

शक्तिः शरीरमऽधिदैवतमन्तरात्मा,
ज्ञानं क्रिया करणमानस जालमिच्छा।

ऐश्वर्यमायतनमावरणानि च त्वं,
किं तन्नयद्भवसि देवि ! शशाङ्कमौलेः ॥२५॥

شٔریر ژٕے آسوٗنۍ شٔکتی ژٕے آسوٗنۍ
ویراٹھ سۄروٗپ چھکھ آسہٕ وٕنۍ ژٕے
زیو آتما دیان شٔکتی، کرِیا شٔکتی
اٮ۪ندرِیہ شٔکتی آسنہٕ شٔکتی ژٕے
یژھا شٔکتی ایشوٗری پرِوار ژٕے
گرٕیہہ دَن ہنٛز جاے آسوٗنۍ ژٕے
کیاہ چھکھ ژٕہ آسوٗنۍ نیس سۄروٗپ ژھُو پٕشنہ
یُس سۄروٗپ چھُکھ ہرِ لۄکن ژٕے (۲۵)

शरीर चुय आसवुन्य शक्ती चुय आ सुक्ल
व्यराठ, स्वरूप छुख आसवुन्य चुय ।
जीव आत्मा ध्यान, शक्ती, क्रिया शक्ती,
येन्द्रैयि शक्ती आसन शक्ती चुय ॥
यछा शक्ती ऐश्वरी परिवार चुय,
ग्रेह धन हन्ज़ जाय आसवुन्य चुय॥

क्या नु छुख नु आसवुन्य युस स्वरूप शिव
सुय स्वरूप छुख परिपूर्ण चुय ॥२५॥ सुन्द,

—०—

भूमौ निवृति रुदिता पयसि प्रतिष्ठा,
विद्यानले मरुति शान्तिरतीतशान्ति ।
व्योम्नीति यः किलकलाः कलयन्ति विश्वं,
तासां विदूरतरमऽम्ब! पदं त्वदीयम् ॥ -(२६)

پرتھوی منز نیورتی کلا روپ چھے
ژلس منز پرتشٹھا کلا روپ چھے
اگنس منز ودیا کلا چھ آسیہ وُنی
وایُس منز شانتی کلا چھے
آکاشس پیٹھ کلا یہ زگتھ داران
تمو لیتھ دۆرچھون سۆروپ آسہ وُن
(۲۶) تمو گلن ... دوٗر چھوٗن تھوٗ روٗپ
تمہِ لِتھ ماج دوٗر روزان چھے۔

पृथ्वी मन्ज़ न्यवृती कला रूप चुय,
ज़लस मन्ज़ प्रतिष्ठा कला रूप चुय।
अंगनस में विद्या कला चु आसवुन्य,

पवनस मज़ं शांन्ती कला छुय।
आकाशस यिम कलायि ज़गथ कारान,
तिमव निशि दूर चोन स्वरूप आसुवुन।
तिमव कलायव निशि दूर चोन स्वरूपछु
तमि निशि मांज दूर रोज़ान छुय ॥ २६ ॥

यावत्पदं पदसरोजयुगं त्वदीयं,
नाङ्की करोति हृदयेषु जगच्छरण्ये।
तावत् विकल्प जटिलाः कुटिल प्रकारा-
स्तर्कग्रहाः समयिनां प्रलयं न यान्ति॥ (२७)

یوت تام نہ پاد جوڑی چانی رٹن ہردیس
یم بحث کرونی ولٹہ وادی۔
ہی زگتہ رچھ ونہ توت تانی یم شکہ برچھو
موڈ باو تہشد ناش گتہ سیدی (۲۷)

यौत ताम नु पाद जूयें चान्य रटन हृदयस
यिम बहस करवुन्य वुल्टुमांदी।
ही ज़गथ रछिवुनि तोते तान्य तिम
शाक बेंयथुय,

मूड़ स्रावु तिहुन्द नाश कति सपदी ॥२७॥

यद्देवयान पितृयान विहारमेके,
कृत्वा मनः करण मण्डलसार्व भौमम्।
याने निवेश्य तवकारण पञ्चकस्य,
पर्वाणि पार्वति नयन्ति निजासनत्वम् ॥
(२८)

ییم یوگی پوٗرِتھ پرانہٕ اَبیاس یوٗگ،
اَبیاس کرٕو کرٕی ہیٚلہ پیٚراوٕن
یٚنٛدرِیے کھلہ تہٕ مَن آسکھ زٕلوانۍ
تِم سوآری کرٲن چھی پانٛژن کارِن (۲۸)

यिम यूगी पोंछ्य प्राण अभ्यास, छो,
अभ्यास कर्य कर्य येलि प्रावन।
येन्द्रेय खिल, त, मन आस्यख ज्यूनम् त,
तिम सवारी करान छी पांचन कारुणन॥
(२८)

स्थूलसु मूर्तिषु मही प्रमुखासु मूर्तेः
कस्याश्चनापि तव वैभवमम्ब! यस्याः।

पत्या गिरामपि न शक्यत एव वक्तुं,
सासि स्तुता किल मयेति तितिक्षितव्यम॥
(२६)

پرتھوی تۆت پیٹھ مایا تۆتُس تام
یِم ستھول موٗرتیہِ ماج چھہ آسان
کُنہِ موٗرتی منٛز ہی ماج بوانی
چانی ہِشۍ وِبوٗتی چھنہٕ باسان
برہمادِکن تہٕ چھُنہٕ تیتھ ہیو سامرتھ
گۆن چانی گیوِتھ چھِنہٕ تِم تہٕ کیٛنہہ ہیکان
تمے وِبوٗتی ہُند گۆن کری کۆن
مآنی دِتم مے چھیُس بہٕ آشاوان (۲۹)

पृथ्वी तोंत प्यठ माया तोतुस ताम ,
यिम स्थूल मूर्तियि मांज छि आसान।
कुनि मूर्ती मन्ज़ ही मांज बवानी ,
चान्य हिश विबूती छे न, बासान॥
ब्रह्मादिकन ति छुन, त्युथ ह्युव सामर्थ,
गोण चान्य गेंविथ छिंनु तिम ति केंह ह्यकान।

तिमय विबूती हुन्दय गोण कोंय में गायन,
मांकी दितम में छुस वं आशावान ॥ २९॥

कालाग्निकोटिरुचिमम्ब षडध्वशुद्धा,
वाप्लावनेषु भवतीममृतौघवृष्टिम् ।
श्यामां घनस्तनतटां सकली कृतौ च,
ध्यायन्त एव जगतां गुरवो भवन्ति॥ ३०॥

کلپانتہ اَگنہ یاٹھ گہہ سوٗس ہی ماج
شمسار ناشس پیٹھ ژھمکان
سوٗرے بییہ قایم کرنس سیٹھ *
کھکھ ژ تیلہ امرتک ورشن کران
ییم شامہ روٗپ سوندر جون دیان چھی داران
تِم ماج ز گژھکو گورو چھ سیدان۔ (۳۰)

कल्पांतु अंग्न पांठ्य गहे सोस ही मांज,
समसार नाशस प्यठ च़ु चमकान ।
सोरुय बैयि कायिम करनस श्यठ,
छुख च़ु तैलि अमृतुक वर्षुन करान ॥

यिम शामुरूपु सौन्दर चोन ध्यान छि दारान,
तिम माज ज़गातुक्य गौरुछि सपदान॥
(३०)

—०—

विद्यां परां कति चिदम्बरमम्ब! केचि,
दानन्मेव कतिचित्कानि चिन्मायायाम्।
त्वां विश्वमाहुरपरे वयमामनाम,
साक्षादऽपारकरुणां गुरुमूर्तिमेव॥ ३१॥

کیٛنٛہہ چھی ونان ودیا کیٛنٛہہ چھ آنند
کیٛنٛہہ چھی مایا روٗپ زٕنٛہ مانان
کیٛنٛہہ زَگتُک ماتا ساکھیات خد روٗس
دیا سوٗروٗپ گور روٗپہٕ اَسہِ زانان
(۳۱)

कैंह छी थंज़ विद्या कैंह छि आनन्द,
कैंह छी माया रूप ज़ै मानान।
कैंह ज़गथ माता साक्षात हद् रौस,
दया स्वरूप गोर् रूप् अस्यज़ ज़ानान॥
(३१)

कुवलयदलनीलं बर्बर-स्निग्ध केशं,
पृथुतरकुच भाराक्रान्त कान्तावलग्नम्।

किमिह बहुभिरुक्तैस्त्वत्स्वरूपपरं नः,
सकल भुवन मातः सन्तत सन्निधात्तम्॥
(३२)

کوٗلےٚ وَرگہٕ پانٛژھ چھکھ ماج ژٕ چمکوٗنۍ
دۄرمُت ژےٚ چھےٚ ماج سوٗندر کیش
سوٗندر کمر سوٗس سیٖنہٕ لوٗن ترٛاوِتھ
ہی ماج آسہٕ وٕنۍ ژٕ زَگتُچ ایٖش
زیادٕ وٕنۍ چھےٚ کیاہ نیرِ حاصل ماج
سَنموکھ مےٚ روزِتم نیتھ دِتم تیٚتھ سنٛدیش
(۳۲)

कुवलय वर्ग पांछ्य छुख मांज च़ चमकुन्य,
दोरमुत च़े छुय मांज सोन्दर केश ।
सोन्दर कमर सोंस सीनु बान त्रोविथ,
ही मांज आसवुन्य च़ ज़गतुच ईश ।
ज्याद वंन्यथुय क्याह नेरि हांसिल मांज,
सनमोख मे रोज़तम न्यथ दितम त्युथ सन्देश॥
(32)

सकलजननीस्तवः।

(पांचवां स्तव)

अजानन्तो यान्ति क्षयमवश्यमन्योन्यकलहै,
रमी माया ग्रन्थौ तव परिलुठन्तः समयिनः।
जगन्मातर्जन्म ज्वरभय तमाकौमुदि! वयं
नमस्ते कुर्वाणाः शरणमुपयामो भगवतीम्॥
(१)

نَہ زانِتھ وِنۍ مۆرکھ پانہٕ وٲنۍ لٔڑِتھ لٔڑِتھ
اَوَش پانٹھۍ ناشہٕ باوس چھِ واتان ؎
یِم مَتہٕ وادی مایایہٕ ہِنْدۍ
گَنْڈِ نۍ تھٕٹ نُد یِم ڈٕلہٕ ڈٕلہٕ گَژھان
ہی زَگتھ ماتا اَسہٕ ژٕ نمکی جور
بیِہ کہِ تَسمہٕ کُے ژٕنْدرَمہٕ ژٕ باسان
آمتۍ شَرَن چھِ سَنمو کھ ہی مآج
گلی گنڈِتھ اَسی ژٕ کُر پرٕنام چھِ کران
(۱)-

न ज़ानुवुन्य मूर्ख पानु वान्यलड्थ लड्य,
अवश्य पांठ्य नाशि बावस छिवातान।
यिम मतुवादी मायायि हुन्दिनुय,

गन्डुनुय फॅरिथ यिस ड्लुडुल गछ़ान।
ही ज़गथ माता अखि ज़न्मुक्य ज्वर,
क्यकि तमुकुय ब्रेन्दरमु चु बासान।
आमुत्य शरण ही सन्मोखॅ ही मांज,
गुल्य गॅन्डिथ अंस्य चै कुन प्रणाम छी
—०— करान ॥ 1 ॥

वचस्तर्कागम्य स्वरस परमानन्द विभव-
प्रबोधाकाराय द्युति तुलित नीलोत्पलरुचे।
शिवस्याराध्याय स्तनभर विनिम्राय सततं,
नमो यस्मै कस्मैचन भवतु मुरधाय महसे॥
(२)

وانی کنی وتزارکی چھکھ ژٕ آج نہ تراوی
چھکھ ژٕ چیتن سوٗروٗپ پرماننٛد
نیلہٕ اتپلہٕ پوشہٕ دِتھی شوٗبس رِیہ
شوٗ بابیمان بنیہٕ گژان نہٕ آننٛد
شوٗس چھکھ آرادی زنگتس تراوان
گیاں نہ کرِیا ژٕ وٗ سیہ سکرتہٕ بار کنی-
نمسکار آسی نے تتھ کُنھ تا نی تیژس
سارنے مہیس اندہ انان ژٕ بیہٕ کِنی- (۲)

वांणी किन्य व्यचारु किन्य छुख च़ु मांज़ न
छुख च़ु चेतन स्वरूप परमु आनन्द। फ्रावनी,
नीलि उत्पलु पोशि दिवत्ती सोंस च़ुय,
छ्रायिमान वैंथि ज्ञान तु आनन्द।
शिवस छुख आराधिनी ज़गतस बड़ावान,
ज्ञानु क्रिया रूपु तनु बारि किन्य ॥
नमस्कार आंसि नय तथ कथ ताव्य तीज़स,
सानिनय मुहस अन्दर अनान च़ु यैमि किन्य॥
(२)

लुठत्त गुञ्जाहार स्तनभर नमन्मध्यलतिका,
मुदञ्चद्घर्माम्भः करा गुरितत्तनीलोत्पलरुचम्,
शिवं पार्थत्राणप्रवणमृगयाकार गुरितं,
शिवामन्वग्यान्तीं शवरमऽहमन्वोमि शवरीम्॥
(३)

رُزٕ ولی ہار ژٕے نالہٕ تتہٕ یار ژھٕمتھے
زاول کمر لُسُن ژٕے آنج شونان
پھٹہٕمتہٕ گگہٕ سیتی کمہٕ پھیری ژٕے شولوی
نیلہٕ اتیلہٕ لوتہٕ رنگہٕ چمکان -

اَز لِسَن رَچھِ نے لَس شیٖوٕنس یِتہ یِتہ
دورِ سُت شِنگٲری روٗپ لیُس تَرِ اَشکوٗن
تُھ شِنگٲری یارِ روٗلِیس ہی ماج لَبراَنی
گٔگٕن دِیتھ تٔریئے کٔڈ اَمُت جِھپنے شٔرِن ـ(۳)

रचु फल्य हार चै नाल्य तनु बारि नेन्यवुय,
जांव्युल कमर युस चै मांज शूबान।
फटिमुति गुमु सूल्य गुमु फेर्य चै चूववन्य,
नीलि उत्पल पोशि रंगु चसकान।
अंज़नस रछिने तस शेवस पतु पतु,
दोरमुत शिकोर्य रूप युस चै आसवुन।
तथ शिकोर्य बायि रूपस ही मांज भवानी,
गुल्च गन्डिथ चेय कुन आमुत हुसय
—०— शरण॥ ३॥

मिथः केशा केशि प्रधन निधनास्तर्क घटना,
बहु श्रद्धा भक्ति प्रराय विषयाभ्यासविधयः।
प्रसीद प्रत्यक्षी भव गिरिसुते! देहि शरणं,
निरालम्बं चेतः परि लुठति पारिप्लवमिदम्॥
(४)

بحث کرونی چھی مس کڈان اکھ أکِس
لٔڈی لٔڈی تِمَن پتہ چھُ ناش سپدان
ستہھا پوٗرُش کٔھتی کِنی تہٕ پریمہ کِنی
شرداہِ کِنی چانی پوٗزا کران
ہی ماج پرکٹ بن اسہِ پیٹھ پرسن بن
سنتوشٹ بن اسہِ روز بچاوان
اسہِ چھِ ژنژل مَنہٕ سوٗس تھپہٕ روٗستے
تھپھ کر اسہِ ماج نتہٕ چھِ ڈُلہٕ گژھان ۔(۴)

बेहस करवुन्य छी मस कड़ान अख अंकिस,
लंड्य लंड्य तिमन पतु छु नाश सपदान।
स्यठा पोरुष वेस्की किन्य त प्रेयमु किन्य,
श्रद्धायि किन्य चान्य पज़ा करान।
ही मांज प्रकट बन असि प्यठ प्रसन्न बन,
सन्तोष्ट बन असि रोज़ बचावान।
असि छि च़न्यच़ल मनु सोंस थपु रोंस्तुय,
थफ़ कर असि मांज नतु छि डुलु गढ़ान॥

—०—

(4)

शुनां वा बह्नेर्वा खगपरिषदो वा यदशनं,
कदा केन क्वेति क्वचिदपि न कश्चित्कलयति।
अमुष्मिन्विश्वासं विजहिहि ममाह्नाय वपुषि,
प्रपद्येथाश्चेतः सकल जननीमेव शरणम्॥
(५)

ہی مَنہ یتھ شریرس پیٹھ نہ اعتبار
ہُچ خوراک یہ اَنگُک یا پَنچھی کھیوان
کمہ وقتہ کتھ جایہ، کیتھ پانچھی کمہ طرفہ
پیٹھ یتھ شریرکس کانہہ نہ زانان
میانہ منہ گژھ شرن زگتچہ ماجہ کُن
شریرچ ممتا کرنہ ترٛاوان -(۵)

ही मन् यथ शरीरस प्यठ न् एतिबार,
हुच खोराक यि अंग्नुक या पंछी ख्यवान;
कमि वक्त कथ जायि, किथु पांठ्य कमि
पैंचि पथर शरीर कर कांह नु ज़ानान ॥ तेलि,
म्यानि मनु गछु शरण ज़गतुचि माजि कुन,
शरीरुच ममता कोनु छु जल्द त्रावान॥५॥

—०—

अनाद्यन्ता भेद प्रणयरसिकापि प्रणयिनी,

शिवस्यासीर्यत्त्वं परिणयविधौ देवि! गृहिणी,
सवित्री भूतानामऽपि यदुदभूः शैलतनया,
तदेतत्संसार प्रणयनमहानाटक सुखम् ॥६॥

آدِ اَنتہٕ رۄس بێیہٕ بید رۄس پرٛیہٕ سوٚروٗپ
آسِتھ نہٕ چھکھ شیوٕ سٕتۍ پرٛیمہٕ روٗپ
ولوانہٕ ویٚدی کِنۍ ہی دیوی چھکھ
تَس مہادیوس سٕتۍ گرٛہنی روٗپ
ہی ہِمالہٕ پُتری جیوٗن کرانٕ ژٕ پادِ
سَمسارٕ لیلا چھےٚ چون جشنہٕ روٗپ (۶)

आदि अन्तु रोस बेयि बेदु रोस प्रेयि स्वरूप,
आंसिथ ति छख शेवु सन्ज़ प्रयमु स्वरूप।
व्यवाह वेदी किन्य ही दीवी छख;
तस महादेवु सन्ज़ गृहणी रूप।
ही हिमालु पुत्री जीवन करान चु पांदु,
सम्सार् लीला छि चोन जशनु रूप ॥ ६ ॥

ब्रुवन्त्येके तत्त्वं भगवति! सदन्ये विदुरस-
त्परे मातः प्राहुस्तव सदसदन्ये सुकवयः।

परे नैतत्सर्वं समभिपद्यते देवि! सुधिय-
स्तु देतत्त्वन्मायाविलसितमशेषं ननु शिवे॥
॥ ७ ॥

ہی دیوی کینٛہہ چھی وَنان ژٕے تَتھ رُوٗپ
کینٛہہ چھی وَنان سَتھ کینٛہہ اَسَتھ رُوٗپ
کینٛہہ چھی وَنان تھَدِ کھوتہٕ تھوٚد سوٚرُوٗپ مانٛز
کینٛہہ دانا وَنان سَتھ اَسَتھ رُوٗپ
کینٛہہ چھی وَنان اَنِرواچیہٕ ژٕ آسہٕ وُن
کینٛہہ وَنان یہ سورُے چھُ چون پھولنہٕ رُوٗپ

ही दीवी केंह छी वनान च्वे तत्त्व रूप,
केंह छी वनान सथ केंह असथ रूप।
केंह छी वनान थदि खोतु थोंद स्वरूप मांज,
केंह दाना वनान सथ असथ रूप।
केंह छी वनान अनिर्वाच्य च़ु आसवुन,
केंह वनान यि सोरुय छु चोन फोलनु रूप॥
(7)

—o—

तडित्कोटिज्योतिर्द्युति दलित षड्ग्रन्थिगहनं
प्रविष्टं स्वाधारं पुनरपि सुधावृष्टि वपुषा।

किसत्येष्टात्रिंशत्किरण सकली सूत मनशिं,
भजेश्याम श्यामम्कुच भरनतं बंधुरकचम् ॥
(८)

کرور وُزملہٕ سمان چانٛی دِپتی
کٔژھنِین شُن گنٛڈن ژٕٹھ چھکھ اژان
سوادار ژٕکرس بیٚیہ تور نیران
امرتھٕ ورشن سوٗروُپہ کٔنی وسان
۳۸ کلا روٗپہ زگتھ وِکساوِتھ
تنہٕ بارِ نٔمِتھٕے کیش ژٕے چمکان
تتھ شامہ روٗپس ہی ماج بوانی
گرٕ گرٕ روزٕہا بٕ سیوا کران -(٨)

करोर् वुज़मलि समान चान्य दिपती,
कछिन्यन शंन गन्डन च़टिथ छ़ख अच़ान।
स्वादार् च़ंकरस बैयि तोर नेरान,
अमर्यथ वर्षिरा स्वरूप किन्य वसान।
38 कला रूप ज़गथ वैकसाविथ,
तनु बारि नमिथ्य केश च़े चमकान।
तथ श्याम् रूपस ही मांज बवानी,
गरि गरि रोज़हा बे सीवा करान ॥ 8 ॥

चतुष्पत्रान्तः षड् दलभग पुटान्त स्त्रिवलय,
स्फुरद्विद्युद्वह्नि द्युमणि नियुताभद्युतियुते।
षडश्रं च भित्वादौ दशदलमऽथ द्वादशदलं,
कलाश्रं च द्व्यश्रं गतवति नमस्ते गिरिसुते॥
(९)

چَتُشں دَلہ کمَلہٕ منٛزٕ نیٖرِتھ شٔٹھ دلس
ترِکونس منٛز ساڈٕ ترٕ وار سرپاکار
وُزملہ چمک زن ساسہ بدٕ سرِیہ زن
شکتی کنڈلنی تتی ژٕ چمکان
شٹھ دلہ ژٕ ہتھ دشہ دلہ پٕنٛژہ دوادشہ دل
پٕنٛژہ شو دشہ دلہ سیٹھ چھی تیران
دو دلہ منٛزٕ دزاں شُرِس کنڈلنی
ہی گرِژھیس تتھ سوٚرلٕیس نمسکار کران (۹)

चतुशादल् कमल् मंज़ नीरिथ षठ दलस,
त्रिकूनस मंज़ साड़ु त्रिवार सरपाकार।
वुज़मल् चमक ज़न सास् बद्य सिर्ययिज़न,
शक्ती कुन्डलिनी तती छु चमकान ॥

षठदल् रंटिथ दशिदल् पत् द्वादशदल,
पत् षोडषिदल् प्यठ छि नेरान।
द्वदल् मन्ज़् द्रामुचि तस कुन्डलिनी,
ही गिरजी छुस तथ स्वरूपस नमस्कार
करान॥९॥

कुलं केचित्प्राहुर्वपुरकुलमन्ये तव बुधाः,
परे तत्सम्भेदं समभिदधते कौलमऽपरे।
चतुर्णामप्येषामुपरि किमऽपि प्राहुरपरे,
महामाये। तत्त्वं तव कथमऽमी निश्चिनुमहे॥१०॥

کینٛہ گیانی وَنان ژٕرے ٣٦ تتوٕ روٗپ
کینٛہ گیانی وَنان ژٕرے پرمہ شیوٕ روٗپ
کینٛہ وَنان چھی ماج شیوٕ شکھتی روٗپ
کینٛہ وَنان امہ کھوتہٕ تھوٗد چھُ چون روٗپ
کینٛہ وَنان تھدِ کھوتہٕ تھوٗد کُستانی سوٗروٗپ
ہی مہا مایا کِتھہٕ پأٹھی بہٕ اَستہ لَشیچے
کُس تنا اَولِک چھُ چون ماج سوٗروٗپ
((١٠))

कैंह ज्ञांनी वनान च़ें 36 तत्वरूप,
कैंह ज्ञांनी वनान च़ें ब्रह्म शैव रूप।
कैंह वनान छी च़ें मांज शिव शक्ति रूप,
कैंह वनान अमि खो़तु थोंद छु चोन स्वरूप।
कैंह वनान थदि खो़तु कुस्तान्य रूप,
ही महामाया किथु पांठ्य बनि असि निश्चय।
कुस सना अलौकिक छु चोन मांज स्वरूप॥
((10))

षडध्वारण्यानी प्रलयरविकोटि प्रतिरुचा,
रुचा भस्मीकृत्य स्वपद कमल प्रह्व शिरसाम।
वितन्वानः शैवं किमपि वपुरिन्दीवररुचिः,
कुचभयामानम्रः शिवपुरुषकारो विजयते॥
((११))

شہ وَتہ سوَس جنگل پژلے کالس سیٹھ
کَرورِ دِفتی سوَس ژہ پژر زلان
یَنہ نین بکھتین یم حیاتی ژرہ نی
بیحد ختوان مستک چکھ تمن رحیان
شیو شنز کیہ ستانی سورُوپ ژہ دِفتی سوَس

گیان کرِ یا تتہٕ یارِ ژھمتھ ژرے شوٗبان ؛
شیٖوٗسٕتٕر پیوٗرشہٕ کار چھکھ آج ژٕ آسوٗن
ژھتھی ستتھ کھتہٕ روٗلیس چھیس بہٕ پرنام کران (۱۱)

शिवति सोंस जंगल प्रलय कालस प्यठ,
करीर दिफ़्ती सोंस च़ु प्रज़लान ।
पनुन्यन बंवत्यन यिम चान्यन ज़रणन,
प्यठ थवान मस्तक छ़ख तिमन रछान।
शिवु सुन्ज़ कोस्तान्य स्वरूप चे दीपती
ज्ञानु क्रिया तनुबरि नोंमिथ चै शूबान। सोंय,
शिवु सुन्ज़ पोरुषकार छ़ख मोंज च़ु आसवन्य
तंथ्य शक्ती रूपस छ़ुस बं प्रणाम करान॥
(11)

—०—

प्रियङ्गु श्यामाङ्गीमऽरुण तरवसः किसलयां
समुन्मीलन्मुक्ताफल बहुलनेपथ्य कुसुमाम्।
स्तनद्वन्द्वस्फार स्तवकनमितां कल्पलतिकां,
सकृद्ध्यायन्तस्त्वां दधति शिव चिन्तामणि-
पदम् ॥२२॥

پیٖگہٕ پوٗشہٕ پاٹھی شاٹہٕ سۄندر شریر سوٗن

سوٗنٛچ بستر ژھکھ ژٕ دارآنی

پھوٗلٕمتہ موکھتہ بیٚیہ پوشہ لباسہ سوٗس

تنہٕ بارٕ نمتھے ژھوٗبانی

ہی دیوی ژھکھ ژٕ کلپہ تھر آسہ وٕنی

یُس اکہ لٹہ چون دیان دارآنی

سُے شیوٕ روٗپی چنتامن رتن

چانہ دیایہ کنہ چھُ پراوانی ۔ (۱۲)

पिंगु पोशि पांठ्य श्यामु, सोन्दर शरीरु सोंस,
सोरुख वस्त्र छख च़ु दारानी ।
फोल्मुति मोख्तु बेयि पोशि लिबासु सोंस,
तन बारि नेमिथुय च़े शूबानी ।
ही दीवी छख च़ु कल्पु थर आसुवुन्य,
युस अकि लटि चोन ध्यान दारानी ।
सुय शीवु रूपी चिन्तामन रत्न,
चानि दयायि किन्य छु प्रावानी ॥ 12 ॥

प्रकाशानन्दास्यामविदितचरीं मध्य पदवीं,

प्रवीशौ तद्द्वन्द्वं रवि शशि समाऽऽख्यं कवलयन्।
प्रविश्योर्ध्वं नादं लय दहन भस्मीकृत कुलः,
प्रसादात्ते जन्तुः शिवमकुलमऽम्ब प्रविशति॥
(२३)

گیانہٕ کِنہٕ کرِیایہِ کِنہٕ پھیرِتھ سُشمنا
اَندر اَژِتھ دوشُنی گراس کران
اُرِ نادس اَژِتھ زیۅتھ وَمرشہٕ اَگنہٕ کِنہٕ
سارِنے چکرَن بَسم چھِ کران
تِمہِ پتہٕ چانہِ انُگرہہ کِنہٕ سادک
اوِناشہٕ شِوپدس پیٹھ چھِ واتان -
(۱۳)

ज्ञान् किन्य क्रियायि किन्य फीरिथ सुशमना,
अन्दर अंचिथ दोशवुनी ग्रास करान।
उर्द् नादस अंचिथ च्यथ व्यमर्श अंग्नु किन्य,
सारिनुय चकरन बसम छि करान।
तमि पतु चानि अनुग्रेह किन्य साद्क,
अविनाशि शिवु पदस प्यठ छि वातान ॥13॥

षडाधारावर्तैरपरिमित मन्त्रोर्मिपटले-

श्चलन्मुद्राफेनैर्बहुविधलसद्दैवतझषैः।
क्रमस्रोतोभिस्त्वं वहसि वरनादाऽमृत नदीं,
भवानि! प्रत्यग्रा शिवचिद्ऽमृताब्धि प्रणयिनी॥
((१४))

۶ چکر آوِلنہِ نِشہِ منتر مُلکوٕ نِشہِ
مُدرایی کُفہِ نِشہِ ییّلہِ ژٕ نیران
کرم رۆپہٕ گاڈوٕ نِشہِ کرمکہِ دُری یاوٕ نِشہِ
پرٕ ناد امرتہٕ رۆپہٕ ییّلہِ چھکھ وَسان
ہی ماج واتان چھکھ نۆوِس دُری یاوِس
شِو رۆپہٕ ژٕ ییتہٕ سوٚدرس منٛز ژٕ روزان
(۱۴)

6 चक्र आवुलनि निशि मन्त्र मुलकव निशि,
मुद्राई कफि निशि यैलि छु नेरान।
क्रम रूपु गाडव निशि क्रमकि दरियावु निशि,
परनाद अमृत रूपु यैलि छख वसान।
ही मांज वातान छख नोविस दरियावस,
शिव रूपु च्यतु सोंदरस मंज़ छु रोज़ान॥
(14)

महीपाथो वह्निश्वसनवियदात्मेन्दु रविभि,

र्वपुभिर्ग्रस्तांशैरऽपि तव कियानऽम्ब!
महिमा।
अमून्यालोक्यन्ते भगवति न कुत्राप्यणुतर-
मऽवस्थां प्राप्तानि त्वयि तु परमव्योम
वपुषि॥१५॥

پرٚتھوی، جل، اَگن، والُو تہٕ آکاش
سٟری یہ، ژنٛدرمہ بیٚیہ زیو آتما
اَمشُو کِنِہ ناوتٕ مٕتؠی چھی ژٕنے پانے
کوتاہ چھُ مٲج بوٚ اَنہِ چون مہما
چانِس پرمہ آکاشکِس سوٚروٗپس
مَنز چھِنہ یِم تہٕ کُنہِ ووجوٗدس یِوان (۱۵)

पृथ्वी, ज़ल, अंग्न, वायू तु आकाश,
सिंयियि, च़ेन्दरम, बेयि ज़ीव आत्मा,
अमभ्राव किन्य बनांव्यमुत्य छी च़े पानय।
कोताह छु मांज ववान्य चोन महिमा,
चांनिस परम, आकाशकिस स्वरूपस,
मंज़ छिनु यिम ति कुनि वोजूदस यिवान॥

(15)

मनुष्यास्तिर्यञ्चो मरुत इति लोकत्रयमिदं
भवाम्भोधौ मग्नं त्रिगुण लहरी कोटिलुठितम्।
कटाक्षश्चेदत्र क्वचन तव मातः करुणया
शरीरी सद्योऽयं व्रजति परमानन्दतनुताम्॥
(२६)

مَنش، چاروآے تہٕ دیو ترٛلوکی
سَمسارٕ سۄدرس منٛز چھِ پھٹی متی
کرور بٕز ستھ رج تمہٕ لہرن منٛز
ترٛگن ملکن منٛز ڈلہٕ چھِ گامتی
یوٗدوے یمن منٛز بنہٕ کانٛسہِ چون کٹاکھ
ہے ماتا سہٕ زٕلو اَدٕ چھُ واتان
پَرمانندکِس سۄرولیس چھُ جلدے
پَرمہ پد دیایہِ چانہِ کِنی چھُ پراوان - (۱۵)

मनुष्य, चारवाय, तु देव त्रियलूकी
सम्सार सोंदरस मंज़ छि फटिथ मुत्य।
करोर बज़ु सथ रज तम लहरन मन्ज़,
त्रिगोण मुल्कन मंज़ डुलु छि गामुत्य।

यौद वय यिमन मंज़ बनि कांसि चोन कटाक्ष,
ही माता सु ज़ीव अद छु वातान ।
परमानन्दकिस स्वरूपस छु जलदुय,
परम् पद दयायि चानि किन्य छु प्रावान॥
(16)

कलां प्रज्ञामऽद्यां समयमनुभूति समरसां,
गुरुं पारम्पर्यं विनयमुपदेशं शिवकथाम्।
प्रमाणं निर्वाणं परमभतिभूतं परगुहां,
विधिं विद्यामाहुः सकलजननीमेव मुनयः॥
(१७)

ہی زگت ماتا مُنیشور چھ ژیٚہ وَنان
کرِیا، بود، آدِ انوبو سُمتا
گورٕ پرم پرا وِینۍ وۅپدیش شوکتھا
پرمان، نِرمان، پرتیکھش تہٕ اَنومان
رسیۂ، گیان، مری یادا بیٚیہ وِدیا لگِھی
زگت ماتا چانی سورۅپ یِم وَنان (۱۷)

ही ज़गत माता मुनीश्वर छि चेय वनान,
क्रय, बोद, आदि अनुबव समता ।

गोरु परमपरा विनय वोपदीश शिव कथा,
प्रमान, ल्यर्मीन प्रत्यक्ष तु अनुमान ।
रहस्य, ज्ञान, मर्यादा, ब्यैयि विद्याशक्ति,
ज़गत माता चांनी स्वरूप यिम वनान ॥ (१७)

प्रलीने शब्दौघे तदऽनुविरते बिन्दु विभवे,
ततस्तत्त्वे चाष्ट ध्वनिभिरऽनुपाधिन्युपरते।
श्रिते शाक्ते पर्वण्यनुकलित चिन्मात्र गहनां,
स्वसंवित्तिं योगी रसयति शिवाख्यां परनम्॥ (१८)

شُبِہ سمُوہ رٕگاوِتھ پیٚتہ بیٛٹھ ویٚنیو گالِتھ
ییٚتہ لگیان ژیٚتھ آکاشس منزلیٚن گژھِتھ
تتھوُین سیٚٹھ آتمہ سوٚروٚپس ووہ یادِ رٕسیٚنس
یاد روٚزِتھ پیٚہ اَمرہ تتس منتر رٕگاوِتھ
شگفتہ مارگک آشرِیہ چھِیم رٹان
ژیٚنتھ ماترک رٕشیٛہ تم وِسمرش کران
ساباوِک شوٚ سوٚروٚپس تم پراوان
ہِھدِس شوٚ سوٚروٚپس تم سۄاد کران (۱۸)

शब्द समूह रुकाविथ पतु ब्यन्द ब्यबू गालिथ,
येंघ्र ज्ञान च्यथ आकाशस मँज़ लीन करिथ।
तत्वस प्यठ आत्मु स्वरूपस थोपादि रंस्यतिस,
नाद रूपु पर असर्थतस मंज़ रुकाविथ।
शक्ति मांगुक आश्रय छि यिम स्टान,
चेतन मानुक रहस्य तिम व्यमर्श करान।
स्वाबाविक शिव स्वरूपस तिम [illegible]वान,
थंदिस शिव स्वरूपस तिम स्वाद करान॥
(18)
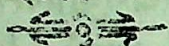
परानन्दाकारां निरऽवधि शिवैश्वर्य वपुषं-
निराकार ज्ञान प्रकृतिमऽनवच्छिन्न करुणाम।
सवित्री लोकानां निरतिशय धामास्पदपदां,
भवो वा मोक्षो वा भवतु भवतीमेव भजताम्॥
(१९)

خٔد رۄس پرمہ آنندٕ رۄپہ چون زِیان
شِیو ایشوٗری رۄپہ لیس ما نان
نِروِکار گیانہٕ سۄس خٔد رۄس دیا رۄپہ
زٲوِ بادٕ کرۄن لیس زٕ مانان

تَس برابرے چھُے موکھیہ یا سمسار
یُس کُنہٕ رُوپہٕ چانٛی سیوا کران (۱۹)

हदु रोंस परमानन्द रूप चोन ध्यान,
शैव ऐश्वरी रूपु यस मानान।
न्यरविकार ज्ञानु सोंस हदु रोंस दया रूपु,
जीव पांदु करुवुन युस च़ु मानान।
तस बराबरुय छुय मोक्ष या समसार,
युस कुनि रूपु चांन्य सीवा करान॥ १९॥

जगत्कायेकृत्वा तमऽपि हृदये तच्च पुरुषे,
पुमांसं बिन्दुस्थं तमपि परनादाख्य गहने।
तदेतज्ज्ञानाख्ये तदऽपि परमानन्द विभवे,
महा व्योमाकारे! त्वदऽनु भवशीलो विजयते॥
(२०)

ژگت کایایہٕ منٛز چھکھ ہردے ژٕ آسہٕ وٕنی
ہردیس منٛز چھکھ آتمہٕ دلیو رُوپ
آتمہٕ شتس منٛز بینٛدو ژٕ چھکھ
بینٛدس منٛز چھکھ پَرہ ناد رُوپ

نادس منز گیان رۆپ چون آسوُن
گیانس منز پرمانند ویُو رۆپ
ہی زگت ماتا جے کار تمنے
یم کرن چون انوبو مہا کاشہ رۆپ (۲۰)

ज़गत कायायि मन्ज़ छुख हृदय च़ु आसवुन
हृदयस मं छुख आत्म दे रूप।
आत्म पोरषस मंज़ बिन्दु च़ु ठीकिथ,
बिन्दस मन्ज़ ज्ञान रूप चोन आसवुन।
नादस मन्ज़ ज्ञान रूप चोन आसवुन,
ज्ञानस मन्ज़ परमानन्द वेंदू रूप।
ही ज़गत माता जयकार तिमुनय,
यिम करन चोन अनुबव महा काशि रूप
((२०)

विधे विद्येवेद्ये विविध समये वेद जननि,
विचित्रे विश्वाद्ये विनयसुलभे वेद गुलिके।
शिवाङ्गे शीलस्थे शिवपदवदान्ये शिवनिधे
शिवे मातर्मह्यं त्वयि वितर भक्तिं निरूपमाम्॥
(२१)

ہی کریا شکھتی، گیان شکھتی قسمہ قسمہ
سدانت آچار رٗوپہٕ ہی ویدٕ ماتا
ہی وچتر رٗوپی چھکھ ژٕ جگتچ آدی
وینیہ کِنی ژٕ پراوانی ویدٕچ سار
شیو آگنیایہ ہنٛز ژٕ سوباوٕ رٗوپی
شیوٕ پد دوان ژٕ ہی ماتا
سوکھکے خزانہ چھکھ آسوٗنی ژٕہی مانٛج
بے حد بکھتی دِتہٕ مے ہے ماتا! (۲۱)

ही क्रिया शक्ती, ज्ञानु शक्ती कुस्मु कस्मु,
सिद्धान्त आचार रूपु ही वीदु माता ।
ही विचित्र रूपी छख चु जगतुच आद्य,
व्यनयि किन्य चु प्रावांनी वीदुच सार ॥
शीवु आंगिन्यायि हन्ज़ चुय सोबावु रूपी,
शीवु पद दिवान चुय ही माता ।
सोखकुय खज़ानु छख आसुन्य चु हीमांज,
बे हद बंन्ती दित मे ही माता ॥
(21)

विधेर्मुण्डं हृत्वा यदकुरुत पात्रं करतले,
हरि शूल प्रोतं यदऽगमयदंसाऽऽभरणताम्।
अलंचक्रे कण्ठं यदपि गरलेनाम्ब! गिरिशः,
शिवस्थायाः शक्ते स्तदिदमऽखिलं ते -
विलसितम्॥३२॥

برہما سُند کلہٕ اَلگ کرِتھ تتھ کلس
پنہٕ نے اَتھک پاتر بناوِتھ
پنہٕ نے چھٹکہٕ کٔرِ بنوُن زیور
نارائن ترِشولس پیٹھ وُلرتھ
سَجِتھ کھوتہٕ شُچھتے زٕہر گٔیی تمی شتوٗن
ہوٗٹ لُیس پنہٕ نٕے شوٗبہٕ روٗن
شوٗس پیٹھ ٹھکیپھرِ اَمہٕ شَکتی سُند
یہٕ سورُے چھوٗنٕے وِلاس چھُ آسہٕ وُن (۳۲)

ब्रह्मा सुन्द कलु अलग कॅरिथ तथ कलस,
पनुने अथुक पात्र बनॉविथ।
पनुने फैकिलुय बनोवुन ज़ेवर,
नारायण त्रेशूलस प्यठ वुरिथ।

स्रन्तु खोतु सरन्तुय ज़हरकि-न्या तंम्य शिवन,
होंट युस पनुनुय शूबरोवुन ।
शिवस प्यठ ठेकिमुच़ि अमि शक्ती हुन्द,
यि सोरुय चोनुय व्यलास छु आसवुन ॥
(22)

विरिञ्च्याख्या मातः! सृजसि हरिसंज्ञा त्वम-
वसि
त्रिलोकीं रुद्राख्या हरसि विदधासीश्वरदशाम्।
भवन्ती सादाख्या शिवयसि च पाशौघदलिनी,
त्वमेवैकाऽनेकाऽसि कृतभेदैर्गिरिसुते॥२३॥

برہماناوٕ کنی کراں پاد ترِلوکی
نارایینہٕ ناوٕ کنی چھکھ ژٕ تھٔق رٕچھان
روٗدرناوٕ کنی چھکھ ژٕے کراں سٔمہار
ایشر دٔشا چھکھ ژٕے داوان
سدا شیو ناوٕ کنی زٔگتس دِوان سوکھ
پاشن ہٕندی سٔموہ ژٕے گا۔
ہی ہمالہ پُتری ژٕے کُنی آسِتھ
بیون بیون کامو کنی اُنیکھ ژٕ بسان -
(۲۳)

ब्रह्मा नावुकिन्य क्रोन न्यु पाद त्रेयलूकी,
नारायणु नावुकिन्य छुख च़ तथ रछान।
रुद्र नावु किन्य च़ुय छुख करान समुहार,
ईशार दशा छुख च़ुय दावान।
सदा शिव नावु किन्य ज़गतस दिवान सोख,
पाशन छुन्य समूह च़ुय गालान।
ही हिमालपुत्री च़ुय कुनी ओसिथ,
ब्योन ब्योन कामयव किन्य अंनीख च़
वासान॥
(२३)

मुनीनां चेतोभिः प्रमृदितकषायैरपि मनाक्,
अशक्ये संस्प्रष्टुं चकित चकितैरम्ब सततम्।
श्रुतीनां मूर्धानः प्रकृति कठिनाः कोमलतरे,
कथं ते विन्दन्ति पदकिसलये पार्वति! पदम्॥
((२४))

ہی ماتا ییم مُنیشور چھی منہٕ کٔو
گلی میتو دوشو سوٗسی آسہٕ وٕنی
تم نہٕ گٔوڑی ماج چانٕن یاد
سپرش کرنس سیٹھہ چھی نہٕ ہیکہٕ وٕنی
ووہہٕ ٹشہ سوبا وِکہ کُھٹی پانھیٕ پیٹھے
چانٕن ژٔرنہٕ کمٔل تل جاے پراوان-((۲۴))

ही माता यिम मुनीश्वर छिय मनु, क्यो,
गंल्यमुत्यव दूषव सोंस्य आसवुन्य।
तिम ति खूच्य खूच्य मांज चान्यन पादन,
स्पर्श करनस प्यठ छिय नु ह्यकवुन्य।
वॉपनिशद सोबाव, किन्य कठिन्य पोठ्य
पंकिथुय तिम,
चान्यन चरन कमलन तल जाय प्रावुन्य॥
((24))

तडिद्वल्लीं नित्यामऽमृत सरितं पार रहितां,
मलोत्तीर्णां ज्योत्स्नां प्रकृतिमऽगुण ग्रन्थि-
गहनाम्।
गिरां दूरां विद्यामऽवनत कुचां विश्वजननी;
म पर्यन्तां लक्ष्मीमभिदधति सन्तो-
भगवतीम्॥२५॥

وُزَملہ رُوپ آپار اَمرِیتہٕ نَدی رُوپ
نِبَرمَلہ ژٕنٛدرمہ تٕرگُوناتمک رُوپ
وٲنی لُقہ دوٗر زٕرے تھٕز وِدِیا سوٗرُوپ
گیان کرِیا تٕہ نِسمت زٕگت ماتا رُوپ

چھی وَنان سَتھہ زَن ہی دیوی چانٛی
یِم رُوپ تہٕ بیٚیہِ اَننتہ لَچھمی رُوپ ((۲۵))

वुज़मलि रूप अपार असरव्यत नेदी रूप,
न्यर्मल ब्रंह्म त्रगोणात्मक रूप।
वांणी निशि दूर रुय थज़ि विद्यास्वरूप,
ज्ञान क्रिया तनव निमित ज़गत माता रूप
छी वनान सथज़न ही दीवी चांन्य,
यिम रूप त बैयि अनन्त लछमी रूप॥
((25))

शरीरं क्षित्यम्बुः प्रकृते रचितं केवलमिदं
सुखं दुखं चायंकलयति पुमांश्चेतन इति।
स्फुटं जानानोऽपि प्रभवति न देही रहयितुं
शरीराहंकारं तव समय बाह्यो गिरिसुते॥((26

پرِتھوی، زَل، اَگن، وایو تہٕ آکاش
چھُے یِمَن پانٛژن لوٚتَن شریر بنان
سُکھ دوٗکھ اَمیٚک زانان پورُش چیٚتن
نوٚ موٚکلِتھ پانَس زیٚو اَمیٚک اَنہٕ وۄوُ گِرِزاَت

ہی ہِمالہ پُتری شَریرُک اَہنکار
چھُٹھ زِلو چانہٕ اَنوگرٛہ رُوٗزِس تراوان۔ ((۲۶))

पृथ्वी, ज़ल, अंगन, वायु तु आकाश,
छुय यिमन पांछ़ बूतन शरीर बनान।
सोरुय दोरुय अम्युक ज़ानान पोरुषचैतन,
मौजूद पोठ्य ज़ीव अम्युक अनुबव करान।
ही हिमालु पुत्री शरीरुक अहंकार,
छुन ज़ीव चॉनि अनुग्रेहु रोस त्रावान॥
((२६))

पिता माता भ्राता सुहृदनुचरः सद्म गृहिणी
वपुः पुत्रो मित्रं धनमऽपि यदा मां विजहति।
तदा मे भिन्दाना सपदि भयमोहान्धतमसं,
महाज्योत्स्ने मातर्भव करुणया सन्निधिकरी॥
((२७))

موٗل ماج بایے بینہٕ گرٛہنی
شرٖیر پُتر سٕتیٖر گرٛبیٖہ دٔنہ
یمہِ وَقتہٕ تراون تِمہٕ وَقتہٕ مے
اَندکارَس حل جل زٕتوٗنی بَن

مہاپرکاشہ روٗپہٕ کِنۍ ننۍ دیایہٕ کِنۍ مانٛج
نزدیک ٹھہرِتھ سنمُکھ مےٚ بن - ((۲۷))

मोल मांज बांय बन्द नोकर त ग्रेहणी,
शरीर पुत्र मेंत्र गर बेंयि दॅन ।
येंमि वकु त्रावनम तमि वक्तु नय मुह,
अन्दुकारस जलुद जलुद चटुवुन्य बन।
महा प्रकाशि रूपु बेंनिथ दयायि किन्य मांज,
नज़दीक ठहरिथ सन्मोख में बन ॥२७॥

सुता दक्षस्यादौ किल सकल मातस्त्वमुदभूः,
स दोषं तं हित्वा तदनु गिरिराजस्य तनया।
अनाद्यन्ता शम्भोरऽ पृथगऽपि शक्तिर्भगवती,
विवाहाज्जयासीत्यहह चरितं वेत्ति तवकः॥
(२८)

ہی زَگتٕ ماتا گوڈٕ بیلہٕ آسکھ
دکھ پرزاپتی زٕنٛزٕ کوٗرٕ آری
دوشہٕ کِنۍ زٕ چھٕن ہچھِ زٕ ترٲوِتھ
پیتہٕ بنیکھ زٕ ہمالہٕ پیترۍ

آدی اَنتہٕ رٕسِتی تِس تَس شیوس نِشہٕ چھکھنہٕ
زانٕہہ تہٕ بیٚون ہی شکتی بھگوٗتی
ولواہہ روٗس ور دور تھن ژینۍ شنکر
تِمہٕ چانۍ چرِتر کُس زانی - (۲۸)

ही जगत माता गोडु चेंति आसुख,
दक्षि प्रज़ापत संज़ कूय कौमारी।
दूषि किन्य कुनथन सुय चेंय त्रांविथ,
पतु बनेयख चु हिमालय पुत्री॥
आद्य अन्तु रॅसितिस तस शिवस निशखनु,
ज़ांह ति ब्योन ही शक्ती भगवंती:
ब्यवाह रोंस वर दोरथन चेंय शंकर,
तिम चांन्य चरित्र कुस ज़ानी ॥ 28॥

कणास्त्वद्दीप्तानां रवि शशि कृशानु प्रभृतयः
परम्ब्रह्म क्षुद्रं तव नियतमाऽनन्द कणिका।
शिवादि क्षित्यन्तं त्रिवलयतनोः सर्वमुदरे,
तवास्ते भक्तस्य स्फुरसि हृदि चित्रं भगवती॥
(२९)

ہی دیوی ستری یہ ژندرمہ بییہ اگن
چانہ دِفتی ہنز چھ اکھ تیمبرا
پرم برہم چھے چانہ نیتّہ آنندس منز
آسون چھے اکھ لوکٹ ہشہ لشہ
شِوناتھ سُند پھٹہ برتھوی تتوس تانی
سارِنے ژ کُنڈلِنی رُوپ روزان
آنشر چھ چون آج لکھنس جھکہ ژے
ہردیس منز پرکھو یا ٹھی چمکان ۔ ۲۹

ही दीवी सियंयि चन्द्रमु बैयि अंगन,
चानि दीपती हुन्ज़ छि अख त्यम्बुरा।
परं ब्रह्म छुम चानि नेत्यआनन्दु मंज़,
आसुवुन छुय अख लोकुट हिश लिश।
शिवनाथु सुन्दि प्यठ पृथ्वी तत्वस ताम्य,
सारिनुय चु कुण्डलिनी रूप रोज़ान।
आख़र छु चोन मांज बरत्थोन छख चुय,
हृदयस मन्ज़ प्रखट्य चमकान॥
-(29)॥

त्वया यो जानीते रचयति भवत्यैव सततं,
त्वयैवेच्छत्यम्ब ! त्वमसि निखिला यस्य तनवः।
गतः साम्यं शम्भुर्वहति परमं व्योम भवती,
तथाप्येवं हित्वा विहरति विशावस्येति किमिदम॥ ३०॥

چانٛی کِنۍ زانان چانٛی کِنۍ یٔژھان سُے
چانٛی کِنۍ سُہ شیوٚ زٔگت تھُے بناوان
ژیے دُکھ تَس سوٚروٗپ چانٛی کِنۍ چھُے سُے
سامی باوس پیٹھ وا تان
چانے یٔژھایہِ تیٚلہِ سُے چانٛس
پرمہٕ آکاشس منٛز لین سپدان۔ (۳۰)

चांन्य किन्य ज़ानान चांन्य किन्य यछान
चांन्य किन्य सु शेव ज़गत छुय बनावान। सुख,
दुःख छुख तस स्वरूप चांन्य किन्य छुय सुय,
सांमी बावस प्यठ वातान।
चाने यछायि तैलि सुय चांनिस,
परमु आकाशस मंज़ लीन सपदान॥ ३०॥

पुरः पश्चादन्तर्बहिरपरिमेयं परिमितं,
परं स्थूलं सूक्ष्मं सकुलमकुलं गुह्यमऽ-
गुह्यम्।
दवीयो नदीयः सदसदिति विश्वम् भगवतीं,
सदा पश्यन्त्याज्ञां वहसि भुवनक्षोभ जननीम्॥
((३२))

بٔرۆنٛھ پَتہٕ أنٛدٕر نێبٕر لۆک بۆڈ مۆٹ سوٗکھم
شِو رۆپ شکتی رۆپ گُفتہٕ نۆمُود رۆپ
دۆر نٔزدیک سَتھ أسَتھ رۆپ یُس زگت
تتھ سِرٛیشٹی سَتھِتی سَمہار ژٕ کرٕوِنی
زٔگتھ آگنیا کار ژٕ زانہٕ یِوان
((۳۱))

ब्रोंठ पत अंन्दर नेंबर लूक बोंड मोंट सूक्षिम,
शिव रूप शक्ती रूप गु[illegible] रूप।
दूर नज़दीक सथ असथ रूपस [illegible]गत,
तथ सृष्टीस्थिती समुहार चु करुवुन्य,
जगथ आज्ञ्याकार चु ज़ानुनु यिवान॥
((3१))

मयूखाः पूष्णीव ज्वलन इव तद्वद्दीपकलिकाः,
पयोधौ कुल्लोलप्रतिहितमहिम्नीव पृषतः।
उदेत्योदेत्याम्ब त्वयि सह निजैस्तास्विककलै,-
र्भजन्ते तत्त्वौघाः प्रशममऽनुकल्पं परवशाः॥
(३२)

سِری یہ سٕنٛز کرِنہٕ زٕن، اَگنِچہٕ تھمبرٕ زٕن ؛
سَمندرن مَلکن ہُنٛز پانٕے چھکہٕ زٕن
تِتھے پاٹھی شِو پیٹھہٕ پرِتھوی تتوس تانٛے
پرتھ کلپانتس وٕتھۍ وٕتھی لے سپدان۔ (۳۲)

सिर्ययि सुन्ज़ु किरणु ज़न, अंगनुचि त्यम्बरि ज़न,
समन्दरन मलुकन हुन्ज़ु पानय छ्किु ज़न।
तिथय पांठ्य शिवु प्यठु पृथ्वी तत्त्वस तान्य,
प्रथ कल्पान्तस वंथ्य वंथ्य लय सपदान॥
(३२)

विधुर्विष्णुर्ब्रह्मा प्रकृतिरणुरात्मा दिनकरः,
स्वभावो जैनेन्द्रः सुगतमुनिराकाशमऽनिलः।
शिवः शक्तिश्चेति श्रुतिविषयतां तामुपगतां,
विकल्पैरेभि स्त्वामभिदधति सन्तो भगवतीम्॥
(३३)

ژٚندرمہ، وِیشنو، برہما بیٚیہِ سِرِی یہِ
مایا، سوباو، مَت، زیو تہٕ آتما
آکاش، وایو، شو، شکتی یِم ناو
بید کِنۍ وید یِم واتان
ستھ ژَن یِمو ناوو کِنۍ بِشیوٚن بِشیوٚن
ہی ماج بوٲنی ژیٚے چھی سُمران — (۳۳)

चन्द्रमस्, वैष्णो, ब्रह्मा, बैयि सिर्ययि,
माया, स्वबाव, मत, ज़ीव त, आत्मा।
आकाश, वायु, शिव, शक्ती, यिम नाव,
बीद किन्य वीदस यिम वातान॥
सथ ज़न यिमव नावव किन्य ब्योन ब्योन,
ही मांज बवानी चैय छी सुमरान॥ 33॥

प्रविश्य स्वं मार्गं सहजदयया दैशिकदृशा,
षडध्वध्वान्तौघच्छिदुर् गणनातीत करुणाम्।
परानन्दाकारां सपदि शिवयन्तीमपितनुं,
स्वमात्मानं धन्याश्चिरमुपलभन्ते भगवतीम्॥
॥ ३४॥

قدرتی دیایہ کنہ گورہ سنز نظر کنہ
یم شکتی مارگس منز پرویش کران
تمن چھی وتہ سوس سمسار انکار
دیایہ کنہ ہی ماج چھکھ تہ گالان
پرمانندکی سوکھ دوان تمن
تم بھاگوان ماج چھی تہ پراوان (٣٤)

कोदरंती दयायि किन्य गोर सुन्ज़ नज़रि किन्य,
यिम शक्तिमार्गस मन्ज़ प्रवेश करान।
तिमन्य छि वति सोंस सम्सार अन्दकार,
दयायि किन्य ही मोज छख च्च गालान।
परमानन्दकुय सोख दिवान च्च तिमन्य,
तिमुय भाग्यवान मोज छी छे प्रावान ॥३४॥

शिवस्त्वं शक्तिस्त्वं त्वमसि समया त्वं समयिनी,
त्वमात्मा त्वं दीक्षा त्वमयमणिमादि गुणगणाः।
अविद्या त्वम् विद्या त्वमसि निखिलं त्वं किमपरं,
पृथक्तत्त्वं त्वत्तो भगवति न वीक्षामह इमे॥
(३५)

ژٕے چھکھ شِو تہٕ ژٕے چھکھ شکتی
ژٕے شمہ تہٕ تِمہ زانوُنی چھکھ ژٕے
ژٕے آتما چھکھ وۄپدیش چھکھ ژٕے
ژٕے اَنِمادِکھ اَشٹہٕ سِدی ژٕے
ژٕے اوِدیا وِدیا ژٕ جگتُک پدارتھ
ژٔے نِشہٕ کانہہ تتھ چھیہٕ اَسی بیٚوُن زانان (۳۵)

च़ुय छ़ख शिव तय च़ुय छुख शक्ती,
च़ुय समव तु ह्य छ़ख ज़ानवुन्य च़ुय।
च़ुय आत्मा छ़ख वोपदीश छ़ख च़ुय,
च़ुय अनीमादिख अष्टु सैदी च़ुय ॥
च़ुय अविद्या विद्या जगतुक पदारथ,
च़ैय निशि वांह तरुन छिनु अंरस्य छ्यौन ज़ानान।
((३५))

असंख्यैः प्राचीनैर्जननी जननैः कर्मविलया-
द्गते जन्मन्यन्त्ये गुरुवपुषमासाद्य गिरिशम्।
आवाप्याज्ञां शैवीं क्रमसजुरऽपि त्वां विदितवान्
नयेयं त्वत पूजास्तुति विरचनेनैव दिवसान्॥
((३६))

ہی ماتا اَسنکھیہ پرانٛین زٕمن ہنٛدی
کرم گَلنہٕ کِنہ ووٚنۍ زَنم پراوتھ ۔۔
گورِو شِو سوٚروٗپ لوٗبتھ شکتی سوٚروٗپ پراوتھ
وار پانٛژھی ماج ژون سوٚروٗپ زانِتھ
ژانٛی توٚتہ پوٗزا کرٕون بہٕ روزٕ ہے
تِتھی ستی ژھٕنہ بہٕ ونٛی دِپ کٹاوِتھ ۔ (۳۶)

ही माता असंख्य प्रान्यन ज़ुनमन हुन्द,
कर्म गलनु किन्य वोन्य ज़न्म प्रांविथ।
गोरु शिव स्वरूप लोबिथ शक्ती स्वरूप
प्राविथ,
वार पांछ़ मांज चोन स्वरूप ज़ानिथ॥
चांनी तोता तु पूज़ा करुन बे रोज़ हय,
तेथ्य सूत्य छुनु बे वन हान कटांविथ॥
(36)

यत् षट् पत्रं कमलं उदितं तस्य याकर्णिका-
-ख्या,
योनिस्तस्याः प्रथितमुदरे यत्तदोङ्कारपीठम्।
तस्मिन्नन्तः कुचभरनतां कुण्डलीनः प्रवृतां,
श्यामाकारां सकलजननीं सन्ततं भावयामि॥
॥ 37॥

سوادِشٹان چَکرس منٛز شٔہ دٔل
پمپوش یُس چھُ ماژ آسہٕ وُن
تَتھ منٛز آسہٕ وُن یُس چھُ بیٖزُک کوش
بیٖزکوشس پٮ۪ٹھ اوٚمکارٕچ جاے
اوٚمکارٕچہ جایہ پٮ۪ٹھ واس کرٕونۍ
یوٚس کُنڈلِنی چھکھ تَتۍ چُھ روزان
تٔسۍ شامہ سُندر موٗرتی دارٕونۍ
زگت ماتایہ چٔیہ نیتھ بہ سُمران (۳۷)

स्वादिष्टान चंकरस मंज़ षठ दल,
पम्पोश युस छुय सांज आसवुन।
तथ मन्ज़ आसवुन युस छु बीज़ुक कोश,
बीज़ कोशस प्यठ ओंकारुच जाय।
ओंकारुचि जायि प्यठ वास करवुन्य;
योस् कुण्डलिनी छुख तंत्य चु रोज़ान।
तस्य शाम् सौन्दर मूरती दारवुन्य,
ज़गत मातायि चेंय न्यथ वे सुमरान ॥
((37))

भुवि पयसि कृशानौ मारुते खे शशाङ्के,
सवितरि यजमानेऽप्यष्टधा शक्तिरेका।
वहति कुचभराभ्यां या विनम्रापि विश्वं
सकलजननि सा त्वं पाहिमामित्यवश्यम्॥
(३८)

پرتھوی، زَل، اگُن، وایُو، آکاش
سِریہ ژنٛدرمہ یژمن یمَن آٹھن
چھکھ کُنی شکتی گیان کریا رۄپ
تنہٕ بارِ نمِتھ چھےٚ زگتُک دارُن
سوے چھکھ ساری زگژ ہٕ ماتا
اوَشہ پاٹھۍ رٔچھ کٔر سون پالُن- ((۳۸))

पृथ्वी, जल, अंग्न, वायू, आकाश,
सिर्यिय चंन्द्रमु यंजमन यिमन ओठन।
छख कुनी शक्ती ज्ञान क्रिया रूप,
तनु बारि नमिथ्युय जगत छु दारुन्य,
सोय छख सारी जगतुच छु माता;
अवश्य पाट्य रछ छु कर सोन पालन॥
((३८))

ॐ

ध्यान

कालाभ्राभाम् कटाक्षैररि कुलभयदां -
मौलिबद्धेन्दुरेखां,
शङ्खं चक्रम् कृपाणं त्रिशिखमपि -
करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम् ।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा-
पूरयन्तीं,
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिद[illegible]परिवृता
सेवितां सिद्धिकामैः ॥

کالہ ابھر کی آبھا شامہ روپ سے سوبھتے کٹاکھشہ کو دشمن
دیکھ پیچھے ڈر رہے دو بہت شنکھ، چکر تلوار ترشول ہاتھوں میں دھارن
ترنیتر والی سنگھ کے کندھے پر سواری ہے تین لوکوں کو تیج سے پورن کرنے والی
دیان کرتے ہیں جے نام والی درگا جو دیو تمام سدھی
چاہنے والوں سے سیوا کی گئی

میگھا رشی بولے — جب دیوی کے ہاتھوں مہشاسر بہت مارا گیا تو اندر
اور سب دیوتا پرسن ہو کر ساشٹانگ ڈنڈوت کر کے اس پرکار بھگوتی کی
ستوتی کرنے لگے۔

काल, ओंबरुक्य पांठ्य श्राम, त्यु सौखतुय
कथाञ्ज़ किन्य दुशमनन कुलन बख्शिवान,
ड्यकस प्यठ चन्द्रम दोरतुत शंख चक्र
तलवार त्रिशूल अखन मंज़ थोसदारन।
ब्रे नेथुर दारुबुन्य सुहुस रोंसिथ सोंधलुय
त्रिलवनस पनुनि तीज़ पूरनावान।
ध्यान केरिव तस जय नाव, सोस दुर्गायि हुन्द
देव नमान सेंदी थछ़्युन सेवा यस करान।
मेधा ऋषि बोले :— जब देवी के हाथों महिषासुर
सेना सहित मारा गया तो इन्द्र और सब
देवता प्रसन्न होकर साष्टांग दण्डवत करके
इस प्रकार भगवती देवी की स्तुती करने
लगे।

ऋषिरुवाच :—

ॐ शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये
तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या।
तां तुष्टुवुः प्रणति नम्रशिरो धरांसा।
वाग्भिः प्रहर्ष पुलकोद्गम चारुदेहाः॥
(१)

ہی دیوی یێلہ ماژی تھکھ ژےٚ تمہ دوشٹ
راکھس سێنا یوس بلوان
وانی کِنہ پرسن کرکھ ژ ئیندراژن تہ
دیوہ کنہ نوهراوتھ کورکھ ژےٚ پرنام
ہرشہ کنی تمن رم رم تھود وونلیہ
سوندر شریر سوس آسی تمہ پرزلان۔(۱)

ही दीवी येंलि मांयथक चै तिम दोष्ट-
राक्षस सैना योस बलवान ।
वांनी किन्य प्रसन्न करख चु इन्द्राजन त
दीवव कनु नोमरावित्र करख
चै प्रणाम ।

हरषि किन्य तिमन रुम रुम थोंद वोल्लोयि
सोन्दर शरीर सोस्य आस्य तिम
प्रजलान ॥

देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या,
निश्शेष देवगण शक्ति समूह मूर्त्या ।
तामम्बिकामखिलदेव महर्षिपूज्यां,
भक्त्यानताः स्म विदधातु शुभानि सा नः ॥
(२)

ہی دیوی ژِیے زگت چھے ویاپت

سورُے چانہ شکتی ستی چھے شوبان

سارِنے دیون ہنز شکتی ہُند سموہ

چھے مأج چونے سورُوپ آسوُن

یس کران چھ پوزا ساری دیوتا

بیٰیہ وِشن تہٕ رِشی تمس مأجس

گُلہ گنڈِتھ چھس کران پرنام تمِس

سوے مأج کرِ تہم کلیان ہیون (۲)

ही दीवी चेय ज़गत छुय व्यापकुन,

सोरुय चानि शक्ती सूत्य छु शूबान।

सारिनुय दीवन हुन्ज़ शक्ती हुन्द समूह,

छुय मोज चोनुय स्वरूप आसवुन।

यस करान छि पूज़ा सॉरी दीवता

बॅयि वोतस रेश तमिस माजिकुन।

गुल्य गंडिथ छुस करान प्रणाम तमिस्य,

सोय मोज कॅर्यतनस कल्याण सोन। (२)

यस्याः प्रभावमऽतुलं भगवानऽनन्तो,

ब्रह्मा हरश्च नहि वुक्तुमऽलंबलं च।
सा चण्डिकाऽखिल जगत् परिपालनाय,
नाशाय चाशुमभयस्य मतिं करोतु॥ ३॥

یمِس سُند پرَبھاو چھُے حد رۄس آسوُن
بھگوان تہٕ شیشناگ چھُنہٕ وَنِتھ ہیکان
برہما تہٕ شنکر چھِنہٕ تِم زیٚی پاٹھی
طاقت سوٚتی مہما چون زانان
سوے چنڈی دیوی رٔچھتَم مےٚ
یوس سارِسٕے زگتس چھے پالان
دی تِمہٕ ترٕ شتوٕ بود سوے دیوی
نیٚیِم ستی آشوب بے ناش سپان
(۳)

येम्यसुन्द प्रबाव छुय हद् रोस आसवुन,
भगवान तु शीशनाग छुन् वॅनिथ ह्यकान।
ब्रह्मा तु शंकर छिनु तिम वॅय पांठ्य,
ताक्त् सोस्य महिमा चोन ज़ानान।
सोय चंडी दीवी रेछ तनम में,
योस् सारिसुय ज़गतस छे पालान।

दीतनम तिछ़ शोब बोदू सोय दीवी।
यैमि सूत्य अशोब बय नाश सपदान ॥
(३)

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेषु लक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजन प्रभवस्य लज्जा-
तां त्वां नतास्म परिपालय देवि विश्वम्।
- (४)

باگیوان گرن منز بوسیہ لکچھمی روپ
پاپی گرن منز بوسیہ الکچھمی
ستھ بوزن شردا کولہ بوزن لژا
شود لوکن بود روپہ روانی
یاپا کرتہ سارنی نشہ ماج
اسئے چھِیے گتھ گنڈتھ پرنام کرانی - (۵)

भाग्यवान गरन मन्ज़ चोसु लछमी रूप
पापी गरन मन्ज़ चोसु अलछमी।
सथ पोरशन श्रदा कोल, पोरशन लज़ा
शोद पोरशन बोदि रूपु रोज़ानी।

पालुना करत्,　　सारिसुय ज़गतस मांज!
द़ेय कुलय गुल्य गंन्डिथ प्रणाम करांनी॥
(4)

किं वर्णयाम तव रूपमऽचिन्त्यमेतत्,
किंचासि वीर्यमऽसुर क्षयकारि भूरि।
किंचाहवेषु चरितानि तवादुभूतानि,
सर्वेषु देव्यसुर देव गणादिकेषु॥ ५॥

کیاہ کرٕ ورنٕن چون سوٗروٗپ ہی مآج
تٕس روٗپ چون آسہٕ وُن نہٕ سوٗرانی
کیاہ کرٕ ورنٕن چون بَل تہٕ سامرتھ
تٕس راکھسن کھٕۓ ناش کرانی
کتہٕ آسہٕ یوٗزمتھ دانہٕ بلی ھترتھ
راکھسن تہٕ دیو آشُرس چھٕ ھاتانی (۵)

क्याह् कर वर्नन चोन स्वरूप ही मांज
चुस रूप चोन आसवुन न सोरांनी।
क्याह कर वर्नन चोन बल तु सामर्थ,
चुस राक्षसन कु नाश करांनी॥

कति अनु बोंज़ मंज़ चान्य बड्य चरित्र,
राछस तु दीव आश्रस गछानी ॥5॥

हेतु समस्त जगतां त्रिगुणापि दोषैः
न ज्ञायसे हरिहरादिभिरऽपि पारा ।
सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूतम,
व्याकृताहि परमाप्रकृतिस्त्वमाद्या ॥६॥

ساری زٕگچھ ہیتو چھکھ ژٕ ہی ماج
ترگنٕاتمک زگت یُس چھُ آسہ وُن
تاماسِس شِتوَس چھُنہ زانَنہ یوان
تاچون سوٗروٗپ یُس اپار آسہ وُن
حیانہ اَلنہ لَنہ یُس زگت چھُ ووہ پلیٕت
چون آسرٕ یُس چھُ آسہ وُن
آدی پرکرتی ژٕ چھکھ ہی ماتا نروکار
تقدکھہ نٕہ تھوَد چون سوٗروٗپ آسوُن (۵)

सारी ज़गतुच हीतो छख चु ही मांज,
त्रिगुणात्मक ज़गत युस छु आसवुन ।

नारायनस शिवस छु ज़ानुन यिवान,
माता चोन स्वरूप छुस अपार आसवुन।
चानि अँशि निशि छुस ज़गत छु बोपदोमुत,
चोनुय आसर तथ छु आसवुन ॥
आद्य प्रकृती च छख ही माता न्यरविकार
थदि खोतु थोद चोन स्वरूप आसवुन॥
(6)॥

यस्या समस्त सुरता समुदीरणेन
तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवी
स्वाहासिवै पितृ गणसि तृप्तिहेतुर
उच्चार्यसे त्वं अतेव जनैः स्वधा च ॥7॥

یُمی سِنْدی ساری منتر پرِتھ ستی
یَگنا دِکَن ترِپتی چھ واتان
سواہا شبدِ کنی ہی دیوی تُہے
دیوَن ترِپتی ہُتھ کارن بنان
سودھا شبدِ کنی ہی دیوی سایہ نے
پیترِ لوکَن ترِپتی چھے ستیان

यैम्य सुन्य सारी मन्त्र परनु सूत्य,
यैज्ञादिकन तृप्ती छि बातान ।
स्वाहा शब्दु किन्य ही दीवी ज़्युय,
दीवन तृप्ती हुन्द कारण बनान ।
स्वधुः शब्दु किन्य ही दीवी सारिवुय,
पत्र लूकन तृप्ती छुय सपदान ॥७॥
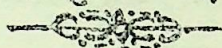
या मुक्ति हेतुर अविचिन्त्य महा व्रतास्वं,
अभ्यस्यस्ये स्वनियतेन्द्रिय तत्व सारै
मोक्षार्थिभिर्मुनि भिरस्त समस्त दोशैः
विद्यासि सा भगवती परमाहिदेवी ॥
((८))

ژےٚ چھکھ موکھتی ہنٛد کارٕن ماج
ژےٚ ژٕرِ تتو سار سوّس نہٕ سورنی
ہندرییہ رٹتھ آسن ییلہ ورتہ عتی
ییٚر پانٛ دوہ پانسنا چھِہ ییدآنی
گھی ییٹھہ وٕنی منیشورن دوشہ رستی
چھکھ تمن تہٕ ودیا روٗپ بھگوتی۔ ((۸))

च़ुय छ़ख मोख़्ती हुन्द कारण माज,
च़ुय बडि तल्वु सार, सोरुय नं स्वरनी।
यैम्बैरि रैटिथ आसन यैलि बूत सोरुय,
तैलि, वोपासना कें सपदानी।
मूल यछ़ुन्य मुनीश्वर यिम दूषि रॅस्य,
छुख तिमन च़ु विद्या रूपु भगवती ॥८॥

शब्दात्मिका सु विमल ऋग्यजुषाम निधान-
मुद्गीथ रम्य पद पाठवतां च सास्नाम्।
देवेत्रियी भगवती भवभावनाय,
वार्ता च सर्व जगतां परमार्तिहन्त्री ॥६॥

شَبد رۄُپہٕ رِگھ، یجُر، سامہٕ ویدُک تٔرانہٕ
ژٕرے پد، ژٕے پاٹھ، ژٕرے پرٛٹنو رۄُپ
ستمسار پالنا یہٕ پانچھ ہی دلوی!
ژٕے آسہٕ وۄِنی چھکھ ترٛنوے ویدہٕ رۄُپ
زنگتک آرتہٕ گالنہٕ پانچھہٕ، ژٕ ژٕ ژٕ ژٕ
ژٕرے چھکھ آسہٕ وۄِنی وارتا رۄُپ

آسہ وُن سۄنٛدر وۄتم مۄکھ چۄن
شۄبایہ سۄس آشچر کرٛوون
ییس ڈٲلہ مۄکھ وۄچھتھ چھنا سۄرہٕ
لیس اوس راکشس کرٛودھ کرٛوون ۔(۱۱)

पवि [illegible] [illegible] [illegible] हुव,
[illegible] मोख सौनुक्य [illegible] ओस दम्बुवन,
असुवुन सोन्दर वोतम मोख चोन,
शूबायि सोस आश्चर करुवोन।
हृस डेल्य सु मोख वुछिथ महिषासुरसुय,
युस ओस राहुस क्रूद करुवोन ॥ ११॥

दृष्टापि देवि कुपितं भ्रुकुटीकरालमु-
द्युच्छशाङ्क सदृशं छवियन्न सद्यः।
प्राणान्मुमोच महिषस्तदतीवचित्रं,
कैजींव्यतेहि कुपितान्तक दर्शनेन ॥ २२॥

وۄچھتھ تہٕ دیوی کرٛودھ ستی برٛۄتھ
زندٕ [illegible]

پرٛان ترٛاوِی تمی وقتہٕ مہِشاسورنے
کاہہ آشرٕ چھِنہٕ توتہ سپدان ۲
کُس روزِ زِندٕ ماج یتھ زگتس منٛز
ییلہٕ وُچھِہ سُہ مہاکال کرٛودی بنان (۱۲)

वुछिथुय चु दीवी क्रूद्द सूत्य बारिथुय,
वादयि सौस चन्द्रम् ज़न चु प्रज़लान।
प्राण त्रांव्य तमी वक्त् महिषासुरनुय,
कांह आश्रर कुन् तोति सपदान।
कुस रोज़ि ज़िन्द् मांज यथ ज़गतस मंज़,
यैलि वुछि सु महाकाल क्रूदी बनान ॥12॥

देवि प्रसीद परमा भवती भवाय,
सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलाणि।
विज्ञातमेतदधुनैवयदस्तमेत-
न्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य ॥२३॥

ہے دیوی ووتی اسہٕ ییتھ پرسنٛن ووُن ۲
چھکھ تٕہ ماج آسہٕ تٕ سبونے کُلسان

ییلہ ژھٔل سپدان کرٔ ودی ہی ماج !
تیلہ چھکھ یکدم کُلن ناش کران۔
مہیشاسورٕن فوج ناشس واتنوکھن
یُس فوج تس اوس سیٹھا بلہ وان۔ (۱۳)

ही दीवी वोन्य असि मठ प्रसन्न बन,
छुख चु मांज आसवुन्य सोनुय कल्याण।
यैलि छख सपदान क्रूदी ही मांज,
तेलि छख यकदम कुलन नाश करान।
महिषासोरुन फोज नाशस वातुनोवथन,
युस फोज तस ओस स्यठाबलवान॥
(13)

ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां,
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः।
धन्यास्त एव निभृतात्मज भृत्यदाराः,
तेषां सदाऽभ्युदयदा भवती प्रसन्ना॥१४॥

شہرن منز ماج تمۍ سے چھِ آنان
دنہ سمپدا یہ سوٕس تمہ چھِ آسان

تِمنے یُس بڈان دھرم تہ کم گژھان
تِمنے دنہ واد ساری دِوان
وینیہ سوس تِمنے نوشہ، سنتان، نوکر
زگتس منز ماج تم باگیہ وان
تِمنے ہمیشہ چھکھ وودیہ سوس روزان
یِمن پیٹھ چھکھ ژ ماج پرسن سپدان (۱۴)

शहरन मंज़ मांज तमिस्यय छि मानान,
धनु सम्पदायि सोंस तिम छि आसान।
तिमुनुय यश बडान धर्म नु कम गछान,
तिमुनुय धन्यवाद सारी दिवान।
विनयि सोंस तिमुनुय नुय, सन्तान, नोकर,
ज़गतस मंज़ मांज तिम भाग्यवान।
तिमनुय हमेशि छख वोदयि सोंस रोज़ान।
यिमन प्यठ छख चु मांज प्रसन्न सपदान॥ (14)

धम्यंयिरा देवि [illegible] नि सदैव कर्मन।
अ[illegible]या: [illegible]त: प्रतिदिनं सुकृती करोति।

चानि दृष्टि सूत्य क्याज़ि सपदिन् वसुन,
सारिनुय राक्षसन तु व्यांयि दुश्मनन।
मगर छुख चु त्रावान शस्त्रही सोज,
सुथ यिम अंमि सूत्य शोद सपदन।
शोद बनिथ वातन यिम ति स्वर्गलूकस,
योहय हालुकार छुख तिमन प्यठ करान॥
(18)

खड्ग प्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः,
शूलाग्रकान्तिनिवहेन दृशोऽसुराणाम्।
यन्नागता विलयमंशुमदिन्दु खण्ड-
योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत्॥
(19)

کھڈگہ دِپتی سموٗہ، کھڈگہ چمکہ ہنٛد سموٗہ
تہٕ شوٗل دِپتی سموٗہ نیٚیس ژٕٹے چمکان
یِمہٕ ژالن چھےٚ چوٗن موکھ تیٚتھے ہی تاج
راکھشس تتھ سیٚتہٕ نظر چھینہٕ درالان
تہٕ ژندرمہ ستہٕ زی لیوٗرٕ دِپتی سوٗس
تاج! تیٚتھے چھےٚ چوٗن موکھ وُچھان۔ (19)

खडग दिफ़्ती समूह, कठिनि चमकि हुन्द समूह,
त्रिशूल दिफ़्ती समूह, युस ज़ै चमकान ॥
प्रज़लान हुय चोन मोख त्युथुय ही मांज,
राक्षसन तथ प्यठ नज़र छुन दरान ।
चन्द्रमु सुन्दी पूर्ण दिफ़्ती यौस,
ही मांज त्युथुय छु चोन मोख वुछान ॥
॥ ६९ ॥

दुर्वृत्त वृत्त शमनं तव देवि शीलं,
रूपं तथैतदविचिन्त्यम तुल्यमन्यैः ।
वीर्यं च हन्तृहृतदेव पराक्रमाणां,
वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम् ॥ २० ॥

خراب چلن ہی ماج چھکھ ناوان شانت
آسہ وُن یوہے چھے چونے سوبھاو
رُوپ چون آسہ وُن ہی ماج نہ سوچ
چانہ رُوپک حد چھنہ کیتھہ لسان
دیوَن ناش گومت یُس سارکھ
چھکھ تمت پیو رنار کھ بڈاوان

شتُرن سپُد چھکہ ہی آج لوٗآنی
دیایہ سوٗس تمن دیا پرکٹ چھکہ کران
(۲۰)

खराब चलन ही मांज दुख बनावान शांत,
आसुवुन योहय छुय चोनुय स्वबाव ।
रूप चोन आसवुन ही मांज न स्वरूपुन्य,
चानि रूपुक हद छिनु कैंह लबान ॥
दीवन नाश गोमुत युस सामर्थ,
दुख तिमन पोरषारथ बडावान ।
शथरन प्यठ दुख ही मांज बवांनी,
दयायि सोंस तिमन दया प्रकट कुन
करान (१००)

केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य,
रूप च शत्रु भयकार्यतिहारि कुत्र ।
चित्तं कृपा समर निष्ठुरता च दृष्टा,
त्वययेव देवि वरदे भुवन त्रियेऽपि ॥
(२२)

کس کریہ اُتھی تتھ چانہ ویرتایہ
چون روٗپ شترن بیہ یوآنی

کنہ جایہ چون رُوپ منوہر آسہ وُن ؏ ؏
دیایہ سوس ہردے کنہ جایہ چھکھ تھوانی ؏
لڑایہ منز رُوپ چون کٹھور مانج آسہ وُن
ترن لوکن چھکھ ور دوانی ؏ ؏ ؏ (۲۱)

कुस करि बराबरी मांज चानि वीरतायि,
चोन रूप ... रन नय दिवांनी।
कुनि जायि चोन रूप मनोहर आसवुन,
दयायि सोंस हृदय कनि जायि छख थवांनी।
लड़ायि मन्ज़ रूप चोन कठोर मांज आसवुन,
त्रन लूकन छख वर दिवांनी॥ २१॥

त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन,
त्रातं त्वया समरमूर्द्धनि तेऽपि हत्वा।
नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्तम,
ऽस्माकमुन्मद सुरारि भवं नमस्ते॥
॥२२॥

سارنے دُشمن لڑایہ منز ناش کرِتھ
بچاو تھی ژے ہی ماج ترٕ لوکی ؏

ہٲری نھکھ راکھِس لڑایہ مٔنزی ماج
کھٲری نھکھ ژٕ سورگس ہی بوانی
ناش کورتھ دُشمنن اسہٕ دور کورتھ
اسی ژٕ ماتا گِلی گنڈتھ پرنام کرانی - (۲۲)

सारिनुय दुशमनन लडायि मन्ज़ नाश कॅरिथ,
बचांवथन चॆ ही सांज त्रैलूकी।
मांरिथक राक्षस लडायि मंज़ ही मांज,
खांरिथक चॆ स्वरगस ही बवांनी।
नाश कुरुथ दुशमनन असि बय दूर कॅरुथ॥
अस्य चॆ माता गुल्य गंन्डिथ प्रनाम करांनी॥
((22))

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वने नः पहि, चापज्यानिःस्वनेन च॥
((23))

تِرشولہ سِتی رٔچھتہٕ اسہٕ ہی ماج
کھڈگہ سِتی رٔچھتہٕ اسہِ ہی ماتا
گنٹایہ شبدٕ سِتی رٔچھتہٕ اسہِ ہی ماج
کمانہٕ شبدٕ سِتی رٔچھتہٕ ہی ماتا - (۲۳)

पनुने त्रिशूलु सूत्य रछत् असि ही मांज,
खड्गु सूत्य रछत् असि ही माता ॥
गन्टायि शब्दु सूत्य रछत् असि ही मांज।
कमानि शब्दु सूत्य रछत् असि माता॥
((२३))

प्राच्यां रक्ष प्रतिच्यां च, चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्म शूलस्य, उत्तरस्यां तथेश्वरी॥
((२४))

پُورِ کِنۍ رٔچھتہٕ اَسہِ پچھِمہٕ کِنۍ رٔچھتہٕ اَسہِ
ہی چٔنڈی رٔچھ اَسہِ دٔکھنہٕ کِنۍ
پھیرِتھ ترشوٗل پَنُن اَسہِ ژوٗپأرۍ ہی ماج!
ہی ماتا رٔچھ اَسہِ وۄتّرٕ کِنۍ (۲۴)

पूर्य किन्य रछतु असि पछ्मु किन्य -
रछत् असि।
ही चण्डी रछ असि दखुण, किन्य।
फिरनाव त्रिशूल पनुन अंस्य चोपांर्य
ही मांज।
ही माता रछ असि वोतर, किन्य॥२५॥

सौम्यानि यानि रूपाणि, त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यन्त घोराणि, तै रक्षास्मांस्तथाभुवम्॥
((२५))

سوندر روپ چانی ماتا یم ژے آسوَنی
ترِلوکی منز پھیرانی
گور روپ، کٹھن روپ یم چانی آسوَنی
تِموسِتی اسہ تہ پرتھوی رچھ ژۏ پاری (٢٥)

सोन्दर रूप चान्य माता यिम त्रै आसवुन्य,
त्रैयलकी मंज़ फेरानी ।
गोर रूप, कठिन्य रूप यिम चान्य आसवुन्य,
तिमव सूत्य असि त पृथ्वी रछ चोपारी ॥२५॥

खड्ग शूल गदादीनि, यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके,
करपल्लव संगीनि, तैरस्मान रक्ष सर्वतः।
((२६))

کھڈگ، ترشول پیتادِک یم ژے آسوَنی
استر ہتھ ماج چھکھ دارانی
پھوشِتھ اتھن منز تِمہ چھکھ ژےہی ماج
تِموسِتی اسہ ماج رچھ ژۏ پاری

खड्ग त्रिशूल यैत्याघक यिम छै आसुवुन्य,
अस्तुर यिम छु मांज छुख दारांनी ।
पम्पोशि अथन मन्ज़ रंटिथ छुख छुही मांज,
तिमव सृत्य असि माता रछ़ चोपारी ॥
((26))
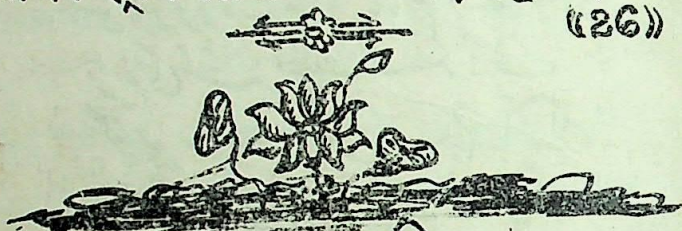
क्षमास्तुति

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदापि च न जानेस्तुतिमहो,
न चाह्वानं ध्यानं तदापि च न जानेस्तुतिकथा।
न जाने मुद्रास्ते तदापि च न जाने विलपनं,
परं जाने माता तदऽनुसरीं क्लेश हरनम् ॥१॥

منتر تہ ینتر چھُسنہ کینْہہ زانان
زانان چھُس نہ ماجِ چون مہما
آواہن تہ دیان چھُس نہ کینْہہ تہ زانان
زانان چھُس نہ ماتا چانی توتا
مُدرایہ چانہ ماجِ چھُسنہ کینْہہ زانان
زانان چھُسنہ ماتا چون وِلپُن
بُڈ ہش یِہ چھتی ماجِ چھُسنہ زانان

زِ یہ یِتہٕ یکھ دوکھن ناش سپدان ((۱

मन्त्र तु यन्त्र छुस नु कैंह ज़ानान,
ज़ानान छुसनु माता चोन महिमा।
आवाहन तु ध्यान छुसनु कैंह ति ज़ानान,
ज़ानान छुसनु माता चोन्य तोता।
मुद्राय चोनि मांज छुसनु कैंह ति ज़ानान,
ज़ानान छुसनु माता चोन विलीपन,
वंड हिश योरुती मांज छुसनु ज़ानान,
च्रैय पत पत पकिथ दोखन नाश सपदान
((१))

विधेरऽज्ञानेन द्रव्यन विरहीनालस्तया
विधी अशक्यत्वात्तव चर्णयो या चुत्यभूत।
तत्तेतद क्षिन्तव्यं जननि सकलोधारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत कुचिदऽपि कुमाता न भवत
((२))

چھُس وِیدی نہ زانہٕ وُن دَنہٕ روٗس نہٕ آلتری
زِ نہٕ سیوا چانی چھس نہٕ کینہہ کران +
بتہٕ آلتری سوٗس چھُس بہٕ ژٕ تم کھیا +
ہی ماتا سارے چھکھ وودار کران + +

کو پُتر چھِ زگتس مشر یاد سیدان
ماتا کو ماتا زانہہ تہ چھنہ بنان ۔ (۲)

छुस विदी नु ज़ानुवुन, दनु रोंस तु आलुच़्य,
व़रन, सीवा चान्य छुस नु कैंह करान।
यिछ़ आलुच़्य सोंस कुस वेकरतम क्षमा।
ही माता! सानिन्य छ़ख बोदार करान॥
को पुत्र छि ज़गतस मन्ज़ पोदु सपदान,
माता कोमाता ज़ांह ति छ़नु बनान॥
(२)
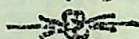
प्रथिव्यां पुत्रास्ते, जननि बहवैसन्ती सरला:,
परम तेषां मध्य-विर्लतरलोहं तव स्वत:।
मध्य योयं त्याग: समुचितं इदं नो तव शिवे,
कुपुत्रो जायीते, कुचिदपि कुमाता न भवते ॥३॥

ماتا پرتھوی پیٹھ ستھا ژےٚ شتان
تِمَن منزٕ بےٚ لوت چھُس نابہ کار
چھکہ ہیٚ ترٲوان ماتا چھےٚ نہ ژےٚ یہ زاینہ
ہی پاروتی کرنہ چھکہ وچاران
کو پتر چھِ زگتس مشر یاد سیدان

ماتا کو ماتا زانِہ تہٕ چھینہٕ بنان-(۳)

माता पृथ्वी प्यठ स्यठा छे सन्तान,
तिम्नन मन्ज़ छय वीत छुसय नाबकार।
कुव में ग्रावान माता कुच नु छे थि जौविज़,
ही पारवती कौनु छुव ०यज़ारान ।
कोपुत्र छि ज़गतस मंज़ पोदु सपदान,
माता कोमाता ज़ांह ति छनु बनान॥३॥
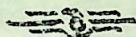
जगतमातर्माताः तव चरण सेवा न रचिता,
न [illegible]दत्तं देवे द्रव्यनंपि भोयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं, मयि निरुपममयत प्रकरुषि,
कुपुत्रो जायीते कुचिदपि कुमाता न भवते॥
(४)

ہی زگت ماتا چانٛی زٕرنہٕ سیوا
نہٕ کرٕم پتھ کُن نہٕ وُنی کین کران
چانہٕ بایتھ خرچ کنہٕ کوٗرمُس انٛہ نانی
وُنی کین تہٕ دِنہٕ زٕسے پتھ چھیسہٕ خرچان
تو تہٕ چھکھ زٕ سو ماتا، لٕسں چھہٕ مثون حدروٗس

موجودہ تہ لوسیتھ چھم ژٕ گرِ زچھان
کوٚنترٕ چھ ہیٚکتس منز پاپہٕ سیٚدان
ماتا کو ماتا زانٛہہ تہ چھنہٕ بنان- (۴)

ही ज़गत्त माता चोंन्य त्ररग़ु सीवा,
न कंरुम पथ्‌कुन न वुन्यवथन करान।
चानि बापथ खर्च कुनि कोरुम न अज़तास,
वुन्यवथन सि दनु च़ें पथ छुसनु खंचान।
तोति करख न सो माता, यस छु म्योन हद्‌रोस
मोहबथ तु योंस, छम में गरि गरि खान।
कोपुत्रर छि ज़गतस मंज़ पोंद सपदान,
माता कोमाता ज़ांह ति छन बनान॥
((4))

—=ॐ=—

परित्यक्ता देवान विविदविद सेवाकुलतया,
मया पञ्चाशीतेऽधिकमपनीतेतु वयसि।
इदानीं चिद्‌मातः तव यदि कृपानापि भक्ता
निरालंबो लंबोधर जननि कं यामि शर्णम्॥
(५)

سانہِ دیوُن بنیٖس سیواے تراو
سپُدتھ چھس عمرِ سیٹھا دیاکُل

سُے شوٗزِگتِکِس ساٚمی باوس
ہی ماتا چانہٕ اَتھواس چھُے واتان – ((6))

चिता बस्मा मंलिथ यस ज़हर छुय खोरान
नंगय तु कलु माल्, नोल्य ज्ञावान।
वासुक हटि यस युसजटा छु दारान
मोत यस सामी पनुन छु मानान।
सुय शिव ज़गतकिस सामी बावस,
ही माता चानि अथवास छु वातान।

न मोक्षस्याकान्क्षा न च विभव: वाञ्छापि
न विज्ञानानऽपीक्षा, शशिमुख सुखेचापि न
अतस्ताम समयाच्चे, जननि जननं यातु मु
मृडानी रुद्राणी, शिव शिव भवानीति जपत

پنہٕ ماج مو کرِچ کانٛہہ اَسوٗز = بیٚنِہ چھمنہٕ ووٚپیتہٕ آچ کانٛہہ ترھا
ایپاکٹپا چھمنہٕ ماج مےٚ اَسوٗی = ستو کُہ ترساتہٕ چھسنہٕ ماتا کاکھان
ییٚہ ماتا زیٚنہٕ مگان زندگی گُزارہٕ = شوٗشوٗ ہُو آنی زیٚب کراٚنی

कमनु मांज मुक्तिच कांह आसवुन्य,
बेयि कमनु व्यनवुच ति मांज कांह यछा
ज्ञानुच अपीछ। कमनु मांज मे आसवुन्य
सोख यछाति कुसनु माता कांछान।
कुस वँ माता चैय मंगान ज़िंदगी गुज़ारह
शिव शिव भवानी जाप करानी ॥०॥(८)